DURGA PRASAD BALJEET SINGH(PG) COLLEGE
तमसो मॉ ज्योतिर्गमय
स्थापित 1965
ANUPSHAHR(BULANDSHAHR), U.P.

अंवतिका

अंक – 26 सत्र 2022–23

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलिज

अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ0प्र0)

श्रद्धेय श्री जय प्रकाश जी गौड, प्रबन्ध समिति अध्यक्ष
श्री अजय गर्ग जी एवं प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह वार्ता करते हुए

श्रद्धेय श्री जय प्रकाश जी गौड, डिबाई विधायक श्री सी.पी. सिंह जी,
प्राचार्य एवं प्रबन्ध समिति के अन्य सदस्य वार्ता करते हुए

सी.सी.एस.यू.के वर्ष 2023 के दीक्षांत समारोह में
प्राचार्यगण

सी.सी.एस.यू. में प्रथम बार चयनित प्राचार्य
एसोसिएशन द्वारा वि०वि० कुलपति से वार्ता

डी.पी.बी.एस.(पी.जी.) प्राचार्य का
लक्ष्मण प्रसाद दुर्गा प्रसाद वार्षिकोत्सव में सम्बोधन

डी.पी.बी.एस (पी.जी.)कॉलिज में कमान्डर एस.जे. सिंह
तथा अन्य गणमान्य लोगों का स्वागत

गणतन्त्र दिवस पर प्रबन्ध समिति, तथा छात्र-छात्राओं
की उपस्थिति में प्राचार्य द्वारा ध्वजारोहण

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के आयोजन पर प्रबन्ध समिति
के अध्यक्ष श्री अजय गर्ग जी का प्राचार्य द्वारा सम्मान

अवन्तिका

अंक – 26 शैक्षिक सत्र 2022–23

डी.पी.बी.एस.(पी.जी.) कॉलिज के इतिहास पुरूष

श्रद्धेय स्मृतिशेष श्री दुर्गा प्रसाद जी

श्रद्धेय स्मृतिशेष श्री बलजीत सिंह जी

श्रद्धेय स्मृतिशेष श्री भगवती प्रसाद गर्ग

सम्पादक मण्डल

बायें से दांये (बैठे हुए) : श्री सोहन आर्य, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, डॉ. भुवनेश कुमार, प्रो. चन्द्रावती, प्रो० जी.के. सिंह (प्राचार्य), डॉ. तरूण श्रीवास्तव, डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह, श्री अनिल कुमार, डॉ. सुधा उपाध्याय।

बाँये से दांये (खड़े हुए) : कु0 अंजली, सौम्या भारद्वाज।

महाविद्यालय प्रबन्ध कार्यकारिणी

श्री अजय गर्ग
(अध्यक्ष)

डॉ. सुधीर कुमार
(उपाध्यक्ष)

श्री एस.पी.एस. तोमर
(सचिव)

श्री सुनील कुमार गुप्ता
(संयुक्त सचिव)

श्री के.पी. सिंह
(कोषाध्यक्ष)

श्री राजीव कुमार अग्रवाल
(आन्तरिक लेखा परीक्षक)

डॉ. के.पी. सिंह
(सदस्य)

कमा. एस.जे. सिंह
(सदस्य)

श्रीमती मनिका गौड़
(सदस्या)

प्रो. गिरीश कुमार सिंह
प्राचार्य
(पदेन सदस्य)

A source of Eternal Inspiration
Shri Jaiprakash Gaur Ji,
Founder Chairman, Jaypee Group
Managing Trustee, Jaiprakash Sewa Sansthan
President, Anglo Vedic Educational Association

One the path of progress, education is the medium that can allow our country to not only conserve its culture but also ignites the minds of the young countrymen and empowering them to be at par with the citizens of other developed countries. Science & Technology in the 21 st Century will unleash a revaluation of progress that is beyond our imagination today and which will transcend the limits of planet Earth to enable human beings to begin their tryst with the infinite universe.

We are determined to provide quality education to our students through the most modern educational institutions to make them financially empowered while shaping them into self reliant and confident citizens of modern India.

These institutions would strive to inculcate discipline and character building along with serious pursuit of knowledge, utilizing the most advanced teaching practices and high moral standards so that our teachers and students can stride forward and see the transformation of their country into an advanced nation within their lifetime.

Jaiprakash Gaur

MANOJ GAUR
Executive Chairman

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

संदेश

माँ गंगा के पावन तट पर स्थित अनूपशहर प्राचीन समय से ही शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। नगर में 1965 में स्थापित दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह पी०जी० कॉलिज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक परंपरा के अनुरूप इस वर्ष वार्षिक पत्रिका अवंतिका का 26 वाँ अंक प्रकाशित कर रहा है। विगत लगभग तीन वर्षों से संपूर्ण विश्व कोरोना जैसी विभीषिका से मुक्ति हेतु प्रयासरत है, ऐसे में हम सभी को उत्कृष्ट एवं प्रेरित करने वाले विचार, व्यक्तित्व, साहित्य एवं घटनाएँ ही संबल प्रदान करती हैं। यह पत्रिका भी जीवन में सकारात्मकता की उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाले ज्ञानवर्धक आलेखों, रचनाओं एवं समसामयिक घटनाओं को अपने में समाहित किए होगी, जिससे यह पत्रिका विद्यार्थियों के लिए ही नहीं वरन समाज के लिए भी पथ प्रदर्शन का एक साधन बन सकेगी।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पूर्व के अंकों की तरह यह अंक भी अपने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होगा। मैं इस अवसर पर प्राचार्य, संपादक मंडल, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सधन्यवाद!

मनोज गौड़

JAYPEE GROUP

Head office : 'JA House', 63 Basant Lok, Vasant Vihar, New Delhi - 110 057 (India)
Ph. : +91 (11) 26141540, 26147411 Fax : +91 (11) 26145389, 26143591
Corp. & Regd. Office : Sector - 128, Noida -201 304, Uttar Pradesh India)
Ph. : +91(120) 4609000, 2470800 Fax : +91 (120) 4609464, 4609496

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ - 250 004 (उ०प्र०)

प्रोफेसर संगीता शुक्ला
डी०एस०सी०
कुलपति

पत्रांक : एस०वी०सी०/21/637
दिनांक : 27.12.2022

संदेश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह (पी०जी०) कॉलिज, अनूपशहर (बुलन्दशहर) द्वारा महाविद्यालय की सत्र 2022-23 की वार्षिक पत्रिका "अवन्तिका" का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी महाविद्यालय की पत्रिका महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिये आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विहंगम वर्णन के माध्यम से विद्यार्थियों में नयी उमंग एवं उत्साह का संचार करती है तथा उनकी सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ ज्ञानोपयोगी लेखों का प्रचार-प्रसार करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन हेतु शुभकामनायें।

(संगीता शुक्ला)

प्रो० जी०के० सिंह,
प्राचार्य,
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह (पी०जी०) कॉलिज,
महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनुपशहर,
बुलन्दशहर-203390

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ-250 004

कार्यालय: +91-0121-2760554, 2760551, फैक्स: 2762838
शिविर कार्यालय: +91-0121-2600066, फैक्स: 2760577

वैबसाइट: www.ccsuniversity.ac.in
ई-मेल: vc@ccsuniversity.ac.in

चन्द्र प्रकाश सिंह

आई०ए०एस०

अ.शा.प.सं० 722/ST.DM/2023
जिलाधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट
जनपद-बुलन्दशहर (उ०प्र०)
(कार्या०) : 05732-280351
(आ०) : 05732-231343
(फैक्स) : 05732-280298
(मोबाईल) : 9454417563
(ई-मेल) : dmbul@nic.in

दिनांक : 04.01.2023

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह (पी०जी०) कॉलिज, अनूपशहर जनपद बुलन्दशहर अपनी महाविद्यालय पत्रिका 'अवन्तिका' के 26-वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका ज्ञान-विज्ञान के महत्वपूर्ण आलेखों को समाहित करते हुए अपने शैक्षिक-सत्र की विभिन्न उपलब्धियों, गतिविधियों, स्मृतियों एवं रचनाधर्मिता को न केवल शब्दों, अपितु सचित्र रूप से संचित करते हुए विद्यालय का एक जीवन्त दस्तावेज़ सिद्ध होगी तथा विद्यालय की नवोदित प्रतिभाओं को उनकी साहित्यिक अभिरूचि की अभिव्यक्ति का सुअवसर प्रदान करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाश के लिए समस्त विद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

(चन्द्र प्रकाश सिंह)

प्रो० जी०के० सिंह,
प्राचार्य,
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह (पी०जी०) कॉलिज,
अनूपशहर, जनपद बुलन्दशहर।

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह (पी.जी.) कॉलिज

महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनूपशहर (बुलन्दशहर) उ०प्र०-203390
(सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
Website: www.dpbscollegeanoopshahr.org | Phone 05734-275450
Email: dpbsprincipal@gmail.com
NAAC Certification Grade : B (CGPA-2.71)

संदेश

बड़े ही हर्ष का विषय है कि दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका अवंतिका का प्रकाशन कर रहा है। महाविद्यालय की शैक्षणिक-गैर शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ छात्र-छात्राओं में रचनात्मकता के विकास में वार्षिक पत्रिका की महत्त्वपूर्ण भूमिका सिद्ध हो रही है। विद्यार्थियों के गुणात्मक विकास एवं साहित्य सृजन को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से भी पत्रिका का प्रकाशन एक सफल प्रयास है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि मनुष्य की अंर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। इस वर्ष पांच प्राध्यापकों के प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत होने, आयोग से चयनित छः नवागत शिक्षकों के कार्यभार ग्रहण करने और महाविद्यालय में नये विषयों के आने से मुझे आशा और विश्वास है कि महाविद्यालय में अध्यापन कार्य को गति मिलेगी। मैं महाविद्यालय परिवार को निरंतर उन्नति करने की शुभकामनाएं देता हूँ।

अजय कुमार गर्ग
अध्यक्ष प्रबंध समिति

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह (पी.जी.) कॉलिज

महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनूपशहर (बुलन्दशहर) उ०प्र०-203390
(सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
Website: www.dpbspgcollege.in | Phone 78950-05734
Email: dpbsprincipal@gmail.com
NAAC Certification Grade : B (CGPA-2.71)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका अवन्तिका का छब्बीसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। किसी भी महाविद्यालय की पत्रिका उस महाविद्यालय की पत्रिका उस महाविद्यालय का दर्पण होती है, वो महाविद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता, शैक्षिक परिवेश एवं सामाजिक सरोकार का परिचायक होती है।

आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं अपनी-अपनी मौलिक रचनाओं द्वारा पत्रिका को विविधता प्रदानकर अधिक ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी बनाएंगे, जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में एक सकारात्मक दिशा देने में सक्षम होगी।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अवन्तिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं साधुवाद।

प्राचार्य,
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलिज,
अनूपशहर, जिला-बुलन्दशहर।

एस.पी.एस. तोमर
सचिव, प्रबन्ध समिति

प्राचार्य की कलम से...

सम्प्रति भारत वर्ष के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती अपनी प्राचीन परम्पराओं और संस्कृति की अलग-थलग विस्तीर्ण थाती को सहेजने और समेटने की है। क्षेत्रीय संस्कृति और गौरव की संवृद्धि के बिना ऐसा कर पाना संभव नहीं हो सकता। इसी दृष्टिकोण की कड़ी के रूप में इस पत्रिका का नाम बदलकर माँ अवंतिका के नाम पर अवंतिका रखा गया है।

महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर सात विषयों एवं परास्नातक स्तर पर तीन विषयों के संचालित करने की अनुमति शासन द्वारा प्राप्त हो चुकी है। इतिहास, सांख्यिकी, वाणिज्य विषय में पी-एचडी. कराने की अनुमति प्राप्त हो चुकी है। कॉलिज में 6 नये असिस्टेंट प्रोफ़ेसर्स ने गत सत्र में कार्यभार ग्रहण किया तथा तीन और असिस्टेंट प्रोफ़ेसर्स के इस सत्र में कार्यभार ग्रहण करने की आशा है तथा छः एसोसिएट प्रोफेसर्स का प्रोफेसर के रूप में प्रोमोशन हुआ। महाविद्यालय के शैक्षिक परिवेश के उन्नयन हेतु तथा विचार-विमर्श हेतु कॉन्फ्रेंस रूम को तैयार कराया गया गया है। छात्र-छात्राओं के हित को देखते हुए महाविद्यालय में कक्षाएँ समाप्त होने के बाद सायंकाल अध्ययन करने हेतु एक 40 विद्यार्थी क्षमता वाली डिजीटल लाइब्रेरी बनायी गयी है। महाविद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु एक इंटरएक्टिव पैनल लगाया गया है। महाविद्यालय के शिक्षकों के गुणवत्तापूर्ण व्याख्यान छात्रों तक ऑनलाइन पहुँचाने हेतु एक रिकार्डिंग रूम को तैयार कराया गया है। महाविद्यालय की प्राचीन धरोहरों को संरक्षित रखने हेतु एक संग्रहालय बनाया जा रहा है। महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं की सुरक्षा की दृष्टि से कमरों एवं पोर्च में सी०सी०टी०वी० कैमरे लगाये गये हैं। ओ०एन०जी०सी० के सी०एस०आर० फंड से कॉलिज में छात्राओं के लिए एक गाएनेकोलाजिस्ट की व्यवस्था तथा सैनिटरी नैपकिन देने की योजना शुरू की गयी है। डिफिरेंटली एबल्ड छात्रों के लिए का व्हील चेयर की व्यवस्था की गई है।

महाविद्यालय में स्थापित वाटिका का नामकरण स्वर्गीय श्री जगदीश सरन अग्रवाल जी की स्मृति में श्रद्धेय श्री जयप्रकाश जी गौड़ के निर्देश पर जगदीश वाटिका रखा गया। महाविद्यालय में जॉब प्लेसमेंट हेतु आयी कम्पनी एक्कोएट इंडिया ट्रेनिंग इंस्ट्रीटयूट एवं इरा टेक्नोलॉजी इंडिया लिमिटेड ने कुल 14 विद्यार्थियों का चयन किया ।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा आयोजित वार्षिक एवं सेमेस्टर परीक्षाओं में वि०वि० स्तर पर परास्नातक भौतिकी में निकिता शर्मा ने द्वितीय स्थान, उज्जवल सिंह (पुरूष वर्ग) ने प्रथम एवं बी०एड० पाठयक्रम में शिवा भारद्वाज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

मैं महाविद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभारी हूँ जिन्होंने अथक परिश्रम करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन हेतु ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यमों से अध्ययन-अध्यापन और शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया को जारी रखा। महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना, रोवर-रेंजर्स और राष्ट्रीय कैडेट कोर इकाई के सभी स्वयंसेवकों/कैडटों को, जिन्होंने सरकार की ओर से चलाये गए विभिन्न कार्यक्रमों/अभियानों का सफलतापूर्वक संचालन करके जन जागरूकता लाने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **अवंतिका** के नवीन कलेवर के लिये महाविद्यालय परिवार और सभी सम्बद्ध जनों को कोटि कोटि शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को अग्रिम अनंत अशेष मंगलकामनाएँ!

(प्रो. गिरीश कुमार सिंह)
प्राचार्य

प्रधान सम्पादिका की कलम से...

''डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है जा-जाकर खाली हाथ लौट जाता है मिलें न मोती उसे सहज ही गहरे पानी में, बढ़ता हुआ उसका उत्साह इसी हैरानी में, मुट्ठी खाली उसकी हर बार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।''

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय अनूपशहर, अपनी वार्षिक पत्रिका अवंतिका आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए सुखद अनुभूति का अनुभव कर रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय के छात्रों और प्राध्यापकों को बौद्धिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हुए उनके आलेखों, कृतियों, ज्ञान, प्रतिभा और विचारों को समाज तक पहुंचाने का अवसर प्रदान करती है। जब-जब समाज में जीवन का स्वरूप बदलता है। तब-तब शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन आता है। शिक्षा व्यवस्था में अध्ययन- अध्यापन के क्षेत्र की नवीन चुनौतियों को महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षाविदों ने धैर्यपूर्वक एवं विभिन्न नवाचारों का प्रयोग करते हुए ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों से जुड़कर पूर्ण किया। महाविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा छात्रहित में किये गये सराहनीय एवं अनुकरणीय कार्य छात्र-छात्राओं में नई ऊर्जा और आत्म-विश्वास का संचार करते हुए उनके सकारात्मक दृष्टिकोण के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इस पत्रिका में जीवन के संघर्ष काल को प्रत्यक्ष रूप से अनुभूत करने वाले छात्रों की अभिव्यक्तियों को सम्मिलित करना, उनकी शब्द शक्ति और नवसृजन की कला में वृद्धि करना निश्चित ही शिक्षा के मुख्य उद्देश्य मानव के सर्वांगीण विकास की दिशा में सहायक होगा। भारत देश को आगे ले जाने के लिए परिश्रमों, दूरदृष्टा और देश के लिए समर्पित सोच रखने वाले लोगों की आवश्यकता है। आज के युग में हमें शिक्षा के स्तर को विश्वस्तरीय बनाने की आवश्यकता है। वर्ष भर की शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों और उपलब्धियों की स्मृतियों को चित्रों के रूप में और प्राध्यापकों व विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धक और मनोरंजक लेखों से अन्वित अवंतिका का यह संस्करण निश्चित रूप से अद्वितीय और अनुपम रहेगा। मुझे सदबुद्धि और सामर्थ्य प्रदान करने के लिए सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर के श्री चरणों में नमन करती हूँ। अपने शुभकामना संदेशों के द्वारा हमारा मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन करने वाले सभी वरिष्ठजनों का सम्मानपूर्वक धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। माननीय प्रबंध समिति के गरिमामयी संरक्षण, मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में महाविद्यालय निरंतर विकासोन्मुख है। महाविद्यालय की तन, मन और धन से सेवा करके इसकी विकास यात्रा को गौरवान्वित करते हुए इसको भव्य और दिव्य स्वरूप प्रदान करने वाले प्रबंध समिति के सभी महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. गिरीश कुमार सिंह जी का मार्गदर्शन हमेशा प्रेरक के रूप में साथ रहकर दुर्गम को भी सुगम बना देता है। आपका प्रयास नवाचारों में अग्रणी भूमिका निभाने हेतु महाविद्यालय के सभी सदस्यों को कम्प्यूटर में दक्ष बनाए जाने का है। आपके सतत प्रयासों से महाविद्यालय अपने गौरव तथा गरिमा को बनाए रखते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर है। महाविद्यालय के उत्साही और दूरदृष्टा प्राचार्य प्रोफेसर जी.के. सिंह जी को सदैव सकारात्मक सहयोग के लिए विशेष धन्यवाद प्रकट करती हूँ। पत्रिका के लिए अपने मौलिक विचारों से युक्त ज्ञानवर्धक लेख प्रेरित करने वाले सभी सम्मानित सदस्यों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करती हूँ, पत्रिका के मौलिक रूप में प्रकाशन हेतु अथक परिश्रम और सहयोग करने वाले संपादक मंडल के सभी सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, और अंत में श्री मोहित प्रिन्टर्स बुलंदशहर को उत्तम और समयबद्ध मुद्रण कार्य हेतु धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। वाग्देवी सरस्वती की अनुपम, असीम कृपा से विगत पच्चीस वर्ष से अनवरत ऋतम्भरा नाम से प्रकाशित होने के बाद इस वर्ष से अवंतिका इस नवीन नाम से प्रकाशित हो रहा यह संस्करण पाठकों को सकारात्मक ऊर्जा से सराबोर करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करने में सहयोग करेगा। इस विश्वास के साथ पाठकों के पठनार्थ **अवंतिका** का प्रथम अंक प्रस्तुत है।

Chandrawati

(डॉ. चन्द्रावती)

(प्रधान सम्पादिका)

प्राध्यापक मण्डल

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : डॉ. सुनीता गौड़, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री यजवेन्द्र कुमार, प्रो. चन्द्रावती, प्रो. यू.के.झा, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), प्रो.पी.के.त्यागी, प्रो. आर.के. अग्रवाल, प्रो. सीमान्त कुमार दुबे, श्री पंकज कुमार गुप्ता, डॉ. भुवनेश कुमार।

खड़े हुए (प्रथम पंक्ति) : डॉ. राजीव गोयल, डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह, श्री देव स्वरूप गौतम, डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, डॉ. जागृति सिंह, डॉ. सुधा उपाध्याय, डा. राधा उपाध्याय, डॉ. के.सी. गौड़, डॉ. जी.के. बंसल, डॉ. तरूण श्रीवास्तव, श्री सचिन अग्रवाल, श्री मयंक शर्मा।

खड़े हुए (द्वितीय पंक्ति) : श्री आलोक कुमार तिवारी, श्री साहिल चौधरी, श्री अनिल कुमार, श्री दीक्षित कुमार, श्री सोहन आर्य, श्री सत्यप्रकाश गौतम, श्री चन्द्र प्रकाश, श्री गोपाल, श्री हिमांशु कुमार, श्री गुरूदत्त शर्मा।

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण

(तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री पकंज शर्मा, श्री पारस कुमार, श्री आशीष कुमार, श्री चन्द्रपाल, श्री अनिल कुमार अग्रवाल, श्री सुनील कुमार गर्ग, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), श्री दीपक कुमार शर्मा, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री सुनील कुमार, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री प्रमोद कुमार, श्रीमती हेमा रावत।

खड़े हुए (प्रथम पंक्ति) : श्री साहब सिंह, श्री नारायण देव मिश्रा, श्री सुनील कुमार निर्मल, श्री विजय पाल सिंह, श्री महेश चन्द्र, श्री अमरनाथ राय, श्री डम्बर सिंह, श्री गजेन्द्र सिंह, श्रीमती पार्वती, श्री राजीव, श्री जितेन्द्र कुमार श्री सोनू कुमार।

खड़े हुए (द्वितीय पंक्ति) : श्री सुन्दर पाल, श्री सुबोध कुमार, श्री नितिन कुमार, श्री नेत्रपाल, श्री राम बाबू, श्री त्रिलोक चन्द, श्री राम अवतार, श्री विजय, श्री विक्रम, श्री वाहिद।

क्रीड़ा समिति

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री दीक्षित कुमार, डॉ. भुवनेश कुमार, प्रो. आर.के. अग्रवाल, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), प्रो. सीमान्त कुमार दुबे, श्री अनिल कुमार, श्री देव स्वरूप गौतम।

बाँये से दाँये (खड़े हुए) : केशव कान्त भारद्वाज, नीतू शर्मा एवं श्री अमरनाथ राय।

अनुशासन समिति

बाँये से दाँये : श्री मयंक शर्मा, श्री यजवेन्द्र कुमार, प्रो. चन्द्रावती, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य), प्रो. पी.के. त्यागी प्रो. सीमान्त कुमार दुबे, डॉ. तरूण श्रीवास्तव।

सत्र 2021-22 के हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थी

निकिता शर्मा
एम.एससी. द्वितीय (भौतिकी)
83%

मानसी गर्ग
एम.एससी. द्वितीय (रायान विज्ञान)
80.05%

पुष्पेंद्र शर्मा
एम.ए. द्वितीय (संस्कृत)
75.6%

राशि अग्रवाल
बी.एससी. तृतीय
80.70%

सुरभि मीना
बी.कॉम. तृतीय
71.45%

अंजली शर्मा
बी.ए. तृतीय
72.73%

विकास गुप्ता
बी.सी.ए. तृतीय
79.03%

शिवा भारद्वाज
बी.एड. द्वितीय
87.79%

सत्र 2021–22 के विश्वविद्यालय स्तर पर विशेष स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी छात्र

निकिता शर्मा
एम.एससी. द्वितीय वर्ष (भौतिकी)
विश्वविद्यालय स्तर पर
(पुरुष एवं महिला वर्ग)
में द्वितीय स्थान

उज्जवल सिंह
एम.एससी. द्वितीय वर्ष (भौतिकी)
विश्वविद्यालय स्तर पर
(पुरुष वर्ग)
में प्रथम स्थान

शिवा भारद्वाज
बी.एड. द्वितीय वर्ष
विश्वविद्यालय स्तर पर
प्रथम स्थान

26 जनवरी 2023 'गणतन्त्र दिवस' के अवसर पर कर्तव्य पथ, दिल्ली परेड के लिए चयनित छात्र

भूपेन्द्र
बी.सी.ए. प्रथम वर्ष

पुरस्कार एवं छात्रवृति

1. स्वर्गीय श्री सुरेश चाँद गर्ग की स्मृति में पुत्र श्री विकास गर्ग डी.सी.एम. द्वारा होनहार छात्र (वाणिज्य) को 1100 रूपये की छात्रवृति।
2. स्वर्गीय श्री प्रतिपाल सिंह चौहान जी की स्मृति में पुत्र श्री रोहताश सिंह चौहान, एल. आई.सी.द्वारा होनहार छात्र (विज्ञान) को 1100 रूपये की छात्रवृति।
3. स्वर्गीय श्री देवेंद्र कुमार वार्ष्णेय जी की स्मृति में पुत्र श्री होम निधि वार्ष्णेय, सामाजिक कार्यकर्त्ता द्वारा होनहार छात्र (वाणिज्य) को 1100 रूपये की छात्रवृति।
4. स्वर्गीय श्री राधे लाल गौड़ जी की स्मृति में पुत्र श्री राजेंद्र गौड़, पूर्व प्राध्यापक द्वारा होनहार छात्र (बी.एड.) को 1100 रूपये की छात्रवृति।
5. गणित का अवार्ड विज्ञान वर्ग में (अनूपशहर ओलम्पियाड) में 5 छात्रों को (1000 रूपये प्रत्येक) 5000 की राशि का पुरस्कार श्री विशाल शर्मा, श्री अमित बंसल, श्री विपुल अग्रवाल।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा उच्च शिक्षा प्रेरणा कार्यक्रम के अर्न्तगत छात्रवृत्ति प्राप्त करने छात्र

मोहित कुमार
एम.एससी.
(रसायन विभाग)

कनक चौधरी
एम.एससी.
प्रथम वर्ष

धर्मेन्द्र सिंह
एम.एससी.

जयदीप शर्मा
एम.एससी.

प्रोफेसर पद पर प्रोन्नति हेतु हार्दिक बधाई

प्रो. उमेश कुमार झा
अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

प्रो. प्रदीप कुमार त्यागी
अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग

प्रो. ऋषि कुमार अग्रवाल
अध्यक्ष, गणित विभाग

प्रो. चंद्रावती
अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग

प्रो. सीमांत कुमार दुबे
अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग

नव नियुक्त असिस्टेंट प्रोफेसर का महाविद्यालय परिवार में हार्दिक स्वागत्

(विज्ञापन संख्या 50 के अंतर्गत उच्च शिक्षा चयन आयोग द्वारा चयनित

श्री आलोक कुमार तिवारी
हिन्दी विभाग

श्री सोहन आर्य
संस्कृत विभाग

श्री अनिल कुमार
समाजशास्त्र विभाग

श्री दीक्षित कुमार
भौतिकी विभाग

श्री हरेन्द्र कुमार
गणित विभाग

श्री हिमांशु कुमार
अर्थशास्त्र विभाग

स्मृति के झरोखे से ऋतम्भरा (अब अवन्तिका) के 25 वर्ष

डिजीटल लाइब्रेरी

कम्प्यूटर लैब

कैफेटेरिया

कॉन्फ्रेंस रूम

फिज़िक्स लैब

कैमिस्ट्री लैब

जिम

जलपान गृह

महाविद्यालय में सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष श्री के.के. श्रीवास्तव का विदाई समारोह

महाविद्यालय में आयोजित उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में उपस्थित प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री अजय गर्ग, माननीय सांसद भोला सिंह, पूर्व प्राचार्य श्री राजेश गर्ग का प्राचार्य द्वारा स्वागत

अनूपशहर नगरपालिका चेयरमैन श्री ब्रजेश शर्मा ने महाविद्यालय पुरातन छात्र कोष में ₹ 11000/- रूपये अर्पित किये

महाविद्यालय में कर्मचारियों के कम्प्यूटर ज्ञान वृद्धि हेतु आयोजित कार्यशाला

महाविद्यालय में प्रथम बार आयोजित रोवर्स रेंजर कार्यक्रम का प्राचार्य द्वारा शुभारम्भ

महाविद्यालय में आयोजित कृमिरोधी दिवस पर दवा वितरण

महाविद्यालय में हिन्दी दिवस का आयोजन

महाविद्यालय में रक्त जाँच शिविर का आयोजन

बजट चर्चा पर विचार व्यक्त करते हुए
महाविद्यालय प्राचार्य

बजट चर्चा के आयोजन पर महाविद्यालय द्वारा न्यूजलेटर का
विमोचन अनूपशहर के माननीय विधायक श्री संजय शर्मा जी द्वारा

बजट चर्चा पर विचार करते महाविद्यालय के
प्राध्यापक हिमांशु कुमार

बजट चर्चा पर विचार करते माननीय विधायक
श्री संजय शर्मा जी

G 20 सप्ताह के अन्तर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम

महाविद्यालय में G 20 सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न क्रियाकलाप

महाविद्यालय में जिला विद्यालय निरीक्षक श्री एस.के.ओझा एवं जिला उपायुक्त उद्योग श्री आशुतोष कुमार का आगमन

अतिथियों का महाविद्यालय में भ्रमण

मोनी अमावस्या पर महाविद्यालय की सामुदायिक रसोई द्वारा निःशुल्क चाय-नाश्ता वितरण

महाविद्यालय में वृक्षारोपण

महाविद्यालय में तहसीलदार श्री नीरज द्विवेदी, उपजिला अधिकारी श्री गजेन्द्र मारटोलिया सिंह, माध्यमिक शिक्षा विशेष सचिव श्री कृष्णकुमार गुप्त, आगरा वि.वि. की प्रो. मंजू अरोरा, जिला विद्यालय निरीक्षक श्री एस.के.ओझा तथा अन्य गणमान्य लोगों द्वारा न्यूजलेटर विमोचन

महाविद्यालय में शहीदों को श्रद्धांजलि

संस्कृत भारती कार्यक्रम

महाविद्यालय में पुरातन छात्र अनूपशहर के प्रमुख टिम्बर मर्चेन्ट श्री नरेश भारद्वाज द्वारा कॉलिज को ₹21000/- का चैक दिया गया

महाविद्यालय के भौतिकी विभाग में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में मंचासीन डॉ. उपदेश वर्मा, डी.एस.टी. के वैज्ञानिक डॉ. एस. के. वार्ष्णेय, प्रो. बीरपाल, डी.आर.डी.ओ. के वैज्ञानिक डॉ. हिमांशु ओझा, डॉ.अनुज शर्मा एवं श्री यजवेन्द्र कुमार तथा महाविद्यालय के प्राचार्य

महाविद्यालय में भौतिकी विभाग में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार

राष्ट्रीय सेमिनार में पोस्टर्स का अवलोकन करते हुए डॉ. के.पी.सिंह, प्रो. बीरपाल, प्रो. जी.के. सिंह (प्राचार्य) श्री यजवेन्द्र कुमार व अन्य

उत्तर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2023 के दौरान मंचासीन बु0शहर के मुख्य विकास अधिकारी प्रो. मंजू अरोरा, मा. शिक्षा के विशेष सचिव श्री कृष्णकुमार गुप्त तथा महाविद्यालय प्राचार्य

महाविद्यालय के पुरातन छात्र सम्मेलन 2022-23 में शामिल पुरातन छात्र

पुरातन छात्र कार्यक्रम में उपस्थित महाविद्यालय परिवार एवं गण मान्य पुरातन छात्र

महाविद्यालय स्थापना दिवस पर हवन करते हुए प्राचार्य प्रो.जी.के. सिंह, अध्यक्ष श्री अजय गर्ग, उपाध्यक्ष डॉ. सुधीर अग्रवाल, सचिव श्री एस.पी.एस तोमर तथा अन्यजन

महाविद्यालय की बी.एड. छात्रा को पुरूस्कृत करते हुए एस.पी. देहात श्री बी.बी. चौरसिया, प्राचार्य एवं अन्य प्राध्यापक

महाविद्यालय में सी.सी.एस.यू.के अन्तर महाविद्यालय नेटबॉल प्रतियोगिता कें उदघाटन समारोह में विभिन्न महाविद्यायों से पधारें अतिथिगण

नेटबॉल प्रतियोगिता के प्रतिभागियों का डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलिज के प्राचार्य परिचय प्राप्त करते हुए

नेटबॉल प्रतियोगिता में वि०वि० स्तर पर महाविद्यय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, इस अवसर पर एस.डी.एम श्री गजेन्द्र मारटोलिया द्वारा ट्रॉफी प्रदान की गई

महाविद्यालय में आयोजित खेलकूद वार्षिक प्रतियोगिता के समापन कार्यक्रम में पधारे मुख्य अतिथि खण्ड विकास अधिकारी श्री हुकुम सिंह

वार्षिक खूलकूद प्रतियोगिता में विजयी खिलाड़ी (महिला वर्ग)

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में विजयी खिलाड़ी (पुरूष वर्ग)

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का समूह चित्र

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते प्रतिभागी

महाविद्यालय में प्रथमबार आयोजित दीक्षारम्भ कार्यक्रम में विचार प्रकट हुए प्राचार्य

दीक्षारम्भ कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए महाविद्यालय के आचार्य प्रो.आर.के.अग्रवाल

दीक्षारम्भ कार्यक्रम में विचार व्यक्त करती हुई महाविद्यालय की आचार्या प्रो. चन्द्रावती

महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम हर घर तिरंगा पर विचार प्रकट करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य

एक्कोएट कम्पनी के द्वारा कैम्पस प्लेसमेन्ट में चयनित छात्र-छात्रा

इरा टैक्नोलॉजी कम्पनी द्वारा कैम्पस प्लेसमेन्ट में चयनित छात्र-छात्रा

महाविद्यालय में प्रथम बार जॉब प्लेसमेंट हेतु आये कम्पनी के पदाधिकरी एवं महाविद्यालय प्राध्यापक

हमारे आदरणीय श्री मनोज कुमार गौड़ जी के द्वारा ''लक्ष्मण प्रसाद दुर्गा प्रसाद वार्षिकोत्सव-2023'' में प्रतिभाग करने वाले सभी विद्यार्थियों को ₹1100-1100 रूपये का पुरस्कार दिया गया।

गणतन्त्र दिवस पर महाविद्यालय
प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह द्वारा NCC परेड का निरीक्षण

महाविद्यालय के NCC कैडेट की गंगा स्वच्छता रैली को रवाना करते प्राचार्य प्रो. जी.के.सिंह, प्रो. चन्द्रावती एवं कैप्टन यजवेन्द्र कुमार

महाविद्यालय में NCC कैडेट का प्रशिक्षण

महाविद्यालय में NCC कैडेट के समक्ष अर्न्तराष्ट्रीय मादक पदार्थ पर विचार प्रकट करते NCC प्रभारी

राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र/छात्रायें श्री सोहन आर्य के निर्देशन में सड़क सुरक्षा रैली निकालते हुए

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत गंगा किनारे श्रमदान करते हुए छात्र/छात्रायें

राष्ट्रीय सेवा योजना के अर्न्तगत
छात्र/छात्राओं द्वारा श्रमदान

महाविद्यालय में आयोजित संविधान दिवस के अवसर पर एकत्रित छात्र/छात्रायें

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक/रचियता	पेज नं.	क्र.	विषय	लेखक/रचियता	पेज नं.
1.	प्रगति आख्या	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	02-03	46.	बुद्धिमान व्यक्ति	प्रिया (B.A.-I)	32
2.	क्रान्ति ही सही	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	04	47.	गजल	आरिफ अली (B.Ed-II)	32
3.	जल संकट और भारत	प्रो. चन्द्रावती	05-06	48.	नारी शिक्षा की आवश्यकता	फिजा (B.Ed-II)	33
4.	भारतीय चिंतन में पर्यावरण चेतना	श्री लक्ष्मण सिंह	06-07	49.	व्यक्तित्व	प्रेरणा (B.Ed-II)	33
5.	नेतृत्व कला मेरी दृष्टि में	डा. के.सी. गौड़	08	50.	अच्छी सोच	निधी (B.Ed-II)	34
6.	शिक्षा और महिला सशक्तीकरण	डा. सुनीता गौड़	08	51.	परिवार और संस्कार	मनु स्मृति (B.Ed-II)	34
7.	सकारात्मक सोच	डा. भुवनेश कुमार	09	52.	सफलता और मेरा दृष्टिकोण	प्रियंक कुमार तोमर (B.Ed-I)	35
8.	जल है तो कल है	डा. सुधा उपाध्याय	10-11	53.	माँ-पिता	प्रीति कुमार (B.Ed-I)	35
9.	हौसला	मदीहा मकसूद बी.ए.(तृतीय वर्ष)	11	54.	बचपन	रिचा रॉय (B.Ed-II)	36
10.	प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी....	डॉ वीरेन्द्र कुमार	12-13	55.	सफलता	हिमांशी बंसल (B.Ed-I)	36
11.	प्रभावशाली एवं आकर्षक...	डा. शैलेन्द्र कुमार सिंह	13-14	56.	कोशिश कर	सुरभि बंसल (B.Ed-I)	36
12.	बजट के स्वरूप	डॉ. तरुण श्रीवास्तव	15-16	57.	ज्ञान के मोती	सोनम शर्मा (B.Ed-I)	36
13.	आखिरी हीरा	श्री आलोक कुमार तिवारी	16	58.	The Ukrain Russia	Prof. U.K. Jha	37-38
14.	डिजिटल मुद्रा की सभ्यताएं...	श्री हिमांशु कुमार	17-18	59.	Science & Technology	Prof. P.K. Tyagi	39
15.	हमारे देश की मूल....	श्री अनिल कुमार	18-19	60.	The Importance of...	Prof. R.C. Agarwal	40
16.	स्टूडेंट शब्द का विश्लेषण	हर्षित शर्मा (B.C.A-I)	19	61.	The Role of ...	Sh. Pankaj Kr. Gupta	41
17.	सफल बिजनेस पर्सन...	कु. लवी अग्रवाल (B.Com-III)	20	62.	Essentied Role-in...	Sh. Mayank Sharma	42
18.	सत्य	करन (B.A-I)	20-21	63.	Importance of.....	Sh. Sachin Agarwal	43
19.	तिरंगा अभियान	कु. शबाना (B.Com-II)	21-22	64.	Introduction of.....	Sh. Deekshit Kumar	44-45
20.	मोबाइल/स्मार्टवाच.....	सुवेन्द्र सिंह (M.Sc-I)	22	65.	An Introduction to...	Sh. Harendra Kumar	46-47
21.	अनमोल विचार	लक्ष्मी (B.A-II)	23	66.	Creative Thinking	Monika Bhardwaj (BCA-I)	48
22.	मोबाइल मैं हूँ	कु. गरिमा (B.Sc-I)	23	67.	Importance of Edu...	Aakanshi (B.S.C.-III)	48
23.	पेड़ की पुकार	तबस्सुम (B.Sc-I)	23	68.	Our Confidence	Chandraveer	49
24.	श्री निवास रामानुजन	सपना (M.Sc-I)	24	69.	Grow more tree	Anupriya (B.sc-III)	49
25.	बेटी की विनती	नरेन्द्र रंजन	24	70.	Hope	Pratibha Dhaiya (BCA-III)	50
26.	अहंकार और विनम्रता	नीतू (B.A-I)	25	71.	It is Just the....	Pratibha Dhaiya (BCA-III)	50
27.	मोबाईल	कु. पायल (B.Sc-I)	26	72.	We can do about...	Keerti Sharma (M.Sc-I)	51
28.	जीना इसी का नाम	मीनाक्षी चौहान (B.Com-I)	26	74.	Climate Change...	Keerti Sharma (M.Sc-I)	51
29.	कविता	रिया गोयल (B.Com-I)	26	73.	Mental Health	Ch. Tejveer Singh	51
30.	आज नहीं तो कल होगा	सोनू कुमार शर्मा (B.A-I)	26	74.	Some Quotes on Life	Sapna (M.Sc-I)	52
31.	मां-बाप	कुलदीप कुमार (B.Sc-II)	27	75.	I Just Keep...	Harshit Pathak (BCA-I)	52
32.	कविता	खुशबू चौधरी (B.Com-I)	27	75.	A Teacher	Bharti Sharma (B.A.-I)	52
33.	मुस्कुराने के लिये	मनोज राजपूत (B.Sc-I)	27	76.	Valve of Edu....	Sonu Kumar Sharma (BA-I)	52
34.	हमारी जिंदगी	भारती शर्मा (B.A-I)	28	77.	Here Life....	Chandra Prakash	53
35.	ना तुझे देखा मैंने	मोहित कुमार (M.Sc-I)	28	78.	Mira Culors...	Kajal Chaudhary (B.Ed-II)	53
36.	अनमोल वचन	साक्षी चौहान (B.Com-III)	29	79.	Corona	Meenakshi Sagar (B.Ed-I)	53
37.	शिक्षा	अनुराग सैनी (B.A.-I)	29	80.	Strees Management...	Prof. Seemant Kumar Debey	
38.	कविता	प्रिया (B.A.-I)	29		& Students	(Head Physical Edu. Dept.)	54
39.	कैसा है पूरा वर्ष	चन्द्रवीर (B.Sc-II)	29	81.	How to Join NCC	Yejendra Kumar	
40.	जिन्दगी आसान नहीं	दिव्या कुमारी (B.Sc-I)	30			(Head Physical Dept.)	55
41.	नए रूपों में जिन्दगी	पर्मिता सिंह (B.Sc-I)	30	82.	महाविद्यालय प्रबंध समिति,	–	56-60
42.	अपना गांव	गौरव राजपूत (B.Sc-II)	30		महाविद्यालय परिवार एवं		
43.	सपनों में रख आस्था	हिमांशी (B.Sc-II)	31		विभिन्न समितियां		
44.	सफलता का रहस्य	गौरव मीणा (B.Sc-II)	31				
45.	संगति का असर	मुस्कान गर्ग (B.A.-I)	31				

प्रगति आख्या 2022-23

प्रो० गिरीश कुमार सिंह
प्राचार्य

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी स्थापना के 57 वर्ष पूर्ण कर चुका है। सन् 1965 से 2022 तक की इस अवधि में महाविद्यालय ने उत्तरोतर संरचनात्मक एवं गुणात्मक प्रगति की है। महाविद्यालय के अनेक छात्र-छात्राओं ने विश्व विद्यालय स्तर पर शैक्षणिक एवं विभिन्न पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। वर्तमान समय में महाविद्यालय में चार अनुदानित एवं चार स्व-वित्तपोषित पाठयक्रम संचालित हो रहे हैं, जिनमें कुल 1673 छात्र-छात्रायें अध्ययनरत है। शैक्षणिक उपलब्धियों एवं अनुशासन की दृष्टि से यह महाविद्यालय चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

पाठ्यक्रम	परीक्षाफल (उत्तीर्ण प्रतिशत)
बी०ए०	87.19%
बी०सी०-सी०	98.92%
बी०कॉम०	82.14%
बी०सी०ए०	93.48%
एम०ए० संस्कृत	93.75%
एम०एस-सी० भौतिकी	66.67%
एम०एस-सी० रसायन विज्ञान	78.95%
बी०एड०	100%

मुख्य आकर्षण:

- ❖ महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर सात विषयों एवं परास्नातक स्तर पर तीन विषयों के संचालित करने की अनुमति शासन द्वारा प्राप्त हो चुकी है। इतिहास, सांख्यिकी, वाणिज्य विषय में पी.एच.डी. कराने की अनुमति प्राप्त हो चुकी है।
- ❖ महाविद्यालय के पांच प्रबुद्ध प्राध्यापक डॉ. यू.के.झा (राजनीतिक विज्ञान), डॉ. पी.के. त्यागी (सांख्यिकी), डॉ. चन्द्रावती (रसायन विज्ञान), डॉ. आर.के. अग्रवाल (गणित) एवं डॉ. सीमान्त कुमार दुबे (शारीरिक शिक्षा) एसोसिएट पद से प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत हुये हैं।
- ❖ महाविद्यालय में उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के विज्ञापन संख्या 50 के अंतर्गत चयनित श्री आलोक कुमार तिवारी ने हिन्दी विभाग, श्री सोहन आर्य संस्कृत विभाग, श्री अनिल कुमार समाजशास्त्र विभाग, श्री दीक्षित कुमार भौतिकी विभाग, श्री हरेन्द्र कुमार गणित विभाग एवं श्री हिमांशु अर्थशास्त्र विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।
- ❖ महाविद्यालय के उन्नयन हेतु महाविद्यालय परिवार के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श अथवा सम्मेलन हेतु एक कॉन्फ्रेंस रूम को तैयार कराया गया।
- ❖ छात्र-छात्राओं के हित को देखते हुए महाविद्यालय में कक्षा समापन होने के बाद सायंकाल अध्ययन करने हेतु एक 40 विद्यार्थी क्षमता वाली डिजीटल लाइब्रेरी बनायी गयी।
- ❖ महाविद्यालय में शिक्षा गुणवत्ता बढ़ाने हेतु एक इंटरएक्टिव पैनल लगाया गया।
- ❖ महाविद्यालय में शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षकों के गुणवत्ता पूर्ण व्याख्यान छात्रों तक पहुंचाने हेतु एक रिकॉर्डिंग रूम तैयार कराया गया है।
- ❖ महाविद्यालय की प्राचीन धरोहरों को संरक्षित रखने हेतु एक संग्रहालय बनाया जा रहा है।
- ❖ महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं की सुरक्षा की दृष्टि से कमरों एवं पोर्च में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगाये गए।
- ❖ महाविद्यालय में स्थापित वाटिका का नामकरण स्व. श्री जगदीश शरण अग्रवाल जी की स्मृति में श्रद्धेय श्री जयप्रकाश जी गौड़ के निर्देश पर जगदीश वाटिका किया गया।
- ❖ महाविद्यालय में जॉब प्लेसमेंट हेतु आयी कम्पनी एक्कोएट इंडिया ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट एवं इरा टैक्नोलॉजी इंडिया लि. ने कुल 14 विद्यार्थियों को चयन किया।
- ❖ चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ द्वारा आयोजित वार्षिक एवं सेमेस्टर परीक्षाओं में विश्वविद्यालय स्तर पर परास्नातक भौतिक में निकिता शर्मा ने द्वितीय स्थान उज्जवल सिंह (पुरूष वर्ग) ने प्रथम स्थान एवं बी.एड. पाठयक्रम में शिवा भारद्वाज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- ❖ ओ.एन.जी.सी. के सी.एस.आर. फन्ड से कॉलिज में छात्राओं के लिए एक गाएनेकोलाजिस्ट की व्यवस्था तथा सेनेट्री नैपकिन की योजना शुरू की गई है। डिफिरेंटली एब्लड (दिव्यांगजन) छात्रों के लिए एक व्हील चेयर की व्यवस्था की गई है।

1. दिनांक 05.07.2022 को महाविद्यालय परिसर में वृहत वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें शिक्षकों कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण किया।
2. 15 जुलाई को डी.पी.बी.एस. कॉलिज में स्थापना दिवस के अवसर पर हवन का कार्यक्रम रखा गया।
3. दिनांक 29.07.2022 को ''एक युद्ध नशे के विरूद्ध'' जन जागरूकता अभियान के अन्तर्गत प्राचार्य जी द्वारा शपथ दिलाई गई।

4. दिनांक 06.08.2022 को आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में देशभक्ति पूर्ण चलचित्र चक दे इंडिया का प्रदर्शन किया गया तथा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय आदर्श राष्ट्र के निर्माण में रामचरित्र मानस की भूमिका रहा।
5. दिनांक 08.08.2022 से दिनांक 14.08.2022 तक संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया। दिनांक 14 अगस्त 2022 को स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर एक दीप अमर शहीदों के नाम अभियान के तहत महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर मोमबत्ती जलाकर अमर शहीदों को श्रद्धा के साथ नमन किया गया।
6. दिनांक 11 से 17 अगस्त 2022 तक स्वतंत्रता सप्ताह एवं दिनांक 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
7. दिनांक 15 अगस्त 2022 को स्वाधीनता दिवस समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया।
8. दिनांक 17 अगस्त 2022 को 'कौशल विकास मिशन' के तहत उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन का आयोजन 'स्वाबलम्बी भारत अभियान' समिति, बुलन्दशहर के तत्वाधान में किया गया।
9. दिनांक 05 सितम्बर 2022 को शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन किया गया इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षकों को सम्मानित किया गया।
10. दिनांक 06 सितम्बर 2022 को देशभक्ति पूर्ण चलचित्र 'सरदार बल्लभ भाई पटेल' का प्रदर्शन किया गया।
11. दिनांक 14 सितम्बर 2022 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।
12. दिनांक 14 अक्टूबर 2022 को परिसर की स्वच्छता के संदर्भ में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें श्री संजय कुमार जी, खाद्य एवं सफाई निरीक्षक, नगर पालिका अनूपशहर ने अपने व्याख्यान द्वारा शिक्षकों एवं कर्मचारियों का मार्ग दर्शन किया।
13. दिनांक 15 अक्टूबर 2022 से दिनांक 18 अक्टूबर 2022 के मध्य शिक्षा क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी विषय पर तीन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।
14. दिनांक 16 नवम्बर 2022 से दिनांक 18 नवम्बर 2022 तक तीन दिवसीय रोवर रेंजर प्रवेश प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया।
15. दिनांक 26 नवम्बर 2022 को 'संविधान दिवस' का आयोजन किया गया।
16. दिनांक 01 दिसम्बर 2022 से 10 दिसम्बर 2022 तक संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया गया।
17. दिनांक 08 दिसम्बर 2022 को सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
18. दिनांक 10 दिसम्बर 2022 को रक्त जांच शिविर का आयोजन किया गया।
19. दिनांक 14 दिसम्बर 2022 को एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
20. दिनांक 16 दिसम्बर 2022 व 17 दिसम्बर 2022 को वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
21. दिनांक 18 दिसम्बर 2022 को पुरात्तन छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया।
22. दिनांक 22 दिसम्बर 2022 को प्रसिद्ध गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन के जन्मदिवस को गणित दिवस के रूप में मनाया गया।
23. दिनांक 15 जनवरी 2023 एवं 16 जनवरी 2023 को विश्व विद्यालय की दो दिवसीय अन्तरमहाविद्यालय नेट बॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
24. दिनांक 23 जनवरी 2023 को 'पात्रता का विकास' के विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के पूर्व छात्र डॉ. गौरव वार्ष्णेय जो वर्तमान में संयुक्त निदेशक (वन-सांख्यिकी), उत्तर प्रदेश लखनऊ के पद पर कार्यरत द्वारा छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन किया।
25. दिनांक 26 जनवरी 2023 को महाविद्यालय में 74 वॉ गणतन्त्र दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किये।
26. दिनांक 26 जनवरी 2023 को गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर दिल्ली कर्तव्य पथ पर होने वाली परेड के लिये महाविद्यालय के एन.सी.सी. कैडेट भूपेन्द्र का चयन हुआ।
27. दिनांक 27 जनवरी 2023 से दिनांक 04 फरवरी 2023 तक शासन से प्राप्त निर्देशों के अनुसार महाविद्यालय में आई.क्यू.ए.सी. के तत्वाधान में 'अमृत महोत्सव' के अंतर्गत तथा जी 20 सम्मेलन भारत में आयोजित किये जाने पर क्रमशः वाद-विवाद प्रतियोगिता, दिनांक 28 जनवरी 2023 को समावेशी विकास, भारतीय विकास संरचना एवं वैश्विक विकास, आत्मनिर्भर भारत अभियान पर सिम्पोजियम एवं गोष्ठी का आयोजन, दिनांक 28 जनवरी 2023 को बास्केटबॉल प्रतियोगिता, दिनांक 30 जनवरी 2023 को क्विज प्रतियोगिता, दिनांक 31 जनवरी 2023 को चित्रकारी प्रतियोगिता, दिनांक 01 फरवरी 2023 को योग कैम्प, दिनांक 02 फरवरी 2023 को सांस्कृतिक कार्यक्रम, दिनांक 03 फरवरी 2023 को डेमोक्रेसी एवं सतत् विकास पर सिम्पोजियम का आयोजन एवं दिनांक 04 फरवरी 2023 को भारतीय संस्कृति की विशेषताओं/ विभिन्न विधाओं पर सिम्पोजियम का आयोजन किया गया।

श्रद्धेय श्री जयप्रकाश जी गौड़ अध्यक्ष, ऐंग्लो वैदिक शिक्षा समिति

क्रान्ति ही सही (1996)

प्रो० जी.के. सिंह
प्राचार्य

व्याकुल मन की व्यथा सुनो, भावों की आँधी आने दो।
पीर पिघलनी निश्चित है, इसे बाँध तोड़ बह जाने दो।।

आग बहुत है सीने में, क्यूँ और सुलगते हो यारों।
नये प्राणों की दो हवा इसे, विस्फोट बड़ा हो जाने दो।।

है व्यवस्था बहुत यह बिगड़ चुकी, तुम्हीं तो इसको बदलोंगे।
गर्जन गम्भीर करो ऐसा, मुर्दों को भी जग जाने दो।।

नहीं समय रहा मिन्नत का अब, दे खड़ग हस्त को करो बुलन्द।
हालात पलट दो सारे तुम, सिर कितने ही कट जाने दो।।

श्रम तुम्हारा व्यर्थ किया उस नीले रक्त के दानव ने
ध्वस्त अवश्य होगा वह, है उसकी शामत आने को

रक्त क्रान्ति की बातें नहीं करता हूँ यूँ ही यारों।
ठहरो दो पल में साथ चलूँ ये कलम जरा रूक जाने दो।।

Earning with learning
प्रोग्राम के तहत बनाई गयी पेंटिंग्स

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह, I.A.S
(डी.एम., बुलन्दशहर)

प्रो0 संगीता शुक्ला
(कुलपति)
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय

प्रो0 जी.के. सिंह
(प्राचार्य)
डी.पी.बी.एस.(पी.जी.)कॉलिज, अनूपशहर

जल संकट और भारत

प्रो० चन्द्रावती
विभागाध्यक्ष,रसायन विज्ञान विभाग

जल मनुष्य, पशु, पक्षी व वनस्पति सभी के अस्तित्व व संवर्धन के लिए आधारभूत आवश्यकता है। गेटे ने जल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि प्रत्येक वस्तु जल से उत्पन्न होती है व जल के द्वारा ही प्रतिपादित होती है। जल के महत्व के कारण संयुक्त राष्ट्रसंघ ने वर्ष 2003 को 'अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छ जल वर्ष के रूप में मनाया। यदि जल न होता तो सृष्टि का निर्माण सम्भव न होता। यही कारण है कि यह एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जिसका कोई मोल नहीं है जीवन के लिये जल की महत्ता को इसी से समझा जा सकता है कि बड़ी-बड़ी सभ्यताएं नदियों के तट पर ही विकसित हुई और अधिकांश प्राचीन नगर नदियों के तट पर ही बसे। जल की उपादेयता को ध्यान में रखकर यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम न सिर्फ जल का संरक्षण करें बल्कि उसे प्रदूषित होने से भी बचायें। पूर्णत: शुद्ध जल रंगहीन, गंधहीन व स्वादहीन होता है इसका रासायनिक सूत्र H_2O है। ऑक्सीजन के एक परमाणु तथा हाइड्रोजन के दो परमाणु बनने से H_2O अर्थात जल का एक अणु बनता है। वायुमण्डल में जल तरल, ठोस तथा वाष्प तीन स्वरूपों में पाया जाता है। पदार्थो को घोलने की विशिष्ट क्षमता के कारण जल को सार्वभौमिक विलायक कहा जाता है। मानव शरीर का लगभग 66 प्रतिशत भाग पानी से बना है तथा एक औसत वयस्क के शरीर में पानी की कुल मात्रा 37 लीटर होती है। मानव मस्तिष्क का 75 प्रतिशत हिस्सा जल होता है। इसी प्रकार मनुष्य के रक्त में 83 प्रतिशत मात्रा जल की होती है। शरीर में जल की मात्रा शरीर के तापमान को सामान्य बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जल संरक्षण एवं संचय के उपाय:- जल जीवन का आधार है और यदि हमें जीवन को बचाना है तो जल संरक्षण और संचय के उपाय करने ही होंगे। जल की उपलब्धता घट रही है और मारामारी बढ़ रही है। ऐसे में संकट का सही समाधान खोजना प्रत्येक मनुष्य का दायित्व बनता है। यही हमारी राष्ट्रीय जिम्मेदारी भी बनती है और हम अर्न्तराष्ट्रीय समुदाय से भी ऐसी ही जिम्मेदारी की अपेक्षा करते हैं। जल के स्रोत सीमित है। नये स्रोत हैं नहीं, ऐसे में जलस्रोतों को सुरक्षित रखकर एवं जल का संचय कर हम जल संकट का मुकाबला कर सकते हैं। इसके लिये हमें अपनी भोगवादी प्रविर्त्तियों पर अंकुश लगाना पड़ेगा और जल के उपयोग में मितव्ययी बनना पड़ेगा। जलीय कुप्रबंधन को दूर करके भी हम इस समस्या से निपट सकते हैं। यदि वर्षा जल का समुचित संग्रह हो सके और जल के प्रत्येक बूंद को अनमोल मानकर उसका संरक्षण किया जाये तो कोई कारण नहीं है कि वैश्विय जल संकट का समाधान न प्राप्त किया जा सके। जल के संकट से निपटने के लिये कुछ महत्वपूर्ण सुझाव यहां दिये जा रहे हैं-

1. प्रत्येक फसल के लिये ईष्टतम जल की आवश्यकता का निर्धारण किया जाना चाहिए तदनुसार सिंचाई की योजना बनानी चाहिए। सिंचाई कार्यो के लिये स्प्रिंकलर और ड्रिप सिंचाई जैसे पानी की कम खपत वाली प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. विभिन्न फसलों के लिये पानी की कम खपत वाले तथा अधिक पैदावार वाले बीजों के लिये अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
3. जहां तक सम्भव हो ऐसे खाद्य उत्पादों का प्रयोग करना चाहिए जिसमें पानी का कम प्रयोग होता है। खाद्य पदार्थो की अनावश्यक बर्बादी में कमी लाना भी आवश्यक है।
4. जल संकट से निपटने के लिये हमें वर्षा जल भण्डारण पर विशेष ध्यान देना होगा। वाष्पन या प्रवाह द्वारा जल खत्म होने से पूर्व सतह या उपसतह पर इसका संग्रह करने की तकनीक को वर्षा जल भण्डारण कहते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि तकनीक को न सिर्फ अधिकाधिक विकसित किया जाए बल्कि ज्यादा से ज्यादा अपनाया भी जाए। बंद एवं बेकार पड़े कुओं, पुनर्भरण पिट, पुनर्भरण खाई तथा पुनर्भरण शॉफ्ट आदि तरीकों से वर्षा जल का बेहतर संचय कर हम पानी की समस्या से उभर सकते हैं।
5. वर्षा जल प्रबंधन और मानसून प्रबंधन को बढ़ावा दिया जाए और इससे जुड़े शोध कार्यो को प्रोत्साहित किया जाए। जल शिक्षा को अनिवार्य रूप से पाठयक्रम में जगह दी जाए।
6. जल प्रबंधन और जल संरक्षण की दिशा में जन जागरूकता को बढ़ाने का प्रयास हो। जल प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाय तथा संकट से निपटने के लिये इनकी सेवाएं ली जाय।
7. पानी के इस्तेमाल में हमें मितव्ययी बनना होगा। छोटे- छोटे उपाय कर जल की बड़ी बचत की जा सकती है। मसलन हम दैनिक जीवन में पानी की बर्बादी कतई न करें और एक-एक बूंद की बचत करें। बागवानी जैसे कार्यो में भी जल के दुरूपयोग को रोके।
8. औद्योगिक विकास और व्यावहारिक गतिविधियों की आड़ में

जल के अंधाधुंध दोहन को रोकने के लिये तथा इस प्रकार से होने वाले जल प्रदूषण को रोकने के लिये कड़े व पारदर्शी कानून बनाये जाएं।

9. जल संरक्षण के लिये पर्यावरण संरक्षण जरूरी है। जब पर्यावरण बचेगा तभी जल बचेगा। पर्यावरण असंतुलन भी जल संकट का एक बड़ा कारण है। इसे इस उदाहरण से समझ सकते हैं। हिमालय पर्यावरण के कारण सिकुड़ने लगे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार सन 2030 तक ये ग्लेशियर काफी अधिक सिकुड़ सकते हैं। इस तरह हमें जल क्षति भी होगी। पर्यावरण संरक्षण के लिये हमें वानिकी को नष्ट होने से बचाना होगा।

10. हमें ऐसी विधियाँ और तकनीकें विकसित करनी होगी जिनसे लवणीय और खारे पानी को मीठा बनाकर उपयोग में लाया जा सके। इसके लिये हमें विशेष रूप से तैयार किये गये वाटर प्लांटों को स्थापित करना होगा। चेन्नई में यह प्रयोग बेहद सफल रहा जहां इस तरह स्थापित किये गये वाटर प्लांट से रोजाना 100 मिलियन लीटर पानी पीने योग्य पानी तैयार किया जाता है।

11. प्रदूषित जल का उचित उपचार किया जाय तथा इस उपचारित जल की आपूर्ति औद्योगिक इकाईयों को की जाय।

12. जल प्रबंधन व शोध कार्यों के लिये निवेश को बढ़ाया जाय।

13. जनसंख्या बढ़ने से जल उपयोग भी बढ़ता है ऐसे में विशिष्ट जल उपलब्धता (प्रतिव्यक्ति नवीनीकृत जल संसाधन की उपलब्धता) कम हो जाती है। अतएव इस परिप्रेक्ष्य में हमें जनसंख्या पर भी ध्यान देना होगा।

14. हमें पानी के कुशल उपयोग पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। जल वितरण में असमानता को दूर करने के लिये जल कानून बनाने होंगे। वास्तव में जल संरक्षण एवं जल संचयन आज की जरूरत है, हमें यह ध्यान रखना होगा कि बारिश की एक बूंद भी व्यर्थ न जाए। इसके लिये रेन वॉटर हार्वेस्टिंग एक अच्छा माध्यम हो सकता है। आवश्यकता है इसे और विकसित व प्रोत्साहित करने की। इसके प्रति जनजागृति और जागरुकता को भी बढ़ाना हम सभी का दायित्व है।

भारतीय चिंतन में पर्यावरण चेतना

लक्ष्मण सिंह
सहायक आचार्य एवं
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग

मनुष्य की प्रगति का इतिहास प्राकृतिक परिवेश से उसके सामंजस्यपूर्ण व्यवहार की कहानी है। पर्यावरण ने अपने असंख्य-संगठित समुदायों के साथ मनुष्य जीवन को खुशहाल एवं सुखमय बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण का चिंतन उतना ही प्राचीन है जितना प्राचीन मानव का अस्तित्व है। भारतीय संस्कृति मानती है कि इस शरीर की रचना पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इन पंचतत्वों के सूक्ष्म अंश से हुई है। इन पंचतत्वों में भी शुद्ध वायु और शुद्ध जल मानव जीवन के लिये अति आवश्यक है। प्राणों में शक्ति का संचारक वायु हमारे जीवन का आधार है। जलीय तत्व रक्त के साथ धमनियों में प्रवाहित होता हुआ हमारी प्राणशक्ति बल और ऊर्जा का निर्माण करता है। इन तत्वों की रक्षा करना सही अर्थों में मानव व इस सुन्दर सृष्टि की रक्षा करना ही है। वैदिक साहित्य में प्रकृति के संरक्षण की भावना विशद रूप से दृष्टिगत होती है। वेदों में वातावरण शुद्धि हेतु पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि, वनस्पति, वायुमंडल की प्रार्थना इसलिये की गयी है कि पर्यावरण का अस्तित्व ही इनके द्वारा है। यस्या ह्रदयं परमे त्योमन्। (12/1/8 यजुर्वेद)। जिस प्रकार हृदय की धड़कन पर प्राणी का जीवन निर्भर है, उसी प्रकार अंतरिक्ष की सुरक्षा में ही पृथ्वी और पर्यावरण की सुरक्षा है। अंतरिक्ष रूपी हृदय के नष्ट होते ही समस्त ब्राह्माण्ड का विनाश सुनिश्चित है। वैदिक साहित्य में पर्यावरण के घटकों में अग्नि को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। यह परमात्मा की वास्तविक शक्ति है जो सर्वत्र सर्वदा उपस्थित है। अथर्ववेद के भूमि सूक्त में हमारे शरीर को सदा पवित्र बनाये रखने वाले मेद्यों को पूरी सृष्टि का पिता बताया गया है। भारतीय ऋषि-मुनियों एवं मनीषियों ने प्रकृति को मातृत्व के रूप में सहज स्वीकारोक्ति दी है। अथर्ववेद के माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या: कथन में पृथ्वी माता की सजल संवेदना का गहरा रहस्य समाया हुआ है। पृथ्वी माँ के समान हमको पोषण, संरक्षण एवं स्नेह प्रदान करती हुई विकास की सभी प्रक्रियाओं को अपार धैर्य एवं कुशलतापूर्वक पूर्ण करती है। पृथ्वी हमारे लिये जीवंत प्रतिमा है। पृथ्वी माता के प्रति अगाध श्रद्धा अभिव्यक्त कर कहा जाता है-

पृथ्वी! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम।।

माता की सघन संवेदना एवं पुत्र की गहरी कृतज्ञता के मधुर सम्बन्ध ही अब तक प्रकृति एवं पर्यावरण के गति चक्र को अनुकूल बनाये रख सके हैं। महान ऋषि-मुनियों, दार्शनिकों, संतों तथा मनस्वियों ने लोकमंगल के लिये चिंतन मनन किया। प्रकृति के विविध स्वरूप को समझते हुये वृक्षायुर्वेद में आधिदैविक जीवन के महत्व को समझते हुये आधिभौतिक जीवन यापन हेतु प्रकृति का शास्त्रीय विधि से उपभोग करना बताया गया है। हमारे पूर्वज कोई भी कार्य करने से पूर्व प्रकृति को पूजते थे-

अश्वत्थो वट वृक्ष चन्दन तरुर्मन्दार कल्पौद्रुमौ जम्बू-निम्ब-कदम्ब आम्र सरला वृक्षाश्च से क्षीरिण:।।
सर्वे ते फल संयुत: प्रतिदिनराजते।
विभ्रा जनं रम्यं चैत्ररथं च नन्दनवनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

कभी पर्यावरण हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग हुआ करता था। कभी वातावरण की सुरम्यता हमारे एवं जीवों तथा वृक्ष वनस्पतियों के बीच संवेदना के गहरे रिश्तों से जुड़ती थी। प्रकृति माता के आंगन में हम प्यार एवं प्राण दोनों पाते थे। मेघ अपने मर्यादित क्रम में बरसते थे। नदी की धारा में हवाओं की सरसराहट में पक्षियों के कलरव में हम नैसर्गिक आनंद का अनुभव करते थे। प्रकृति कल्याणकारी शिव के साथ-साथ मिलकर के उज्जवल भविष्य की संरचना में जुटी थी। वर्तमान में हमारी भोगवादी संकीर्ण मानसिकता ने मानव एवं प्रकृति के बीच सभी सूत्रों को विच्छिन्न कर दिया है। अत: जिससे अमृत बरसता था, उसके द्वारा आग बरस रही है, जो विका का माध्यम था। आज विनाश का दृश्य खड़ा कर रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं कि मानव ने ही प्रकृति को प्रलयकारी रौद्ररूप का त्रिशूल थमाया है। मानव को अपनी स्वार्थपरक प्रवृत्तियों को बदलना होगा। प्रकृति के सभी घटकों के साथ पूर्ववत्, स्नेह, सौहार्द, सहयोग एवं साहचर्य सम्बन्धों को एक बार पुन: स्थापित करना होगा। तभी प्रकृति माता रौद्ररूप को छोड़कर मंगलकारी शिव के साथ होगी और विनाश के स्थान पर विकास का चक्र चलायेगी। प्रकृति का भोग, इसके संसाधनों का अधिकाधिक शोषण करना ही आज समाज एवं विश्व के विकास को लेकर प्रवाहमान विचारधारा का आदर्श है। स्वामी विवेकानंद जब जापान गए थे, तो वहाँ एक जापानी ने उनसे प्रश्न किया- ''आप कहते हैं कि भारत के पास वेद, पुराण, उपनिषद जैसे श्रेष्ठतम ग्रंथ हैं, फिर भी भारत एक पिछड़ा हुआ देश क्यों है? विवेकानंद ने उत्तर दिया बंधु, जब किसी व्यक्ति के हाथ में बढ़िया बंदूक हो, परन्तु वह उसे चलाना ही न जानता हो, तो उसमें बंदूक का क्या दोष है। इसी प्रकार यदि भारतीय अपने श्रेष्ठ ग्रन्थों को न पढ़ें, उनसे सबक न लें तो उसमें ग्रन्थों का क्या दोष है? वह जापानी उनके इस उत्तर से इतना प्रभावित हुआ कि वह उनका शिष्य बन गया। समाज कल्याण प्रति समर्पित भारतीय मनीषियों ने अपने उत्कृष्ट ज्ञान को व्यवहारिक रूप में जनोपयोगी स्वरूप प्रदान कर स्थायित्व प्रदान करने के लिए अनेक नियम बना कर उन्हें कर्म का आचरण बनाते हुए शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, धर्म-अधर्म के साथ जोड़ दिया। ताकि समाज का प्रत्येक नागरिक इन सरल नियमों का पालन करते हुए परिस्थितिकी को यथावत् और सुदृढ़ रखकर स्वविकास की ओर कद बढ़ाता रहे। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि आज पर्यावरण संरक्षण की महती आवश्यकता है। वृक्षों को सम्मान एवं पूजन अर्चन तथा वंदन तथा संरक्षण के पीदे पर्यावरण को सुरक्षित रखना था। वर्तमान में पर्यावरण को सुरक्षित रखना था। वर्तमान में पर्यावरण को बचाने इसे फिर से संरक्षित, सुरक्षित और समृद्ध करने के लिए हमें इसके प्रति फिर से भावात्मक सम्बन्ध स्थापित करने होंगे। इसके साथ ही भारतीय वैदिक कालीन संस्कृति की प्राचीन मान्यताओं को सामयिक परिप्रेक्ष्य में कसौटी से कसकर फिर से अपनाना होगा। संस्कृति संवेदना से पनपती है और हमारे अंदर वृक्षों के प्रति जब तक गहरी संवेदना नहीं होगी तब तक पर्यावरण का शोषण एवं दोहन होता रहेगा। जिस तरह सूर्य, चन्द्रमा, आकाश अपनी-अपनी सीमाओं में आबद्ध होकर नियमबद्ध तरीके से कर्त्तव्यपथ पर अग्रसर है। उसी तरह एक नियमित और अखिण्डत अनुशासन की आवश्यकता है।

वसुधैव कुटुम्बकं की भावना का प्रतिपालन करते हुए भारतीय संस्कृति के मूलमंत्र जैसी जीवन दृष्टि की आवश्यकता है-

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:ख भागभवेत्।।

शिक्षा

- एक छात्र की सबसे महत्वपूर्ण गुण यह है कि वह हमेशा अपने अध्यापक से सवाल पूछे।
- एक बेहतरीन किताब 100 अच्छे दोस्त के बराबर है, लेकिन एक सर्वश्रेष्ठ दोस्त पुस्तकालय के बराबर है।
- **'शिक्षा'** का उद्देश्य तथ्यों को सीखना नहीं होता है बल्कि **'शिक्षा'** का मुख्य दिमाग को प्रशिक्षित करना होता है।

नेतृत्व कला मेरी दृष्टि में

डॉ. के.सी. गौड़
सहायक आचार्य
बी.एड. विभाग

(LEADERSHIP IS AN ART OF MY POINT OF VIEW)

'एकता में शक्ति होती है।' किसी संगठन एवं उपक्रम से सम्बन्धित अनेकों व्यक्तियों के समूहों द्वारा किसी कार्यक्रम को सही दिशा में संचालित करने अथवा सुचारू रूप से क्रियान्वित होने के लिए एक ऐसे समूह के वांछित 'उद्देश्यों की प्राप्ति' की दिशा में सामूहिक प्रयत्नों एवं मनोवृत्तियों को निर्देशित करता हो। वह प्रबन्ध या उपक्रम के व्यक्तियों के कार्यों तथा मानवीय सम्बन्धों पर विशेष ध्यान देता हो, वह अपने द्वारा संजोयी हुई अनुशासित शक्ति से सम्पूर्ण प्रबन्ध, उपक्रम अथवा इकाई को किसी लक्ष्य, की दिशा में अनवरत् गतिशील बनाए रखता हो। ऐसा व्यक्ति एक 'नेता' के रूप में सदैव अपनी भूमिका अदा करता हैं अर्थात वह अन्य व्यक्तियों, उनकी क्रियाओं का संगठित प्रयास में मार्ग-दर्शन करता है। अतः नेता में अनुयायियों को उसकी इच्छानुसार क्रियाएँ करने की योग्यता ही नेतृत्व कहलाती है।

नेतृत्व शब्द से तात्पर्य किसी व्यक्ति के ऐसे गुणों से है, जिसके द्वारा वह समूह के उद्देश्यों एवं प्रयत्नों को एकता प्रदान करता है, अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सदस्यों को प्रेरणा देता है तथा उनका सफल मार्गदर्शन करता है। दूसरे शब्दों में, नेतृत्व वह क्षमता है, जिसके माध्यम से नेता, अनुयायियों के एक समूह द्वारा वांछित कार्य बिना किसी दवाब से स्वेच्छापूर्वक सम्पन्न करवाता है। इस प्रकार नेतृत्व का अर्थ एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं का इस प्रकार निर्देशन करना होता है कि संगठन के निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति आसानी से हो जाये। नेतृत्व कला का एक महत्वपूर्ण पहलू (Aspect) है।

शैक्षिक नेतृत्व की आवश्यकता एवं महत्वः- उत्तम एवं कुशल शैक्षिक नेतृत्व विद्यालय प्रबन्ध एवं प्रशासन की प्रथम आवश्यकता होती है। शैक्षिक नेतृत्व संभालने में व्यक्ति की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है और 'नेता' को एक आत्मिक सन्तोष एवं सुख की अनुभूति होती है। शैक्षिक क्षेत्र में तथा विद्यालयों में अधिकारीगण नेतृत्व कार्य का निर्वाह करते हैं। 'शैक्षिक नेतृत्व' नेताओं की यशवृद्धि, सम्मान, भावना, लोकप्रियता, आत्मसन्तुष्टि तथा गौरव की अनुभूति में पूर्णरूपेण सहायक होता है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक नेतृत्व विद्यालय, महाविद्यालय की चहुंमुखी उन्नति तथा समाज की उन्नति के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि समाज में उचित शिक्षा के लिए मार्गदर्शन शैक्षिक नेतृत्व द्वारा ही किया जाता है।

शिक्षा और महिला सशक्तीकरण

डॉ. सुनीता गौड़
विभागाध्यक्ष,
बी.एड. विभाग

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थतिरे पुत्राः, न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम्।।

स्त्री को प्राचीन काल से ही 'अबला' की संज्ञा मिली है, जो कि नितान्त अनुचित है। इस अबला की संज्ञा से 'सबला' का सफर शिक्षा द्वारा ही तय हुआ है। समाज ने सदा ही पुरूषों की प्रधानता स्वीकार की है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों को सदैव से ही गुलामी की बेड़ियाँ मिली। स्त्री को प्राचीन काल से ही अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है यथा नारी, नारायनी, देवी स्वामिनी इत्यादि। सृष्टि के प्रारम्भ से ही स्त्री का प्रत्येक रूप वन्दनीय रहा है चाहे वो माँ का रूप हो, बहन, पत्नी या प्रेयसी का । पत्नी के रूप में सीता बनकर उसने अग्नि परीक्षा दी, शैव्या बनकर पति के साथ सहधर्मिणी बनी, अहिल्या बनकर शापित हुई, यशोदा बनकर भगवान के लालन-पालन का सौभाग्य भी उसी को प्राप्त हुआ। ये है स्त्री के विविध रूप। स्त्री के सभी रूपों को पूज्यनीय माने जाने के कारण उसे प्रदात्री कहा गया है। दुर्गा बनकर वह देवताओं की रक्षा दानवों से करती है तो लक्ष्मी बनकर सौभाग्य सृष्टि करती है, सरस्वती बनकर जिज्ञासुओं को विद्या दान करती है तो माता बनकर अपने बच्चे की सभी जरूरतें पूरा करती है। स्त्री के बिना समाज की कल्पना अधूरी है। अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर गृहस्थी की गाड़ी चलाने वाली स्त्री शिक्षा व अर्थ जगत से लेकर पुरूषों के एकाधिपत्य वाले सभी क्षेत्रों में भी अपना लोहा मनवा चुकी है। स्त्री को दया, करूणा, ममता, प्रेम व त्याग की प्रतिमूर्ति माना गया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक विशेष जनसमूह को अपनी विशेष धारा में ले जाने की क्षमता को नेतृत्व क्षमता कहते हैं। नेतृत्व शब्द किसी व्यक्ति के उन गुणों को दर्शाता है जिससे किन्हीं उद्देश्यों में एकत्व भाव जागृत होता है। नेतृत्व के गुणों के माध्यम से अनुयायी नेता की इच्छानुसार ही कार्य करते हैं। नेतृत्व में गजब परिवर्तन की शक्ति होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नेतृत्व विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर सकता है जैसा कि पूर्व में निहित है। यथा- व्यक्तित्व का विकास करना, अभिप्रेरण की आधारशिला, सामूहिक क्रियाओं का सफलतापूर्ण संचालन, अपनत्व की भावना का विकास इत्यादि। प्रभावशाली शैक्षिक नेतृत्व शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान सरलता से कर सकता है।

नेतृत्व ही वह गुण जिसके द्वारा अनुयायियों के एक समूह से इच्छानुसार कार्य लिया जा सकता है। यह व्यक्ति की अदम्य आन्तरिक शक्ति है।

है अदम्य यह शक्ति निहित,
जो करती है पूरा संचालन।
एक बड़ी जनता में रखती,
है पूरा सहर्ष अनुशासन।।

सकारात्मक सोच

डॉ० भुवनेश कुमार
विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग

मनुष्य का दृष्टिकोण ही एक ऐसा शस्त्र है, जोकि किसी भी हार को जीत में बदलने की ताकत रखता है। यहाँ कहने का अभिप्राय यह है कि अगर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सार्थक प्रयास के साथ–साथ हमारी सोच भी सकारात्मक है तब निश्चित ही हम अपने लक्ष्य को बड़ी सुगमता के साथ प्राप्त कर लेंगे।

वास्तव में मानव जीवन इतना सरल नहीं होता। हमारे जीवन में सफलता का मार्ग विफलताओं से भरा हो सकता है, विशेष रूप से तब जब कि आप क्या करना चाहते हैं, अथवा आप किस ओर को जा रहे हैं, इस सम्बन्ध में आपको पूर्ण रूप से पक्का विश्वास नहीं है। लेकिन, उत्साही/उमंगी बने रहे, असफलता को भावी सफलता के मार्ग में केवल एक पग समझें, न कि किसी रूकावट के रूप में, हमेशा रचनात्मक बने रहें और लगातार प्रयत्न करते रहें। अपने लक्ष्यों के प्रति जुनून और निष्ठा बनाए रखें, दृढ निश्चय एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपने संघर्ष को निरंतर जारी रखें।

हमारी धार्मिक पुस्तक गीता में भी कहा गया है कि ''जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा हो रहा है और जो होगा वह भी अच्छा ही होगा।'' इन सकारात्मक विचारों के साथ जो व्यक्ति अपने जीवन में सामंजस्य बना लेते हैं वही व्यक्ति अन्य लोगों की अपेक्षा अपने आपको अत्यंत स्वस्थ, प्रसन्नचित्त और प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी बना लेते हैं।

स्वामी शिवानंद जी का कथन है कि ''व्यक्ति अपनी सोच से ही अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है।'' क्योंकि आकर्षण के नियमानुसार जो व्यक्ति जैसा सोचता है बाहरी परिस्थितियां भी उसी प्रकार से निर्मित हो जाती हैं तथा आकर्षित होकर उस व्यक्ति की ओर आ जाती है जो वैसा सोचता है।

कहा भी गया है कि अगर आपन अपने आपको असहाय समझते हैं तो आप असहाय ही हो जाते हो और अगर आप अपनी सोच से अपने आपको मजबूत मानते हैं तो आप मजबूत अर्थात बलशाली हो इसमें कोई सन्देह नहीं है।

यहाँ स्पष्ट करना चाहूंगा कि सकारात्मक सोच का मतलब यह बिल्कुल भी नहीं है कि जो मैं सोच रहा हूँ बिल्कुल वैसा ही होगा या जो मैं चाहता हूँ वो मुझे मिलेगा ही मिलेगा या भविष्य में अच्छा होगा तो भविश्य में अच्छा ही होगा। यहां पर यह सकारात्मक सोच नहीं हैं। क्योंकि लक्ष्य के अनुरूप बिना परिश्रम के अच्छे परिणाम की सोच हमारी कामना है। जबकि लक्ष्य के अनुरूप परिश्रम कर अच्छे परिणाम की वास्तविक कामना है जो कि सकारात्मक सोच है। इसलिये कामना और वास्तविक कामना में अंतर है।

इस बात को एक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है, जिसको मैंने क्रिकेट से जोड़ा है। जिस प्रकार क्रिकेट मैच में एक बॉलर एक के बाद एक गेंद बल्लेबाज की ओर फेंकात है और बल्लेबाज एक के बाद एक गेंद को खेलने का प्रयास तो करता है मगर कई गेंद नहीं खेल पाता है और इस प्रकार वह अपने ओवर की पांच बॉलों को अच्छे परिणामों के साथ नहीं खेल पाता है। लेकिन ओवर की अंतिम बॉल पर सिक्सर लगा देता है। यहाँ बॉल का आशय मानव के जीवन में आये अवसरों से है। वास्तव में कभी कभी मानव के जीवन में कई अवसर आते हैं लेकिन समझ नहीं पाते और अवसर निकल जाते हैं। लेकिन फिर भी हम अपने लक्ष्य को पाने के लिए निरंतर परिश्रम के साथ प्रयास करते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। इस प्रकार की सोच ही सकारात्मक सोच होती है।

अगर आप सोचते हैं कि आपका बीता हुआ कल बहुत खराब रहा है और आने वाला कल पता नहीं कैसा होगा को लेकर परेशान हैं तब ऐसी अवस्था में आपको चाहिए कि आप अपने बीते हुए कल और आने वाले कल को सोचने की ऊर्जा को वर्तमान में ले आइए और जो भी आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में परिश्रम कर रहे हैं उसमें अपना 100% लगा दीजिए, उस लक्ष्य को अपनी पूजा बना डालिए। तब निश्चित ही पूरी प्रकृति आपके उस निर्धारित कार्य को सफल बनाने में आपके साथ होगी।

शिक्षा

- शिक्षा सभी के जीवन में सफलता की कुंजी है, और शिक्षक अपने छात्रों के जीवन पर स्थायी प्रभाव डालते हैं, जिससे वह अपने जीवन में सफल होते हैं।
- ज्ञान ही शक्ति है, जानकारी स्वतंत्रता है, प्रत्येक परिवार और समाज में शिक्षा प्रगति का आधार है।

जल है तो कल है

डॉ० सुधा उपाध्याय
सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग

जल संरक्षण हमारा दायित्व ही नहीं कर्तव्य भी है। जल हर जीवित प्राणी के लिए अमृत के समान है तथा सभी के लिए बहुत जरूरी है। जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है और ऐसे में अगर पानी की कमी हो जाये तो धरती में जीवन का संकट पैदा हो सकता है। आज भी बहुत से स्थानों पर लोग पानी की कमी की वजह से कई समस्याओं का सामना कर सकें है। इसलिए हम सभी की जिम्मेदारी बन जाती है कि हम पानी के महत्व को समझे और संरक्षण में जितना हो सके योगदान दे सकें। हमारे देश में ही नहीं विश्वभर में जल की समस्याएं काफी तेजी से बढ़ रही हैं। इसकी कमी को दूर करने के लिए जल का संरक्षण आवश्यक है।

भारत में वर्षा और जल-संरक्षण का विशेष अध्ययन करने वाले मौसम विज्ञानी पी.आर. पिशारोटी ने बताया है कि यूरोप और भारत में वर्षा के लक्षणों में महत्वपूर्ण अन्तर है। यूरोप में वर्षा धीरे-धीरे पूरे साल होती रहती है। इसके विपरीत भारत के अधिकतर भागों में साल के 8760 घंटों में से लगभग 10 घंटे मात्र ही वर्षा होती है। इसमें से कुछ समय मूसलाधार वर्षा होती है। इस कारण आंधी बारिश मात्र घंटों में ही हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि जल-संग्रहण और संरक्षण यूरोप के देशों की अपेक्षा भारत जैसे देशों में कहीं अधिक आवश्यक है। भारत की वर्षा की तुलना में यूरोप में वर्षा की सामान्य बूंद काफी छोटी होती है। इस कारण उसकी मिट्टी काटने की क्षमता कम होती है।

यूरोप में बहुत-सी वर्षा बरफ के रूप में गिरती है। जो धीरे-धीरे धरती में समाती रहती है। जब कि भारत में बहुत सी वर्षा मूसलाधार रूप में गिरती है, जिसमें मिट्टी को काटने व बहाने की बहुत क्षमता होती है। दूसरे शब्दों में हमारे यहां की वर्षा स्वाभाविक प्रवृति है कि अगर उसके जल के संग्रहण और संरक्षण की उचित व्यवस्था नहीं की गयी तो यह जल बहुत मिट्टी बहाकर निकट की नदी की ओर वेग से दौड़ेगा और नदी में बाढ़ आ जाएगी। चूंकि अधिकतर जल न एकत्र होगा न धरती में रिसेगा। इसलिए कुछ समय बाद जल संकट उत्पन्न होना भी स्वभाविक ही है। इन दोनों विपदाओं को कम करने के लिए या दूर करने के लिए जीवनदायी जल का अधिकतम संरक्षण और संग्रहण आवश्यक है। इसके लिए पहली आवश्यकता है- वन, वृक्ष और हर तरह की हरियाली की जा वर्षा के पहले वेग को अपने ऊपर झेलकर उसे धरती पर धीरे से उतारे ताकि यह वर्षा मिट्टी को काटे नहीं, अपितु काफी हद तक स्वयं मिट्टी में ही समा जाये या रिस जाये।

दूसरा महत्वपूर्ण कदम यह है कि वर्षा का जो शेष पानी नदी की ओर बह रहा है उसके अधिकतम सम्भव हिस्से को तलाबों या पोखरों में एकत्र कर लिया जाऐ। वैसे इस पानी को मोड़कर सीधे खेतों में भी लाया जा सकता है। खेतों में गिरने वाला वर्षा का अधिकतर जल खेतों में ही रहे, इसकी व्यवस्था भू-संरक्षण के विभिन्न उपायों, जैसे- मेढबंदी, पहाड़ों में सीढीदार खेत आदि से की जा सकती है। तलाबों में पानी जो एकत्र किया गया है, वह उनमें अधिक समय तक बना रहे, इसके लिए तलाबों के आस-पास पौधारोपण हो सकता है, और वाष्पीकरण कम करने वाला विशेष आकार का तालाब बनाया जा सकता है।

नल, हैंडपम्प, नलकूप या पाइपलाईन- ये सब कई गांवों में ज्यादा नजर आ रहे हैं, लेकिन जिस भू-जल से, तालाब या झरने से इन्हें पानी मिलना है अगर उनमें ही पानी कम होने लगे तो भला इन निर्माणकार्यो से क्या समस्या हल होगी? हाल ही सुप्रीम कोर्ट को केन्द्रिय भूजल बोर्ड के वैज्ञानिकों ने बताया कि पिछले लगभग दस-पंद्रह वर्षों में हमारे देश के भूजल स्तर में बहुत तेजी से गिरावट आयी है। पहाड़ी क्षेत्र से कितने ही झरनों के सूखने या पतले पड़ने के समाचार है। बहुत बड़ी संख्या में तालाब मैदान जैसे बन गये है, उन पर अतिक्रमण हो चुका है या वे बुरी तरह जीर्ण-शीर्ण स्थिति में पड़े है। जल की कमी के संकट को जल प्रदूषण ने और भी विकट कर

दिया है। छोटी-छोटी नदियां भी इतनी प्रदूषण हो गयी है कि इससे कई गांवों की जल-उपलब्धि पर प्रतिकूल असर पड़ा है। जहां कृषि रसायनों का अत्यधिक उपयोग हो रहा है वहां भूजल पर इतना ही हानिकारक असर नजर आने लगा है। कई क्षेत्रों में जल संकट की परवाह न करते हुए ऐसे उद्योग लगाए जा रहे हैं, जो जल का अत्यधिक उपयोग करेंगे और जल प्रदूषण में वृद्धि करेंगे। कुछ ऐसे क्षेत्र भी है, जहां जल संकट को नजर अंदाज करते हुए जल का अत्यधिक उपयोग करने वाली ऐसी नई फसलों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिनका लाभ तो कुछ पहले से समृद्ध लोगों तक ही सीमित रहेगा, लेकिन जिनके दुष्परिणाम नीचे गिरने वाले भूजल के रूप में जनसाधारण को भुगतने पड़ेंगे।

इसी तरह औद्योगिक प्रदूषण, कृषि रसायनों का उपयोग, फसल चक्र में होने वाले बदलाव, खनन कार्य- ये सभी वो क्षेत्र है, जिनका पेयजल-उपलब्धता पर असर पड़ सकता है अत: व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि इन विभिन्न क्षेत्र से जुड़ी परियोजनाओं और नए कार्यक्रमों पर जल-उपलब्धताकी दृष्टिसे भी विचार किया जाए और उनके पक्ष में निर्णय लेने से पहले जल-उपलब्धता की स्थिति पर उनका क्या असर होगा, इस प्रश्न को समुचित महत्व दिया जाए। दूसरी ओर जल-नियोजन के कार्य में लगे लोग भीइन क्षेत्र में रहे बदलावों पर नजर रखें और यदि इनकी जल-उपलब्धता पर प्रतिकूल असर पड़ने की संभावना हो तो इस बारे में समय पर चेतावनी देने की भूमिका वे निभाएं।

भारत स्वच्छ और बेहतर पेयजल, खासकर भूजल की गंभीर कमी से जूझ रहा है। देश के 19000 गांव ऐसे है, जहां पीने का साफ पानी नहीं है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर यही स्थिति बनी रही तो आने वाले समय में वह संकट और बढेगा। इसका प्रमुख कारण होगा जल का अत्यधिक दोहन और जलवायु-परिवर्तन है।

केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय के अनुसार विश्व बैंक ने छह हजार करोड़ की योजना को हरी झंडी दे दी है। इसके तहत कुछ चुनिंदा इलाकों में भूजल संरक्षण कार्यक्रम बनाया गया है। 'अटल भूजल योजना' नामक परियोजना इस कार्य में अधिक कारगर हो सकती है। सन् 2022-23 तक इस परियोजना को कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में लागू करने को प्रस्ताव है। देश में भूजल का यहां सर्वाधिक दोहन हुआ है, उनमें से 25 फीसदी इलाके इन राज्यों में है।

जल के महत्व को हमें इसी बात से समझ जाना चाहिए कि हमारी धरती पर अब मात्र 1 प्रतिशत ही स्वच्छ जल बचा है और यदि हम इसे इसी प्रकार से व्यर्थ करते रहे तो भविष्य में पानी के सभी स्त्रोत समाप्त हो सकते हैं। अत: हमें अभी से जागरूक होने की आवश्यकता है और अपनी नैतिक जिम्मेवारी निभाते हुए सभी देशों को जल संचय के लिए गंभीरता पूर्वक प्रयास करना चाहिए।

हौसला

वन-वन की मैं चिड़ियाँ,
वन-वन की मैं चिड़ियाँ।
आई ऊँची उड़ान भरने,
ओ माली मत काट देना मेरी डाली।
किस्मत को है मुझे आजमाना,
जोर लगाकर आगे बढ़ जाना।
वन-वन की मैं बेचारी उड़ना चाहूं डाली-डाली,
माली ने काट डाली पर मैं साहस न हारी।

पर मैं बढ़ती गई रास्ता देखकर,
एक चिंगारी अभी बाकी है, इसे ठण्डा होने नहीं दूंगी।
माली ने काट दी डाली तो क्या हिम्मत तो न हारी,
जब तक साहस है तब तक उड़ती रहूं डाली-डाली
वन-वन की मैं चिड़िया,
वन-वन.....।
मैं जान गई हूं कुछ पाने की, उन सब से मेरी दूरी है,
कुछ करना भी जरूरी है।।

मदीहा मकसूद
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति

डॉ० वीरेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य,
बी.एड. विभाग

पौरुष का उपयोग जब सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यों में नहीं होता है तो वह विलासी और भ्रष्ट हो जाता है। दुर्भाग्य से यही स्थिति भारत के साथ हो गई। भारत सरकार अपने को इतना दुर्बल मानने लगी कि वह शक्ति रहते हुए भी कुछ करने में असमर्थ प्रतीत हो रही थी। भारत की पुरुषार्थी जनता ऐसी सरकार से उब गई थी और संयोगवश उसे नरेन्द्र मोदी के रूप में एक दूरदर्शी एवं कर्मठ नेतृत्व मिला जिसका उसने वरण किया। नरेन्द्र मोदी एक तरफ भारत की दुर्बलता को दूर करने में लगे हैं और दूसरी तरफ भारत को उसके रूप और आकार के अनुसार विश्व के मंच पर उचित स्थान दिलाने के लिए दिन-रात बिना रूके थके अपने प्रयास में लगे हैं। नरेन्द्र मोदी सरकार की साधना के फलस्वरूप विगत पांच वर्षो में भारत अपनी दुर्बलता को परित्याग कर विश्व बिरादरी में हर जगह सम्मान पूर्वक दिखाई पड़ रहा है। एक तरफ पुराने मित्र घनिष्ठता के साथ जुट रहे हैं तो दूसरी तरफ नये मित्र तेजी से बनते जा रहे हैं।

किसी देश की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों के अनुरूप दूसरों देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सैनिक विषय पर पालन की जाने वाली नीतियों का समुच्चय होती है, न तो किसी देश की परिस्थिति एवं न ही दुनिया की परिस्थिति सदैव एक समान रहती है। इसलिए बदलती अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में राष्ट्रीय हितों के दृष्टिकोण से समयानुसार किसी भी देश की विदेश नीति में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि कोई देश न तो किसी का स्थायी मित्र होता है और न ही स्थायी शत्रु। इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में इसे दुनिया में तेजी से उभरती हुई एक शक्ति के तौर पर देखा जाता है। भारत को भी अपने राष्ट्रीय हितों को देखते हुए समय-समय पर अपनी विदेश नीति में परिवर्तन करना पड़ा है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति भारतीय अर्थव्यवस्था के बदलाव के लिहाज से अधिक सफल रही है। अपने कार्यकाल के पहले वर्ष में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 17 देशों में 53 दिन बताए। विदेशी यात्राओं के लिए उनकी आलोचना भी हुई, लेकिन यह बात सत्य है कि जब तक आप किसी देश के राष्ट्राध्यक्ष के पास नहीं जाएंगे तब तक आपके संबंध उससे अच्छे नहीं बन पाएंगे। मोदी द्वारा संसार में भारत के प्रभाव क्षेत्र के विस्तार को लेकर प्रसिद्ध भारतीय अकादमी पत्रकार और विदेश नीति के विश्लेषक डॉ राजा मोहन ने लिखा है कि 'प्रधानमंत्री मोदी की दीर्घकालिक विदेश नीतियों के लक्ष्य तथा उनकी राजनीतिक इच्छाशक्ति ने 2014 के मध्य से मजबूती के साथ भारतीय कूटनीति में असामान्य ऊर्जा भर दी है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि देश को विकास पथ पर ले जाना है तो महाशक्तियों के साथ-साथ पड़ोसी देशों के साथ मधुर संबंध बनाना होगा। इसी दूरगामी नीति के तहत उन्होंने 2014 में प्रधानमंत्री पद के शपथ ग्रहण समारोह में दक्षिण एशियाई देशों के राष्ट्र अध्यक्षों को आमंत्रित किया था। प्रधानमंत्री ने अपनी विदेश यात्राओं की शुरूआत भी भूटान से की। उनकी इस पहल का सकारात्मक परिणाम निकला और पाकिस्तान को छोड़कर सभी दक्षिण एशियाई देशों के साथ भारत के संबंध सुधारे। इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने दुनियाभर में भारत के हितों को आगे बढ़ाने के लिए विदेश यात्राओं की मुहिम शुरू की। चाहे अमेरिका का मैडिसन स्क्वायर हो या ब्रिटेन का वेम्बले स्टेडियम, हर जगह प्रधानमंत्री ने भारत का गौरव बढ़ाया। इस उपलब्धि पर जहां दुनिया भर में भारतीय इतरा रहे हैं, वहीं विरोधी दल के नेताओं ने मोदी की विदेश यात्राओं पर आरोपों की झड़ी लगा दी। कभी कहा गया कि मोदी जनता के पैसे से दुनिया की सैर कर रहे हैं और कभी कहा गया कि वह ढोल-नगाड़ा बजा रहे हैं। किसी ने उन्हें 'एन.आर.आई. प्रधानमंत्री' कहा तो किसी ने संसद में आने के लिए पासपोर्ट देने की मांग उठाई। लेकिन मोदी इन आलोचनाओं से बेफिक्र होकर संबंध सुधार की अपनी मुहिम में लगे रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी विदेश यात्राओं के जरिए निवेशकों-उद्ययोगपतियों को भारत में निवेश करने का निमंत्रण दिया। उन्होंने निवेशकों को किसी भी सूरत में पैसा नहीं डूबने की गारंटी देते हुए खुलकर निवेश करने को कहा। अपनी जापान यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने यहां तक कहा कि हमारे यहां अब रैड टेप नहीं निवेशकों के लिए रेड कार्पेट बिछा है। नरेन्द्र मोदी ने 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' जैसे अभियानों के जरिए भारत को एक ब्रांड के रूप में स्थापित किया, जिससे भारत की दुनिया भर में धाक जमी और निवेशकों का विश्वास लौटा। इन्हीं विदेश यात्राओं का परिणाम है कि विदेशी निवेश में तेजी से बढ़ोतरी हुई और 2015 में भारत दुनिया भर में सबसे अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त करने वाला देश बना।

चीन लंबे समय से भारत को चारों ओर से घेरने की रणनीति

के तहत पाकिस्तान के साथ-साथ श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार, मालदीव में अपनी उपस्थिति बढ़ाने में लगा था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आक्रमण विदेश नीति का परिचय देते हुए चीन को चारों ओर से घेरने के लिए दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ संबंध सुधार को प्राथमिकता दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने म्यांमार, वियतनाम, कंबोडिया, जापान, दक्षिण कोरिया के साथ रिश्तों को एक नया आयाम दिया। चूंकि चीन की आक्रामकता से दक्षिण एशियाई देश चिंतित हैं, इसलिए उन्होंने भारत की संबंध सुधार पहल को हाथों हाथ लिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति की अग्निपरीक्षा तब देखने को मिली जब उड़ी एवं पुलवामा हमले के बाद उन्होंने पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय मंचों पर नए सिरे से घेराबंदी की। उन्होंने पूरी दुनिया का ध्यान इस ओर खींचा कि पाकिस्तान आतंकवाद का निर्यातक देश बन चुका है। पाकिस्तान को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अलग-अलग करने के लिए मोदी ने अपनी विदेश यात्राओं के दौरान अर्जित मधुर संबंधों का लाभ उठाया और इसमें पूर्णत: सफलता प्राप्त की। जो अमेरिका सदैव पाकिस्तान के साथ खड़ा रहता था, उसने साफ-साफ कह दिया कि पाकिस्तान को सीमा पर आतंकवाद पर नकेल कसनी होगी। चीन ने भी संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। इसका परिणाम यह हुआ कि बात-बात में परमाणु हमले की धमकी देने वाला पाकिस्तान रक्षात्मक मुद्रा में आ गया। लेकिन नरेन्द्र मोदी यहीं नहीं रूके। उन्होंने देशभर में उड़ी एवं पुलवामा हमले का जवाब देने की उठ रही जनाकांक्षाओं का ध्यान रखते हुए सेना को खुली छूट दे दी कि वह अपने तरीके से इस हमले का उत्तर दें। जब सेना ने पाकिस्तान से लगी सीमा पार सर्जिकल एवं एयर स्ट्राइकों को अंजाम दिया तब पाकिस्तान स्तब्ध रह गया क्योंकि उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि भारत कभी आक्रमण मुद्रा अपनाएगा। इस हमले के बाद लोगों ने मानना शुरू कर दिया कि मोदी के नेतृत्व में अब भारत के अच्छे दिन और आतंकवाद के बुरे दिन आ गए हैं। नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति की सबसे बड़ी कामयाबी यह है कि पाकिस्तान में घुसकर की गई सर्जिकल एवं एयर स्ट्राइकों पर पूरी दुनिया भारत के साथ खड़ी है।

नरेन्द्र मोदी सरकार की कूटनीतिक कुशलता ने विश्व को आश्ख्वस्त किया है कि धरातल पर भारत में कारोबार करने की स्थिति अब बदल चुकी है। भारत के आंतरिक विकास के लिए बाहरी कारकों को गतिशीलता दी गई है, और इसमें कोई शक नहीं है कि मोदी सरकार ऑनलाइन के जरिए प्रक्रिया को आसान करते हुए एक ही दिन में कारोबार शुरू करवाने की कोशिश कर रही है। ठेके तथा कानून के शासन की शुद्धता को लागू करने पर भी ध्यान दिया जा रहा है। आर्थिक सुधार के एजेंडे को भी सुनियोजित तरीके से लागू करवाने का प्रयास किया जा रहा है। ''नतीजा यही है कि मोदी सरकार की विदेश नीति निश्चित रूप से डॉ. सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के मुकाबले ऊर्जावान रही है। तथा पड़ोस के देशों पर केन्द्रित रही है।

प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व का निर्माण

डॉ० शैलेन्द्र कुमार सिंह
सहायक आचार्य,
बी.एड. विभाग

'व्यक्तित्व, व्यक्ति में उन मनोदैहिक अवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है, जिनके आधार पर व्यक्ति अपने परिवेश के साथ समायोजन स्थापित करता है। -**ऑलपोर्ट**

व्यक्तित्व अंग्रेजी के पर्सनालिटी शब्द का हिन्दी रूपांतरण है, पर्सनालिटी शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द परसोना से हुई है, परसोना का अर्थ होता है नकाब या मुखौटा। जिसका उपयोग यूनानी नाटक में भाग लेने वाले पात्र करते थे, इन मुखौटों को चेहरे पर लगा लेने से यह पता चल जाता था कि नाटक में विभिन्न पात्रों के कार्य कैसे होंगे। शाब्दिक अर्थ में व्यक्तित्व की रूपरेखा में वेशभूषा, पहनावा आदि ही आते हैं। कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व को एक मानसिक संगठन मानते हैं जिसके अंतर्गत बुद्धि कौशल स्वभाव आदि आंतरिक गुण आते हैं। वास्तविक रूप से देखें तो बाह्य और आंतरिक दोनों गुण मिलकर ही व्यक्तित्व को स्पष्ट कर पाते हैं किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें उसके बाह्य रंग रूप, वेशभूषा, चाल ढाल आदि के साथ-साथ उसके आंतरिक गुण स्वभाव, बुद्धि, अभिरूचि, मनोवृति आदि पर भी ध्यान देना होगा। सामान्य भाषा में कह सकते हैं कि व्यक्तित्व को व्यक्ति के बाह्य एवं आंतरिक स्वाभाविक स्थाई गुणों का समन्वय कहा जा सकता है।

हमारा व्यक्तित्व हमें समाज में समन्वय स्थापित करने में सहायक होता है। यदि आपका व्यक्तित्व आकर्षक है, प्रभावशाली है, तो निश्चित तौर पर आप बहुत अच्छे से समाज में समायोजित हो पाएंगे विभिन्न लोग आपसे जुड़ने के लिए स्वयं ही अग्रसर होंगे, बहुत से लोग आपकी सहायता करने के लिए अग्रसर होंगे, आप लोकप्रिय होंगे। ऐसे प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के निर्माण

हेतु हमें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए-

1. **दृढ़ आत्मविश्वास होना चाहिए:** व्यक्ति में दृढ़ आत्मविश्वास का होना सबसे महत्वपूर्ण है, जब तक आप अपनी सोच में और काम करने को उचित ढंग से पूर्ण करने में आत्मविश्वास नहीं दिखाएंगे तो आप उस कार्य को या तो पूर्ण नहीं कर पाएंगे, अगर जैसे तैसे पूर्ण कर भी लिया तो उचित एंग से या सही ढंग से पूर्ण नहीं हो पाएगा। निश्चित तौर पर हमें अपने पर विश्वास दिखाना चाहिए, जिससे हम अपनी पूरी क्षमता और योग्यताओं का उपयोग करके विभिन्न कार्यों को निष्पादित कर पाएंगे। इस प्रकार हमें अपना आत्मविश्वास दृढ़ रखते हुए सभी कार्यों को उत्साहपूर्वक पूर्ण करना चाहिए, जिससे हमारी छवि उत्तम ढंग से कार्य निष्पादित करने वाली होगी।

2. **सभी के साथ विनम्र एवं शिष्ट व्यवहार रखें:** हमें अपना व्यवहार सभी के प्रति सदैव विनम्र और शिष्ट रखना चाहिए। जब हम बाल्यावस्था में होते है तब हमें सिखाया जाता है कि अपनों से आयु में बड़े व्यक्तियों से ऐसे बात करनी है और ऐसे व्यवहार करना है, अपने से छोटों से ऐसे बात करनी और ऐसे व्यवहार करना है। ऐसे में हम कई बार दुविधा अथवा आवेश में विपरीत व्यवहार अथवा उग्र व्यवहार कर देते हैं, जो सर्वथा अस्वीकार है। तो हम इसमें ना पड़े, हमें हमारा व्यवहार सभी के लिए विनम्र और शिष्ट रखना चाहिए। सामान्य परिस्थितियों में सदैव हंसते और मुस्कराते रहें, हमारी मुस्कुराहट अन्य व्यक्तियों को भी ऊर्जावान बनाती है। ये सभी आदतें हमें निश्चित और अत्यंत आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी बनाएगी।

3. **जीवन में सदैव सकारात्मक रहे:** सकारात्मक सोच रखें, सकारात्मक कार्य करें, सकारात्मक विचारों को ही जीवन में स्थान दें। कई बार छोटी-छोटी सी बातें हमें नकारात्मकता की ओर ले जाती है, ऐसे में हम अवसाद से घिरा सकते हैं और अपने जीवन के उद्देश्यों से भटक सकते हैं। हमें सदैव सकारात्मक रहना है और दूसरों को भी सकारात्मक सोचने के लिए प्रेरित करना है।

4. **सहनशीलता एवं धैर्य गुणों को अंगीकृत करें:** हम सभी में सहनशीलता और धैर्य, इन दोनों गुणों का होना बहुत आवश्यक है। आजकल जरा सा भी किसी ने हमारे बारे में गलत कह दिया तो हम अत्यंत परेशान हो जाते है और उस व्यक्ति से प्रतिशोध लेने के लिए उग्र हो जाते है, यह भाव हमें दयनीय स्थिति में ला देता है। बहुत से लोग ईर्ष्यावश हमारे बारे में दूसरों से अप्रिय कहते रहते हैं, अगर हम सभी से प्रतिशोध लेने में लग जाएंगे तो अत्यंत कठिन होगा, हम अपने तात्कालिक उद्देश्यों से और अपने जीवन से भटक जाएंगे। बहुत आवश्यक नहीं है कि हर चीज पर अपना जवाब दें कभी-कभी अनसुना कर देना भी हमारे लिए बेहतर रहता है, हम में इस स्तर की सहनशीलता होनी चाहिए। कभी-कभी हम किसी समस्या का समाधान करने में असफल हो जाते हैं और अपना धैर्य खो देते हैं जिससे समस्या और विकराल हो सकती है या समस्या का हल मिलने में देरी हो सकती है। हमें सदैव धैर्यपूर्वक पहले प्रयास में असफल होने के कारणों को समझना चाहिए और पुनः प्रयास करना चाहिए। निश्चित तौर पर अगर आप धैर्यवान हैं तो किसी न किसी प्रयास में अवश्य सफल हो जाएंगे। ये गुण आपके व्यक्तित्व को सरल और सहज बनाने के लिए आवश्यक है।

5. **वाणी मधुर एवं सुस्पष्ट बनाएं:** जब हम किसी से वार्तालाप कर रहे हो तब हमें परिस्थितियों के अनुरूप ही वाणी की तीव्रता को रखना चाहिए, उचित एवं सार्थक शब्दों का चयन करना चाहिए, अप्रिय एवं अपशब्दों के चयन से बचना चाहिए। हमें सामने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुनने की आदत डालनी चाहिए, तभी हम उसकी बात का विश्लेषण कर पाएंगे और सार्थक उत्तर दे पाएंगे। बोलते समय हमें शुद्ध उच्चारण करना चाहिए और आवश्यकतानुसार विराम भी देना चाहिए। हमें दूसरों के साथ वार्तालाप करते हुए अपने हाव भाव भी परिस्थितियों के अनुरूप रखने चाहिए। इन सभी आदतों के अंगीकृत करने से हम जो भी वार्तालाप करेंगे, वो सटीक, सार्थक एवं सुस्पष्ट होगा।

6. **अपनी मौलिकता बनाए रखें:** हमारे लिए मौलिकता बहुत आवश्यक है, हम अपनी रूचि एवं स्वभाव के आधार पर कोई कार्य कर रहे हैं, तो वह अपने आप में सबसे अलग होगा और अच्छा भी होगा। वहीं दूसरी ओर यदि हम किसी व्यक्ति की नकल करना चाह रहे हैं तो निश्चित तौर पर हम उसकी नकल करते ही रह जाएंगे और अपनी मौलिकता को नष्ट कर देंगे। हमेशा आपकी तुलना उस से ही होती रहेगी जिसकी आप नकल कर रहे है। अपनी मौलिकता को सदैव बनाए रखें, जिससे आपका व्यक्तित्व भी अद्वितीय बने।

7. **परिस्थितियों के अनुरूप पहनावा होना चाहिए:** हमारा पहनावा भी बहुत महत्वपूर्ण है, हम यदि समय अथवा कार्य विशेष के अनुरूप साफ सुथरी पोशाक को धारण करेंगे तो निश्चित तौर पर हमें सराहा जाएगा। पोशाक धारण समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम कहां जा रहे हैं? किस प्रकार के कार्यक्रम में जा रहे हैं? और उसके अनुरूप कौन सी पोशाक धारण करनी है? उसका रंग कैसा हो? इन सभी के अनुरूप पोशाक का चयन बहुत महत्वपूर्ण है। हमें सदैव ही साफ सुथरी और परिस्थितियों के अनुकूल पोशाक धारण करनी चाहिए।

इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए हम अपने व्यवहार में परिवर्तन लाएंगे तो हम अपने व्यक्तित्व को अधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली बना सकते है।

बजट के विभिन्न स्वरूप

डॉ. तरूण श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
वाणिज्य संकाय

बजट सरकार की राजस्व नीति का एक व्यावहारिक रूप है, हमारे यहाँ बजट सामान्य तौर पर आगामी वित्तीय वर्ष हेतु सरकार के वार्षिक आय और व्यय का लेखा-जोखा सम्बन्धी दस्तावेज होता है जिसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 में की गई व्यवस्था के अनुपालन में सरकार द्वारा प्रतिवर्ष संसद के समक्ष प्रस्तुत किया जाना अनिवार्य है, लेकिन कभी-कभी कुछ विशिष्ट राजनैतिक परिस्थितियों और असामान्य घटनाओं के घटित होने पर पूरा बजट फरवरी में प्रस्तुत करने के स्थान पर उस समय एक अंतरिम बजट प्रस्तुत अथवा लेखानुदान माँगे पास कराकर आवश्यक सरकारी खर्चो हेतु व्यवस्था सुनिश्चित कर ली जाती है और पूर्ण वार्षिक बजट कुछ माह बाद उपयुक्त समय पर प्रस्तुत किया जाता है।

बजट सामान्यतः फ्रांसीसी शब्द बूजे ( ) का संशोधित रूप है जिसका अर्थ होता है चमड़े का एक छोटा बैग या थैला। सन् 1733 में इंग्लैण्ड में इस शब्द का प्रयोग जादू के पिटारे के अर्थ में किया गया था। इस सम्बन्ध में मूल तत्व यह था कि सभी देशों में बजट में निहित तत्वों को उस समय तक गुप्त रखने की परिपार्टी रही हे जब तक कि उसे देश की संसद के समक्ष प्रस्तुत न कर दिया जाए। बजट को संसद के सम्मुख प्रस्तुत होने से पूर्व बजट प्रस्तावों की जानकारी केवल वित्त मंत्री को होती है तथा बजट खुलने पर सामान्य चर्चा का विषय बन जाता है।

बजट के कुछ प्रमुख रूप

समय के साथ-साथ बदलती अर्थव्यवस्था में बदलते बजट की भी आवश्यकता होती है, इन्हीं का कुछ रूप नीचे प्रस्तुत है-

आम बजट

आम बजट का मुख्य उद्देश्य विधायिका का कार्यपालिका स्तर पर वित्तीय नियंत्रण स्थापित करना है। इसके अनुसार बजट को मुख्यतः वेतन, मजदूरी, यात्रा, मशीनें आदि के रूप में किए जाने वाले व्यय तथा विभिन्न मदों में होने वाली आय को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें किस क्षेत्र में कितना धन व्यय करना है उसी का उल्लेख होता था किन्तु इस व्यय के खर्च से क्या-क्या परिणाम प्राप्त करने हैं उनका ब्यौरा नहीं दिया जाता था। इस प्रकार के बजट का मुख्य उद्देश्य सरकारी खर्चो पर नियंत्रण करना था न कि तीव्रगति से विकास तथा विकास कार्यो को अंजाम देना।

निष्पादन बजट

इस बजट को सर्वप्रथम हूपर आयोग (1949) की अनुशंसा पर अमरीका में 1951 में कृषि क्षेत्र में अपनाया गया। एक परम्परागत बजट प्रणाली में बजट के केवल वित्तीय पक्षों को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें विभिन्न मदों की लागतों और लाभों पर कोई विचार नहीं किया जाता है। इन सूचनाओं का अभाव विचार-विमर्श की दृष्टि से भी बजट की उपयोगिता को कम कर देता है। निष्पादन बजट प्रणाली परम्परागत बजट की कमी को दूर करती है। इस प्रकार के बजट में प्रत्येक मद का वर्गीकरण उसकी उपयोगिता के आधार पर किया जा सकता है, ताकि लागतों और लाभों का मूल्यांकन किया जा सके। इससे बजट में सम्मिलित प्रत्येक परियोजना तथा कार्यक्रम के निष्पादन का आंकलन कर सकने में सहायता होती है। सामान्यतः निष्पादन बजट को उपलब्धि बजट कहा जाता है। इसमें उपलब्धि के साधनों से बल हटाकर स्वयं उपलब्धियों पर बल दिया जाता है। इसका मुख्य केन्द्र बिन्दु वे उद्देश्य हैं जिनको सरकार पूरा करना चाहती है। निष्पादन बजट मूलतः लक्ष्योन्मुखी तथा उद्देश्यपरक प्रणाली पर आधारित होता है जिसमें केवल संगठनात्मक आय-व्यय का हिसाब ही नहीं बल्कि प्राप्त निष्कर्षो या कार्य निष्पादन को मूल्यांकन का आधार बनाया जाता है।

जीरोबेस बजट

अमरीका के टेक्सास इन्स्टूमेंट के बजट निदेशक पीटर ए, पायर (1970) ने जीरोबेस बजट प्रणाली में संशोधन किए तथा इसके लिए शून्य आधारित (जीरोबेस) शब्दों का प्रयोग किया। अतः इन्हें ही इसका जनक माना जाता है। इस प्रणाली को सर्वप्रथम 1973 में अमरीका के जॉर्जिया प्रति के बजट में तत्कालीन गवर्नर जिमी कार्टर द्वारा अपनाया गया तथा बाद में 1979 में इसे अमरीका के राष्ट्रीय बजट से राष्ट्रपति जिमी कार्टर द्वारा अपनाया गया। जीरोबे बजट के अपनाए जाने के दो कारण नजर आते हैं-

- ❖ अनेक देशों के बजट में निरन्तर पाया जाने वाला घाटा।
- ❖ निष्पादन बजट प्रणाली के क्रियान्वयन का अनुभाव।

इस स्थिति ने इस बात की आवश्यकता उत्पन्न की थी कि व्ययों पर कटौती करके घाटों पर अंकुश लगाना आवश्यक है। शून्य आधारीय बजट प्रणाली व्यय पर अंकुश लगाने की एक तार्किक प्रणाली है। इस प्रणाली में विगत व्ययों को विचार कर कोई आधार नहीं बनाया जाता है। विगत व्यय को भावी व्यय के लिए तर्क के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता।

आउटकम बजट

भारत में परिणाम बजट की संकल्पना का सुझाव प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा दिया गया था। इसके लिए योजना आधार द्वारा

एक प्रणाली विकसित की गई, ताकि परिणाम बजट को अपनाया जा सके। 25 अगस्त 2005 को वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम द्वारा 723 पृष्ठों का प्रथम परिणाम बजट प्रस्तुत करते हुए यह कहा गया था कि परिणाम बजट एक व्यय पूर्व यन्त्र है तथा अब मंत्रालयों व विभागों द्वारा अपने व्ययों को परिणामों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाएगा जहाँ बजट पूर्व अवधि में भौतिक लक्ष्यों को वित्तीय आकारों में परिवर्तित किया जाता है, वहीं आउटक्रम बजट में उन्हें पुन: भौतिक आकारों में परिवर्तित किया जाता है, जोकि कोषों के वास्तविक निर्धारित आकार को ध्यान में रखकर किया जाता है। आउटकम बजट के अन्तर्गत एक वित्तीय वर्ष के लिए किसी मंत्रालय अथवा विभाग को आबंटित किए गए बजट में अनुश्रवण तथा मूल्यांकन किए जा सकने वाले भौतिक लक्ष्यों का निर्धारण इस उद्देश्य से किया जाता है कि बजट में क्रियान्वयन की गुणवत्ता को परखा जाना सम्भव हो सके। इस आउटक्रम बजट में 44 मंत्रालयों तथा उनसे सम्बन्धित विभागों के लिए वित्तीय संसाधन के आबंटन के साथ-साथ उन लक्ष्यों का निर्धारण भी किया गया जिन्हें इस वर्ष के बजट का उपयोग करने पर प्राप्त किया जाना आवश्यक समझा गया। आउटकम बजट में तकनीकी व परमाणु ऊर्जा, सुरक्षा, विदेशी मामलों व संसदीय मामलों के मंत्रालयों सहित कुल नौ मंत्रालयों को शामिल नहीं किया गया। 2005-06 के बजट में इसका प्रयोग अभ्यास के तौर पर केवल योजनागत बजट के लिए ही किया गया, लेकिन भविष्य में इसे योजनागत और गैर योजनागत दोनों ही मदों में करने का सरकार का इरादा है। आउटकम बजट आम बजट की तुलना में एक कठिन प्रक्रिया है जिसमें वित्तीय प्रावधानों के परिणामों के सन्दर्भ में देखा जाना होता है।

जेंडर बजट (लिंग आधारित)

केन्द्रीय वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम् द्वारा वर्ष 2004-05 के बजट में प्रारम्भ किया गया यह एक नया स्वरूप है। जिसने देश में पहली बार लैंगिक बजट की संकल्पना में लगभग क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। 'लैंगिक बजट' बजट आंकड़ों के प्रस्तुतीकरण की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें सुनिश्चित लैंगिक आबंटन लैंगिक संवेदनशीलताओं को व्यक्त करते हैं। लैंगिक बजट प्रणाली का आवश्यक उद्देश्य बजट में निर्धारित लक्ष्यों के अन्तर्गत लैंगिक समानता व लैंगिक समता प्राप्त करना है जिसके लिए बजट में ऐसे किसी भी पक्षपात अथवा अवांछित आधार को समाप्त किया जाता है, जो महिलाओं के हितों के विरूद्ध कार्य कर रहे हैं। लैंगिक बजट निर्धारित दिशा-निर्देशों तथा आँकड़ों के संग्रह व विश्लेषण के द्वारा महिलाओं के लिए अधिकतम लाभ सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखता है जिसे बजट के विभिन्न भागों के द्वारा व्यक्त किया जाता है जैसे करों व शुल्कों का आरोपण, प्रयोग शुल्क, व्यय का आकार, विशिष्ट कार्यक्रमों व परियोजनाओं का प्रभाव आदि। लैंगिक बजट का मूल उद्देश्य एक और लैंगिक विशेषता को दूर करना है तो दूसरी ओर लैंगिक सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करना भी है। वर्तमान में विश्व में 62 से अधिक देशों में लैंगिक बजट प्रणाली अपनाई गई है जिनमें एशिया, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा आदि (अमरीका में नहीं) शामिल है। भारत 60वां राष्ट्र है जिसने यह व्यवस्था अपनाई।

बजट वास्तव में सरकार की आर्थिक नीतियों का दर्पण होता हैं बजट देश की समृद्धि को भी दर्शाता है बशर्ते कि प्रस्तुत किया जाने वाला बजट एक अच्छा बजट हो। भारत में अनेक प्रकार की बजटीय अवधारणा की संकल्पना ने समय के साथ-साथ जन्म लिया है, कुछ प्रचलित हुई तो कुछ नहीं। बजट की उपयोगिता उसके ठीक ढंग से प्रयोग में लाए जाने पर निर्भर करती है।

" आखिरी हीरा "

आलोक कुमार तिवारी
सहायक आचार्य एवं
प्रभारी, हिन्दी विभाग

एक दिन एक मछुवारा मछली पकड़ने के लिए सुबह बहुत जल्दी निकल गया। अंधेरा अधिक होने के कारण वह नदी तट पर ही सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगा।

प्रतीक्षा के दौरान ही वह नदी तट से कुछ पत्थर जैसा उठा-उठाकर नदी में फेंक रहा था और इसी तरह वह अपना समय काट रहा था। जैसे ही सूरज की पहली किरण पृथ्वी पर पड़ी। मछुवारा यह देखकर एकाएक आश्चर्य में पड़ गया कि उसके हाथ में जो आखिरी पत्थर जैसी वस्तु फेंकने के लिए है वह हीरा है।

अब उसे इस बात का बड़ा मलाल हुआ कि उसने अंधकार के कारण बहुत सारे हीरे नदी में फेंक दिए।

वास्तव में ये हीरे हमारा बीता समय हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट इत्यादि है। हम जिस कक्षा में पढ़ रहे हैं वही आखिरी हीरा है यदि इसे भी हमने अज्ञान रूपी अंधेरे के कारण नदी में फेंक (बर्बाद) कर दिया तो हमारे पास मछली पकड़ने (दर-दर भटकने) के अलावा कोई विकल्प भी न बचेगा।

डिजिटल मुद्रा की संभावनाएं एवं विकास

हिमांशु कुमार
सहायक आचार्य एवं प्रभारी
अर्थशास्त्र, विभाग

भारत एक उभरती अर्थव्यवस्था के रूप तीव्र विकास कर रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरी है। किसी देश के विकास में तकनीक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। 21वीं शताब्दी में सभी देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने पर अधिक बल दे रहे हैं। अर्थव्यवस्थाओं की उच्च विकास दर के लिए उच्च स्तर की तकनीकी और सुरक्षित डाटा, बड़े सर्वर नेटवर्क की आवश्यकता होती है। पिछले कुछ दशकों ने इंटरनेट के विकास से भारत में डिजिटल साक्षरता में तीव्र वृद्धि देखी गई है। इंटरनेट के विकास से भारत जैसे विकासशील देशों में ऑनलाइन भुगतान में तीव्र वृद्धि देखी गई है। भारत में वर्ष 2022 में यूपीआई लेनदेन की मात्रा एवं मूल्य में 118% वृद्धि दर्ज की गई है जो एक महत्वपूर्ण वृद्धि है। इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग से कुछ क्रिप्टोकरंसी जैसे बिटकॉइन एथिरियम आदि मुद्राओं के लेनदेन में तीव्र वृद्धि देखी गई है। ये मुद्राएं विकेंद्रीकृत माध्यम से संचालित होती है जो ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित है। इसलिए इन मुद्राओं को ट्रैक कर पाना मुश्किल होता है। इन मुद्राओं के प्रयोग से कालेधन में वृद्धि देखी गई है। जिसके कारण भारत सरकार एवं आरबीआई के द्वारा बजट 2020 में बिटकॉइन को प्रतिबंधित करने का प्रयास भी किया गया। भारतीय रिजर्व बैंक को भी अपनी सार्वभौमिक डिजिटल मुद्रा की आवश्यकता महसूस हुई है। जिसके प्रयोग से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भुगतान एवं लेनदेन सरलता से किया जा सकता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए डिजिटल मुद्रा की आवश्यकता

5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था:- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण में भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था में शामिल करने एवं 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था 3.24 ट्रिलियन डॉलर की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 5 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए डिजिटल मुद्रा महत्वपूर्ण भूमिका सकती, क्योंकि इसके माध्यम से आर्थिक गतिविधियां एवं व्यापारिक भुगतान, निवेशों को आसानी से किया जा सकता है। जिससे आर्थिक गतिविधियां तेज होगी। वैश्वीकरण के कारण डिजिटल मुद्रा अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण कारक होगी।

संरचनात्मक विकास-मुद्रा के विकास को अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक विकास के रूप देखा जाता है। किसी अर्थव्यवस्था के विकास हेतु मुद्रा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही साथ संरचनात्मक कारकों को प्रोत्साहित भी करती है जैसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, शेयर बाजारों में विदेशी निवेश आदि। अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों (कृषि, औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र) में सतत वृद्धि के लिए संरचनात्मक विकास आवश्यक होता है। देश के संरचनात्मक विकास के लिए मौद्रिक नीति का विशेष महत्व होता हैं डिजिटल मुद्रा उसी मौद्रिक नीति का ही एक भाग है। यदि किसी अर्थव्यवस्था की मौद्रिक नीति मजबूत है तो अर्थव्यवस्था में होने वाला विकास सतत एवं तीव्र गति से होगा।

महत्व

डिजिटल मुद्रा के प्रयोग से कालेधन में कमी आएगी क्योंकि भुगतानों में पारदर्शिता आएगी साथ ही प्रत्यक्ष कर में भी वृद्धि होगी।

भारत अपने रणनीतिक व्यापारी देशों के साथ अपनी डिजिटल मुद्रा को एक अधिभारी मुद्रा के रूप में स्थापित कर सकता है जिससे डॉलर पर निर्भरता कम होगी।

डिजिटल मुद्रा के आने से नोटों को छापने में लगने वाली लागत कम हो जाएगी। ''आरबीआई की रिपोर्ट में 100 रूपये के नोट को छापने में 15 से 17 रूपये की लागत आती है, तथा ये नोट 4-5 वर्ष तक ही चल पाते हैं।'' जाली नोट और कटे फटे नोटों की समस्या दूर हो जाएगी। इससे धन एवं समय की बचत होगी तथा मुद्रा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की समस्या तथा भंडारण की समस्या का समाधान हो जाएगा।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भुगतानों को बेहद आसानी से किया जा सकता है, रियल टाइम ट्रांजैक्शन के कारण दूसरे देश की मुद्रा पर निर्भरता भी कम होगी।

विदेशों में रहने वाले भारतीय अपने परिवार को डिजिटल मुद्रा के माध्यम से सहजता से पैसे का भुगतान कर सकेंगे, क्योंकि भारत विश्व में सबसे अधिक प्रेषण ($82 बिलियन अमेरिकी डॉलर) प्राप्त करने वाला देश है।

चुनौतियां

डिजिटल मुद्रा के सामने सबसे बड़ी चुनौती इसके डाटा संरक्षण सुरक्षित सर्वर की है। भारत में डेटा संरक्षण से संबंधित कोई कानूनी प्रावधान नहीं है। साथ ही सुरक्षित डेटा सेंटर का भी अभाव है। हाल ही में भारत के प्रतिष्ठित मेडिकल अस्पताल एम्स के सर्वर को डाउन कर दिया गया, जिसके कारण लाखो मरीजों की जान को खतरा उत्पन्न हो गया। अत: सुरक्षित डाटा संरक्षण केंद्र एवं साइबर सिक्योर सर्वर बहुत आवश्यक है। अन्यथा किसी साइबर अटैक के माध्यम से इसका दुरुपयोग किया जा सकता है।

वर्तमान समय में भारत में डिजिटल साक्षरता कम है ग्रामीण

क्षेत्रों में बिजली एवं इंटरनेट की समस्याएं आम बात है वहां पर डिजिटल मुद्रा का संचालन बेहद कठिन होगा।

डिजिटल मुद्रा के लिए भारत सरकार को बड़े सर्वर की आवश्यकता पड़ेगी जिसके माध्यम से डिजिटल मुद्रा का संचालन और नियंत्रण किया जा सकेगा जो बहुत सुरक्षित भी होना आवश्यक है।

तकनीक मनुष्य के लिए वरदान एवं अभिशाप दोनों रूपों में देखी जाती है। तकनीक मानव जीवन के लिए इतनी महत्वपूर्ण हो गई है कि तकनीक के बिना आधुनिक मानव की कल्पना करना बेहद मुश्किल है। इसके माध्यम से अनेक सुविधाएं प्राप्त की जा सकती हैं डिजिटल मुद्रा इन सुविधाओं में से एक है। इसके प्रयोग से मानव कल्याण में वृद्धि की जा सकती है। अत: यह कहा जा सकता है कि तकनीक के दो पहलू है जिसका प्रयोग लाभ एवं दुरुपयोग नाश के लिए किया जा सकता है।

हमारे देश की मूल समस्याः सृजनात्मकता का अभाव

अनिल कुमार
सहायक आचार्य एवं
प्रभारी,स.शास्त्र विभाग

हमारे देश में गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी, नारी शोषण, इत्यादि बहुत सी समस्याएं हैं, लेकिन इन समस्याओं की जड़ क्या है, ये समस्याऐं क्यो है? मुझे यकीन है जब आप छोटे थे तो आपने सुना होगा किआप इस देश के भविष्य है। जो कल इस देश का भविष्य होगा वह आज कहाँ है। वह स्कूलों में है, वह कॉलेजों में है, वह विश्वविद्यालय में है, अब मैं आपको बताता हूँ इन कॉलेजों में स्कूलों में विश्वविद्यालयों में हो क्या रहा है, जबकि मैं स्वयं भी, इसी व्यवस्था का एक हिस्सा हूँ मैंने अपने जीवन में जिन बातों को महसूस किया मैं वही विचार रख रहा हूँ, मैंने विभिन्न देशों के बच्चों से बात की। बात के बाद मेरा जो विश्लेषण है वह यह है कि आज भारत के सबसे बड़े स्कूल के बच्चे या 98% अंक पाने वाले बच्चे से बात करें और उससे पूछें, बेटा आर्गेनिक कैमिस्ट्री क्या है, वह सब बता देगा, आप उससे पूछो केलकुलस बताओ वह भी सब बता देगा आप उससे पूछो बेटा शाहरूख खान के बारे में बताओ वह यह भी बता देगा कि वह एक अभिनेता है, वह नाचता है, आप उससे क्रिकेट या फुटबॉल के बारे में पूछेंगे वह यह भी बता देगा की कौन सा खिलाड़ी किस टीम से खेलता है और उसके कोच का क्या नाम है। फिर उससे आप यह पूछिये, बेटा आप पूरे जीवन क्या करोगे, वह आपको दो लाईन नहीं बता पायेगा, तो यह बच्चा जो अपने बारे में सोचने समझने के काबिल नहीं रहा वह देश और भविष्य के बारे में क्या सोचेगा। मैं आपको, IIT, IAS, NEET प्रवेश परीक्षा का उदाहरण देता हूँ, लाखो लोग इन प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करते है, लेकिन सफलता कुछ ही बच्चों को मिलती है। इन परीक्षाओं की तैयारियों को करने के लिए बच्चों को, कोटा, राजस्थान दिल्ली, इलाहाबाद जैसे स्थानों पर भेजा जाता है, कुछ बच्चे तो सफल होते है लेकिन बाकी अवसाद का शिकार होते है, और अपने माता-पिता, समाज का वह दवाब झेल नहीं पाते, तो आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते है, और ऐसे भी उदाहरण देखने को मिलते हैं, बहुत से बच्चे इन परीक्षाओं को सफलतापूर्वक पास भी कर लेते है, लेकिन कुछ समय बाद उन्हें एहसास होता है, कि मुझे तो डॉक्टर नहीं बनना था मुझे तो ब्यूरोक्रेट बनना था, मुझे तो इन्जीनियर बनना था, यदि आपको डॉक्टर इंजीनियर, मैनेजर बनना ही नहीं था तो इतनी मेहनत क्यों की मैं एक दुख की बात बताता हूँ कि जितने लोग तैयारी करते है उनमें से भी केवल 1% ही सफल होते है, बाकी 99% बच्चे अवसाद के शिकार हो जाते है। अब इस बात पर गौर करते है ऐसा क्यों है, हमारे बच्चे जो भारत के सबसे बढ़िया स्कूलों में पढ़ते है, बहुत ज्यादा अंक लाते है। वो भी यह सोच समझ नहीं सकते कि उन्हें जीवन में क्या करना है। क्या यह बच्चों की गलती है? क्या यह माता-पिता की गलती है? या, स्कूल विद्यालयों की गलती है तो मेरा उत्तर है यह तीनों में से किसी की गलती नहीं है। आपने बोला बेटा मेहनत करो पढ़ाई करो उसने मेहनत की पढ़ाई की अब माता-पिता की बात करते हैं। वे अपनी क्षमता से अधिक अपने बच्चों के लिए करना चाहते हैं। वह भूखा रहकर भी अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में भेजता है। क्योंकि वे चीजे जो वह अपने बच्चों को नहीं दे सकता वह उन्हें स्कूल उपलब्ध कराये। अब बात करतेहै स्कूलों की तो स्कूल बंधे हुए है। एक एजुकेशन सिस्टम से, एजुकेशन सिस्टम बोलता है आप उन्हें मेहनत कराओ, परीक्षा में अच्छे नम्बर ले कर आओ। विद्यालय यह कर रहे है तो समस्या कहाँ है।.....समस्या है हमारी शिक्षा व्यवस्था में जब अंग्रेज भारत में आये तो उन्होंने बोला हम भारत की शिक्षा व्यवस्था को खत्म कर देंगे हम ऐसी शिक्षा व्यवस्था बनायेंगे जो बाबू पैदा करेंगी और आजादी के 75 साल बाद भी हम अब भी बाबू पैदा कर रहे हैं, यह बाबूवाली मानसिकता ही तो है, हमारे बच्चों को दुनिया भर का ज्ञान है लेकिन वे जीवन भर क्या करेंगे इसके बारे में उन्हें कुछ नहीं पता इसे ही सृजनात्मकता का अभाव कहते हैं, प्रश्न

है यह समस्या सुलझेगी कैसे यह तभी सुलझेगी जब हमारी शिक्षा व्यवस्था परिवर्तित होगी हमारे नेताओं को भली-भांति पता है कि हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को बदलने की आवश्यकता है हमारी शिक्षा व्यवस्था क्लर्क पैदा कर रही है। इसमें इनोवेशन का अभाव है इस व्यवस्था को बदलने की आवश्यकता है, महात्मा गाँधी ने भी, सृजनात्मकता पर ही बल दिया था लेकिन आप इस बात पर गौर करें शिक्षा व्यवस्था इसलिए परिवर्तित नहीं होती यदि लोग सोचने लगेंगे तो लोग सवाल पूछेंगे तो जातिवाद धर्म के नाम पर वोटिंग नहीं करेंगे वो अपराधियों को स्वीकार नहीं करेंगे वो मुद्दों की बात करेंगे। हमारी राजनीति यह नहीं चाहती तो वह चाहती है सारे वैज्ञानिक अविष्कार और बड़े-बड़े वैज्ञानिक विदेशी धरती पर ही क्यों हुए एक भी चीज का नाम बता दो जिसका अविष्कार भारत में हुआ और वह विश्व प्रसिद्ध हो, ऑकड़े बताते है कि हम आत्मनिर्भर होने के स्थान पर हमारी निर्भरता विदेशो पर बढ़ती जा रही है, हमारे देश में जो अच्छी प्रतिभा होती भी है तो वे विदेश चले जाते है, आखिर प्रतिभा पलायन क्यों हो रहा है, भारत एवं चीन लगभग एक साथ गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुए आज चाइना की अर्थव्यवस्था कहा है और हमारी कहा है, जबकि प्राचीन समय में हमारी सिंधू सभ्यता का विश्व में लोहा माना जाता था, लेकिन हम आज भी बाबू वाली व्यवस्था को ही जी रहे है। हममे रिस्क उठाने की क्षमता का अभाव सा है। यह सब कमी हमारी शिक्षा व्यवस्था की है, इसमें सृजनात्मकता का अभाव है यह डिग्री तो देती है, रोजगार नहीं देती, हमारे बच्चों में स्वतंत्र सोच पैदा नहीं करती हमें उनमें स्वतंत्र सोच पैदा करनी है, ताकि वह रट्टा विद्या को छोड़कर, कुछ इनोवेटिव करे इसके लिए हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में बड़े स्तर पर सुधार करने होंगे, हमारी सरकार की नई शिक्षा नीति 2020, एक स्वागत योग्य कदम है लेकिन अभी भी हमारी सरकार व समाज को बहुत कुछ करना बाकी है, हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो कि हम बच्चों में आत्मबल पैदा करे, उनमें स्वतंत्र सोच का विकास हो। जहाँ अमेरिका, चीन, जापान, साउथ कोरिया अपनी जी.डी.पी. का 3.5 से 4.8% तक यहां तक कि ताइवान जैसा छोटा देश अपनी कुल जी.डी.पी. का 36% हिस्सा शोध एवं विकास कार्यो पर करता है वहीं भारत का हिस्सा मात्र 1.3% ही है, जिसे हमारी सरकार को देखना होगा कि वह उस अवसंरचना का निर्माण करे जिससे अनुसंधान कार्यों को बढ़ावा मिले, जिससे हमारा देश विकासशील से विकसित देशों की कतार में प्रथम स्थान पर हो मैं इसी उम्मीद के साथ अपनी बात को विराम देता हूँ कि हमारे बच्चों में सृजनात्मकता का विकास हो हमारे बच्चे स्वतंत्र सोच के हों। वे अपने बारे में अपने देश के बारे में सब कुछ जाने तभी वे देश के भविष्य बन सकते हैं, और इस देश को विकास के शिखर पर ले जा सकते हैं, क्योंकि हमारे देश के बच्चों के हाथों में ही हमारे देश का उज्ज्वल भविष्य है।

स्टूडेण्ट शब्द का विश्लेषण

S- यह Student शब्द का प्रथम वर्ण है। इस वर्ण से Social work शब्द बनता है। जिसका अर्थ है सामाजिक भलाई। अत: प्रत्येक विद्यार्थी को समाज की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए।

T- यह Student शब्द का दूसरा वर्ण है। इस वर्ण से Truth शब्द बनता है। जिसका अर्थ है सच्चाई अर्थात प्रत्येक विद्यार्थी को हमेशा सच बोलना चाहिए।

U- यह Student शब्द का तीसरा वर्ण है। इस वर्ण से Understanding शब्द बनता है। जिसका अर्थ है समझदारी। अत: प्रत्येक विद्यार्थी को समझदारी से कार्य करना चाहिए।

D- यह Student शब्द का चौथा वर्ण है। इस वर्ण से Discipline शब्द बनता है। जिसका अर्थ है अनुशासन, जो कि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है।

E- यह Student शब्द का पांचवां वर्ण है। इस वर्ण से Education शब्द बनता है। जिसका अर्थ है शिक्षा। अत: प्रत्येक विद्याथी को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

N- यह Student शब्द का छठा वर्ण है। इस वर्ण से Natural शब्द बनता है। जिसका अर्थ है प्राकृतिक। अत: प्रत्येक विद्यार्थी का व्यवहार Natural होना चाहिए न कि Artificial।

T- यह Student शब्द का सांतवां वर्ण है। इस वर्ण से Try शब्द बनता है। जिसका अर्थ है कोशिश करना। अत: विद्यार्थी को कठिन से कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए।

हर्षित शर्मा
बी.सी.ए. (प्रथम वर्ष)

सफल बिजनेस पर्सन बनने के लिए जरूरी 5 स्किल्स

दुनिया में आज कई बड़े उद्यमी है जिन्होंने अपनी शुरूवात बहुत छोटे स्तर से की थी उनकी सफलता एक जादू की तरह लगती है, पर जादू कुछ नहीं होता।

क्या आप जानना चाहते हैं वो कौन सी स्किल्स है जिनके बल पर आप भी एक सफल उद्यमी, बिजनेस पर्सन या आन्त्रप्रेन्योर बन सकते हैं?

सफल बिजनेस पर्सन बनने के लिए जरूरी 5 स्किल्स

सभी व्यापार अंतत लोगों से सम्बन्धित होते है, और लोगों द्वारा लोगों के लिए किए जाते हैं।

किसी आंत्रप्रेन्योर की लाइफ में लोग उसके कस्टूमर और कर्मचारियों / सहयोगियों के रूप में आते हैं। मेरे अनुसार किसी भी बिजनेस के जबरदस्त सफल होने के लिए मेन स्किल है लोगों से प्रोपर तरीके से डील करना। एक आंत्रप्रेन्योर को सभी को खुश रखना होता है। बड़े स्तर पर इसमें ह्यूमन रिर्सोसेज मैनेजमेंट, मीडिया मैनेजमेंट को शामिल किया जा सकता है।

एक आंत्रप्रेन्योर को अपने जीवन में कई ऐसे डिसीजन लेने पड़ सकते हैं, जो कुछ को अच्छे न लगे, और इसकी प्रकार की स्थितियों को मैनेज करने की स्किल बिजनेस के लिए जरूरी है विश्व के लगभग सभी सफल उद्यमियों में यह स्किल पाई जाती है

इसके मूल में होती है लोगों की भलाई के लिए सोच, अच्छी कम्यूनिकेशन और इंटरपर्सनल स्किल्स और पॉजीटिव बॉडी लेंग्वेज। यदि आपके पास यह स्किल्स है तो निश्चित ही आपके पास एक तगड़ा नेटवर्क बनने लगेगा और अपने व्यापार को तेजी से फैला पायेंगे।

कु० लवी अग्रवाल
बी.कॉम. (तृतीय वर्ष)

सत्य

सत्य क्या है? यह प्रश्न कभी न कभी तो आपके हृदय में आया ही होगा कि अंतत: यह सत्य क्या है। इस सत के सत् को बताने से पहले मैं आपको बता दूँ कि सत्य वही जो सनातन है, सनातन से अर्थ–है कि वह अनादि से था, है, और अन्त तक रहेगा तो चलो इस संसार में सत्य ढूंढ़ते हैं तो इस बात के लिए मेरी कलम बस यही कहेगी–

इस माया जगत में हृदयमग्न हो नित्य।
तदपि झूठे लोक में ढूंढ़त फिरूँ मैं सत्य।।

भ्रम में जाने से पहले मैं आपको बता दूँ कि सत्य ईश्वर है वो कैसे इस पर बाद में चर्चा करेंगे, अब सत् के भेद जान लेते है– एक वह सत्य जो अस्तित्व में हो, सांसारिक अस्तित्व में हो तो सांसारिक सत्य हुआ, दूसरा आध्यात्मिक सत्य, आपके लिए सत्य क्या है आप जिसे सत्य मान रहे है वह बस यही है कि जो चीज जीवन के हर स्तर पर कारगर हो, वही सत्य होनी चाहिए, ना जो भी आपने जीवन में जाना है उसे अभी परखें क्योंकि आपका दिमाग आगे की सोच सकता है फिलहाल आपके पास एक विशेष तरह की कमाई या विशेष तरह के घर या कार या किसी पद था और चीज के लिए परिश्रम कर रहे है स्वयं को जीवन के अलग–अलग पड़ावों में रखे और समझें कि क्या वे चीजें तब भी आवश्यक है मान लीजिए 100 साल पश्चात आप मरने वाले है यह जाने कि उस दिन आपके लिए आपके पद, परिश्रम, घर, इत्यादि का आपके लिए कुछ अर्थ होगा इसका अर्थ यह नहीं कि आप इन चीजों का उपयोग करना ही छोड़ दे बस इन चीजों को अपनी जगह पर रखिये इन्हें हृदय में जगह ना दें, मैं वर्तमान में देख रहा हूँ कि एक जीवन–यापन की चीज को आज के समाज ने कितना बड़ा बना दिया, ना जाने आज एक घंटे अध्ययन करने के लिए बच्चे को कम से कम 12 घंटे का मोटीवेशन चाहिए यह अपने आप में हास्य और इससे ज्यादा दु:खद भी क्या होगा, तो हम सांसारिक सत्य की बात कर रहे थे हम या तो अतीत में खोए रहते है या भविष्य का भय हमें जकड़े रहता है या उसके सुंदर स्वप्न इस बीच में हम वास्तविक सत्य वर्तमान को भूल जाते हैं जबकि यही सत्य है आप बस वर्तमान को जिएँ यही सत्य है एक–एक पल जिएँ, अनुभव करें, आप खा रहे है तो बस खाने पर ध्यान दें, आप यकीन नहीं करेंगे जब आप चबाते हुए निगलने पर ध्यान देंगे तो आप पाएंगे कि सादा दाल रोटी भी एक अच्छे व्यंजन से बढ़कर स्वाद लगेगी, आप वर्तमान (सांसारिक सत्य) में रहकर काम करे तो आप जो काम वर्षो में सीख रहे है वह कुछ क्षणों में सीख सकते है। अब आपकी इच्छा है, सत्य बोलना वाणी से सत्यवादी होने का लाभ है कि आप पाएंगे कि अब आप

अव्यवस्थित नहीं है सत्य बोलने का अर्थ यह नहीं की कोई कसाई आपसे पूछे कि वह जीव आपने देखा और सत्यवादी होने के चलते आप सत्य बोल दे ऐसा कदापि नहीं है, जिससे किसी निर्दोष का अहित हो वह सत्य नहीं। योग का पांचवां नियम है सत्य, यदि आप निरंतर सत्य बोलते है, हास में भी झूठ ना बोलते हो तो आप पाएंगे कि आपके द्वारा अनजाने में कहीं बात सत्य हो जाएगी, तब प्रकृति आपकी सहायता करती है चलो यह तो हुई एक क्षणिक सत्य की बात अब वास्तविक सत्य अनादि सत्य की बात कर लेते है- ईश्वर ने हमारी इंद्रियों को शरीर के बाहरी और रखा तब हमने बाहरी जगत में ही अपना र्स्वस्व ढूंढ़ा हमारे नेत्रों ने बाहर ही देखा, कभी हमने अपने अंतर में नहीं झांका हाँ वह सनातन सत्य कोई और नहीं हम ही है, वह सत्य प्रकाश है, अब प्रकाश और हमारा क्या संबंध है वह समझेंगे, श्रीकृष्ण अर्जुन से गीता के अध्याय 2 श्लोक 23 में कहते हैं-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पाषकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः।।

भावार्थ- आत्मा को न शस्त्र द्वारा काटा जा सकता है न ही आग द्वारा जलाया जा सकता है न ही जल इसे गला सकता है और ना ही वायु इसे सुखा सकती है।

करन
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

तिरंगा अभियान

किसी देश का आधिकारिक झंडा उस पूरे देश का प्रतीक होता है। यह प्रतीक एक ही छवि में देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य को दर्शाता है। जिस तरह एक झंडा किसी देश का प्रतिनिधित्व करता है, उसी तरह हमारा राष्ट्रीय झंडा भारत देश का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे लिए हमारे राष्ट्रीय झंडे के बहुत मायने हैं। यह हमें गौरवान्वित महसूस कराता है। हमारे झंडे को और अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिए भारत में एक अभियान 'हर घर तिरंगा' शुरू किया गया है।

तिरंगा पर एक नजर तिरंगा या भारत का राष्ट्रीय ध्वज देश के लोगों के लिए बहुत महत्व रखता है। भारत का राष्ट्रीय ध्वज शांति, प्रेम और एकता का प्रतीक है। भारत को आजाद कराने में कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान गंवाई यह उनके अमूल्य बलिदान का प्रतिनिधित्व करता है। पहले, झंडे के लिए कई डिजाइन और रंगों का इस्तेमाल किया जाता था। ध्वज का मूल रूप जो आज हम देखते हैं, वह 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था। यह पिंगली वेकय्या द्वारा डिजाइन किया गया था और इसमें केसरिया, सफेद और हरे रंग की तीन समान पट्टियां होती हैं। भारतीय ध्वज संहिता ध्वज के प्रदर्शन और उपयोग को नियंत्रित करती हैं। राष्ट्रीय ध्वज ''तिरंगा'' एक स्वतंत्र गणराज्य के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व करता है।

क्या है हर घर तिरंगा अभियान आजादी का अमृत महोत्सव का उत्सव कई कार्यक्रमों का आयोजन करता है। ऐसा ही एक अभियान है हर घर तिरंगा। इस अभियान को शुरू करने के लिए भारत सरकार जिम्मेदार है। इस कार्यक्रम को केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा अनुमोदित किया गया है क्योंकि वह आजादी का अमृत महोत्सव के तहत सभी गतिविधियों की देखरेख करते हैं। 22 जुलाई 2022, शुक्रवार को प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान की घोषणा की और भारत के लोगों से इसे एक बड़ी सफलता बनाने का अनुरोध किया। इस अभियान ने सभी भारतीयों से 13 से 15 अगस्त 2022 तक राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) फहराने का अनुरोध किया। इस अभियान के तहत कई कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। लोग वर्चुअल रूप से भी इस अभियान में हिस्सा ले सकते हैं। इस अभियान में भाग लेने के लिए एक विशेष वेबसाइट भी शुरू की गई है।

हर घर तिरंगा अभियान का उद्देश्य हर घर तिरंगा अभियान का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय ध्वज के साथ हमारे संबंध को गहरा करना है। पहले झंडे का इस्तेमाल केवल संस्थागत कार्यो और औपचारिक अवसरों के लिए किया जाता था। घरों और संस्थानों में झंडा फहराने से लोग व्यक्तिगत स्तर पर झंडे से जुड़ सकेंगे। यह अभियान लोगों

को हमारे राष्ट्रीय झंडे के महत्व के बारे में जागरूक करने में मदद करेगा। इस उत्सव को सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि के रूप में भी देखा जा सकता है। हर घर तिरंगा अभियान भारत के नागरिकों के बीच देशभक्ति और राष्ट्रवाद को बढ़ाने में मदद करेगा। यह एक राष्ट्र के रूप में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाने का भी एक अच्छा तरीका है। परिणामस्वरूप, हमारा हमारे राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान बढ़ेगा। साथ ही, यह अभियान भारतीय नागरिकों को राष्ट्र के प्रति उनकी जिम्मेदारियों की याद दिलाएगा।

निष्कर्ष भारत को आजादी मिलने के बाद पिछले 75 वर्षों में देश ने हर क्षेत्र में जबरदस्त प्रगति की है। हमारे देश ने ऊपर सूचीबद्ध क्षेत्रों के अलावा विज्ञान और प्रौद्योगिकी, चिकित्सा विज्ञान और कई अन्य क्षेत्रों में भारी प्रगति की है। अब हम अपने विकास के बहुत अच्छे बिंदु पर है और इसे मनाने का यह बहुत अच्छा समय है। इस प्रकार, आजादी का अमृत महोत्सव का उत्सव कुछ ऐसा है जिसमें प्रत्येक भारतीय नागरिक को भाग लेना चाहिए और इस पर बहुत गर्व होना चाहिए। एक भारतीय के रूप में इस देश और उत्सव का हिस्सा होने से ज्यादा गर्व की कोई बात नहीं है।

कु० शबाना
(बी.कॉम. द्वितीय वर्ष)

मोबाइल/स्मार्टवॉच को कैसे सुरक्षित रह सकते हैं

स्मार्टवॉच से आप अपनी सेहत पर नजर रखने के साथ-साथ इसमें मैसेज, कॉल, जीपीएस और सोशल मीडिया का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। इसमें सुविधाएं कई है लेकिन यह घड़ी मोबाइल और एप्स से जुड़ी होती है, इसलिए साईबर हमले का डर यहां भी है। दरअसल स्मार्ट घड़ी आपके शरीर के घटकों (बॉडी कंपोजीशन) और गतिविधियों पर नजर रखती है। मोबाइल एप घड़ी से जुड़ा होता है जिसमें सारा डेटा सुरक्षित होता है यह डेटा आपके मोबाइल से कंपनी के सर्वर तक लगातार जाता रहता है। इस स्थिति में साईबर हमले दो प्रकार से हो सकते हैं, पहला हैकर्स आपके मोबाइल का डेटा चुरा सकते हैं और दूसरा कि वे कंपनी की वेबसाइट हैक करके सारा डेटा निकाल सकते हैं। ये डेटा थर्ड पार्टी एप्स तक भी पहुंच जाता है जिसके कारण साईबर हमले का डर बना रहता है।

स्मार्टवॉच में बहुत ज्यादा सिक्योरिटी फीचर नहीं होते इसलिए सुरक्षा का ध्यान आपको ही रखना है..

ऐसे सुरक्षित रखें स्मार्टवॉच को

- ❖ घड़ी को सुरक्षित रखने से पहले मोबाइल को सुरक्षित रखे। सार्वजनिक वाईफाई इंटरनेट कनेक्शन से दूर रखें।
- ❖ संवेदनशील स्थानों पर जाते समय ट्रैकिंग बंद कर सकते हैं। यह सुविधा लगभग हर स्मार्टवॉच में होती है।
- ❖ जब घड़ी का उपयोग न हो तो इसे बंद कर दे या फोन का ब्लूटूथ कनेक्शन बंद कर दें ताकि यह फोन से डिस्कनेक्ट हो जाए। किसी भी ऐसी डिवाइस के साथ पेयर न करें, जिसे पहचानते नहीं है। अजनबियों की तरफ से आने वाले किसी भी पेयरिंग रिक्वेस्ट को कभी भी स्वीकार न करें।
- ❖ अपने मोबाइल और स्मार्टवॉच का सॉफ्टवेयर अपडेट रखें, ताकि हैकर्स सुरक्षा खामियों का फायदा न उठा सकें।
- ❖ घड़ी का जीपीएस ऑन होने के कारण आपकी गतिविधियां भी ट्रैक होती रहती हैं। इसलिए सेटिंग विकल्प में जाकर लोकेशन सर्विस बंद कर दें।
- ❖ मोबाइल के ब्लूटूथ के माध्यम से संवेदनशील जानकारी साझा करने से बचें। इसमें बैंक की जानकारी, पासवर्ड, निजी फोटो व अन्य निजी जानकारी शामिल है।
- ❖ स्मार्ट वॉच का डेटा रोज डिलीट करते रहें। रात में हैकर्स अधिक सक्रिय रहते हैं इसलिए इस दौरान मोबाइल का इंटरनेट बंद रखें और घड़ी को बंद कर दें।

सुवेन्द्र सिंह
(एम.एस.सी. प्रथम वर्ष)

अनमोल विचार

काम करो ऐसा कि पहचान बन जाये
हर कदम चलो ऐसे कि निशान बन जाये
यह जिन्दगी तो सब काट लेते हैं
जिन्दगी ऐसे जियो कि मिसाल बन जाये।

वक्त नूर को बेनूर बना देता है
जख्म छोटा सा नासूर बना देता है
कौन चाहता है कि मजबूरियों से गुजरो
पर वक्त इंसान को मजबूर बना देता है।

जो भाग्य में है वह भाग कर आएगा,
जो नहीं है वह आकर भी चला जाएगा,
झूठी बात पर जो वाह करेंगे,
वही लोग आपको तबाह करेंगे।

तेरे गिरने में तेरी हार नहीं
तू इंसान है, अवतार नहीं
गिर, उठ, चल, दौड़, फिर भाग
क्योंकि जीवन संक्षिप्त है
इसका कोई सार नहीं।।

सबर कर बन्दे मुसीबत के
दिन भी गुजर जाएंगे
हंसी उड़ाने वालों के भी
चेहरे उतर जाएंगे।

माना मुश्किलों के साथ चलना
थोड़ा भारी रहेगा पर सफर मेरा
हमेशा जारी रहेगा।

चरित्र एक वृक्ष है और प्रतिष्ठा, यश
सम्मान उसकी छाया लेकिन विडंबना
यह है कि वृक्ष का ध्यान बहुत कम
लोग रखते है और छाया सबको चाहिए.....

लक्ष्मी
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

मोबाइल मैं हूँ

मोबाइल मैं हूँ। टेक्नोलॉजी ने मुझे बनाया है।।
अब चाहकर भी मुझे तुम खत्म नहीं कर सकते।
आखिर दीवाना जो बना दिया मैंने तुम्हें ऐसे।।

लोगों के दिलों में मैंने राज किया है।
मेरे बिना तुम अधूरे हो।।
यह मैंने विश्वास दिलाया है।
अब दूर नहीं रह सकता कोई मुझसे।।
मैं काम ही करता हूँ ऐसे।

टाइम पास मैं करता।
लोगों के दिल को बहलाता।।
अपनों से बातें मैं करवाता।
दूर करने में भी हाथ है अपना।।

किसी ने मेरा सही उपयोग किया।
कोई मुझे समझ ही नहीं पाया।।
बस लोग करते रहे गए अपना समय बर्बाद।
तो किसी ने लाखो कमाया।।

कु० गरिमा
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

पेड़ की पुकार

मुझको पत्थर से न मारो,
फल तो वैसे भी देता हूँ।
अपने लिए कहा रखता हूँ,
पल-भर सोचो और विचारो।

मेरी शीतल-छाया ले लो,
रूप गंध सब कुछ तुम ले लो।
मत काटो मत खाल उतारो,
मुझको पत्थर से ना मारो।

तेज धूप में खड़े रहकर,
तुमको छाया देता हूँ।
खट्ठे-मीठे फल देकर,
सबकी भूख मिटाता हूँ।

मुझको पत्थर से न मारो,
मुझको पत्थर से न मारो।

तबस्सुम
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

श्रीनिवास रामानुजन

जब भी हम विज्ञान अथवा गणित की बात करते है, तब हमारे दिमाग में परिचम की छवि उभर आती है, यह भारत के उपनिवेशी हेरा रहने के कारण हुई, बचपन से ही हमें न्यूटन, एडीसन सभी विदेशी वैज्ञानिक और गणितज्ञ पढ़ाए गए। इन्हें पढ़ने के बाद हमें ऐसा लगता है कि भारत ने दुनिया को क्या दिया, लेकिन हमें कभी यह नहीं बताया गया कि भारत ने विश्व को अनेक महान वैज्ञानिक व गणितज्ञ दिए जिससे विज्ञान का ढांचा तैयार हुआ ऐसे ही एक महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन हुए।

रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को भारत के भूभाग (दक्षिणी) में स्थित कोयम्बटूर के ईरोड नामके गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम कोमलताम्मल और इनके पिता का नाम श्रीनिवास अय्यंगर था। इनका बचपन मुख्यत: कुभकोणम में बीता था जो कि अपने प्राचीन मंदिरों के लिए जाना जाता है। जब उन्होंने विद्यालय में प्रवेश लिया तब इनका परम्परागत शिक्षा में मन नहीं लगा। रामानुजन की सिर्फ गणित में ही रूचि थी। वे अन्य विषयों को गम्भीरता से नहीं पढ़ते थे। प्राइमरी परीक्षा में उन्होंने पूरे जिले में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये। रामानुजन का व्यक्तित्व बड़ा सरल व सौम्य था। उनके सहपाठी और शिक्षक उनसे प्रभावित थे। वे इतने अधिक मेधावी थे कि स्कूल के समय में ही महाविद्यालय तक का गणित पद लिया। 13 वर्ष की अल्पायु में बालक रामानुजन ने एस. एल. लोनी द्वारा लिखित पुस्तक एडवांस ट्रिगनोमेट्री के मास्टर बन चुके थे। इन्होंने बहुत सारी प्रमेय बनाई, 17 साल की उम्र में इन्होंने बर्नोली नम्बरों की जांच की और दशमलव के 15 अंकों तक एलुयेर कांस्टेंट की वैल्यु खोज की।

गणित में योगदान:-

वर्ष 1918 में 31 वर्ष की उम्र में गणित के 120 सूत्र लिखे और अपनी शोध को अंग्रेजी प्रो. जी.एच. हार्डी के पास भेजो हार्डी ने उस शोध को पढ़ा और उन शोध पत्रों से वे अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्हें कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी आने का न्यौता दिया। फिर अक्टूबर 1918 में रामानुजन को ट्रिनिटी कॉलेज की सदस्यता प्रदान की गयी। ऐसा करने वाले वे पहले भारतीय थे।

26 अप्रैल 1920 को TB (Tuberculosis) बीमारी के कारण रामानुजन ने अपने जीवन की अंतिम सांस ली। मृत्यु के समय उनकी आयु सिर्फ 33 वर्ष की थी। श्रीनिवास जी को खोना सम्पूर्ण विश्व के लिए अपूर्णीय क्षति थी। रामानुजन ने अपने 33 वर्ष के जीवन में 3884 समीकरण बनाये। जिनमें से कई तो आज भी अनुसुलझी है। गणित में 1729 को रामानुजन नंबर से जाना जाता है। भारत के तमिलनाडु राज्य में रामानुजन के जन्मदिन को IT दिवस और भारत में राष्ट्रीय गणित दिवस के रस में बनाया जाता है। श्रीनिवास रामानुजन को "MAN WHO KNEW INFINITY कहा जाता है 2014 में इनके जीवन पर तमिल में एक फिल्म रामानुजन के जीवन पर बनाई गई थी।

सपना
एम.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

"बेटी की विनती"

नरेन्द्र रंजन टयूटर
सांख्यिकी विभाग

बेटी हो तो घर उजियारा,सूना रहे न आँगन सारा।
जब भी बेटी घर आती,खुशियाँ घर आंगन लाती।।

ज्ञानवान जो बन जाए बेटी,
रोशन कर दे ये जग सारा।
जब तक बेटी रहे इस जग में,
किसी पर बोझ बने न इस जग में।।
इसका न तुम मान गिराओ,
आने वाले कल को बचाओ।
यही विनती है हर बेटी की,
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ।।

मंगलाचरण

वागर्थाविण संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपलये।
जगतः पितरौ वन्दै पार्वती परमेश्वरौ।।

अहंकार और विनम्रता

एक बार ऋषि यज्ञ कर रहे थे तो उनकी अंतिम आहुति किसी ऐसे इंसान को देनी थी जो ऋषियों को सम्मान करता हो तो ऋषियों में से भृगु ऋषि जो सप्त ऋषियों में से एक थे। तो उनके दिमाग में विचार आया कि संसार में इतना अच्छा कोई नहीं जो ऋषियों का दिल से सम्मान करता हो। उन्होंने सोचा क्यों ना भगवान जी से ही अपने हवन में अंतिम आहुति डलवाये, इसलिए भृगू ऋषि भगवान की परीक्षा लेने गये। परीक्षा ये थी, जो भगवान उन्हें देखकर नमन करे तो ही उनके हवन में अन्तिम आहुति देगा। वो सबसे पहले भगवान शिव के पास गये और वहां जाकर उन्होंने देखा कि भगवान शिव ध्यान में बैठे हैं। पार्वती उनकी समीप खड़ी थी, पार्वती जी ने श्रगु ऋषि को देखकर पार्वती जी ने उनको नमन किया किन्तु श्रगु ऋषि शिव जी को ध्यान से उठाने के लिए आगे आये तो पार्वती जी ने कहा भगवान शिव जी तो ध्यान में मग्न है किन्तु श्रगु ऋषि घमण्ड में बोले तो क्या हुआ वो मेरा सम्मान नहीं करेंगे उनको ध्यान से बाहर आना ही होगा इतने में भगवान शिव जी ध्यान से बाहर आये और श्रगु ऋषि से कहा कि आपको क्या काम है। ऋषि श्रगु ने शिव जी से कहा आप कुछ भूल तो नही रहे शिव जी ने कहा नहीं। मैं तो कुछ नहीं भूल रहा हूं। ऋषि श्रगु कहते है बस इतना ही पूछना था इतने कहते ही ऋषि श्रगु चले जाते हैं। श्रगु ब्रह्मा जी के पास जाते हैं ब्रह्मा जी ध्यान में मग्न थे ऋषि श्रगु उनसे कहते हैं कि ध्यान से बाहर आयो ऋषि श्रगु बहुत क्रोध वाले है क्रोध आते ही वे सबको श्राप दे देते थे। इसलिए ब्रह्मा जी ने ध्यान में पहले ही देख लिया था कि ऋषि भोले बाबा जी के पास से आये हैं। उन्होंने ध्यान से बाहर आकर कहते है कि ऋषि श्रगु आपको क्या काम है ऋषि श्रगु कुछ सोचते हुए कहते है कि आप कुछ भूल तो नहीं रहे हैं ब्रह्मा जी कहते है नहीं मैं कुछ नहीं भूल रहा हूं इतना कहते ही ब्रह्मा जी ध्यान में चले जाते हैं और ऋषि श्रगु जी चले जाते है। उसके बाद ऋषि श्रगु नारायण के पास जाते हैं नारायण ध्यान में लेटे थे और लक्ष्मी जी पास में बैठी थी ऋषि श्रगु को देखकर लक्ष्मी जी ने उन्हें नमन करके उन्हें सम्मान दिया किन्तु ऋषि ने अहंकार में लक्ष्मी जी से कहा मुझे नारायण से मिलना है। लक्ष्मी जी ने कहा कि प्रभु तो ध्यान में बैठे हैं। अगर आपको कोई काम है तो मुझे बताओ किन्तु अहंकार में ऋषि ने कहा नहीं मुझे केवल नारायण से काम है इतना कहते ही ऋषि श्रगु नारायण के पास गये, पास आकर उन्होंने अहंकार में प्रभु जी के लात हृदय पर मारी और मारकर वहां से जाने लगे, तो पीछे से नारायण जी ने श्रगु के पैर को लेकर सहलाने लगे जब ऋषि श्रगु ने देखा तो उन्होंने कहा कि तुम तब तो ध्यान से बाहर नहीं आये अब पैर को क्या सहला रहे हो तो भगवान जी ने कहा कि मैं तो ब्रज का हूं अर्थात् मेरा शरीर तो पीड़ा से परे है। इस ब्रज के शरीर पर आपने जो लात मारी उससे मेरा तो कुछ नहीं हुआ, पर आपके पैर को पीड़ा पहुंची है इतना सुनते ही ऋषि का अहंकार टूट गया उन्होंने नारायण से माफी मांगी और उनसे कहा कि मेरे हवन में अंतिम आहूति आपको देनी होगी अर्थात् श्रगु ऋषि ने नारायण जी को हवन में आने के लिए आमंत्रित किया।

ठीक इसी प्रकार समाज में अनेक व्यक्तियों में अहंकार होता है अहंकार से हम हमेशा छोटे बनकर रह जाते हैं तो हमें कभी बड़ा नहीं बनने देता। और हमें समाज से दूर करते है। इस कहानी से हमें यही सीखने को मिलता है कि हमें अहंकार नहीं करना चाहिए। अहंकार हमें अंधा बनाता है ठीक इसी संबंध में कालिदास का एक दोहा उल्लेख है–

क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात।
का रहीम हरि को घट्यो जो भृगु मारी लात।।

नीतू
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

मोबाईल

हर कान पर चिपका रहता,
सब यूज करें मेरा स्टाइल,
मैं हूँ संचार की पहचान,
मेरा जन्मदाता है विज्ञान,
मैमोरी मेरी सबसे तेज
दो सेकेण्ड में भेजता मैसेज,
रिलायंस, टाटा मेरे रिश्तेदार,
सब करते हैं मुझसे प्यार,
लोगों की इज्जत बढ़ाता,
दिल से दिल को मिलाता,
मैं बन गया हूं एक फैशन,
रखता हूं हर प्रोफाइल,
लोगों की जुबान कहता,
मेरा नाम है मोबाईल।
मुझे यूज करता हर इंसान,
मैं कानों का हूँ मेहमान।
बढ़ रहा है अब मेरा क्रेज,
कभी-कभी होता एंगेज।
जो करते है मेरा व्यापार,
मेरे बिना जीवन बेकार।
होठों पर मुस्कान लाता,
बूढ़े, बच्चे सबको भाता।
बारहों महीने का मेरा सैशन,
मेरा नाम है मोबाईल।

कु० पायल
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

जीना इसी का नाम

शरीर को चंगा रखो, दिमाग को ठंडा रखो।
जेब को गरम रखो, आंखों में शर्म रखो।
जुबान को नरम रखो, दिल में रहम रखो।
क्रोध पर लगाम रखो, व्यवहार को साफ रखो।
होठों पर मुस्कुराहट रखो।
फिर स्वर्ग में जाने की क्या जरूरत यही स्वर्ग है।
स्वस्थ रहो.....व्यस्थ रहो
मस्त रहो..... सदा खुश रहो

मीनाक्षी चौहान
बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)

कविता

My dear favourite teacher's.....
कभी डांट-डपट कर, प्यार जताया।
कभी रोक-टोक कर, चलना सिखाया।
कभी ढाल बनकर हर मुश्किल से बचाया
कभी हक के लिए लड़ना सिखाया
कभी गलती बताकर कभी गलती छुपाकर
एक सच्चे गुरू का फर्ज निभाया
कभी पिता बनकर दी सलाह,
कभी दोस्त बनकर हौसला बढ़ाया
आज कहते हैं उन टीचर्स को ?
बड़ा सा Thankuuuuuu.....
जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया।
Dedicated to my favourite teacher's
Thank you so much.....

रिया गोयल
बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)

आज नहीं तो कल होगा.....

लोहा जितना तपता है,
उतना ही ताकत भरता है।
सोने को जितनी आग लगे,
वो उतना प्रखर निखरता है।
हीरे पर जितनी धार लगे,
वो उतना खूब चमकता है।
मिट्टी का बर्तन पकता है,
तब धुन पर खूब खनकता है।
सूरज जैसा बनना है,
तो सूरज जितना जलना होगा।
नदियों सा उदार पाना है,
तो पर्वत छोड़ निकलना होगा।
और हम आदम के बेटे हैं,
क्यों सोचो राह सरल होगी।
कुछ ज्यादा वक्त लगेगा पर,
संघर्ष जरूर सफल होगा।
हर एक संकट का हल होगा,
वो आज नहीं तो कल होगा।

सोनू कुमार शर्मा
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

माँ-बाप

जेब खाली होते हुए भी मैंने,
कभी मना करते नहीं देखा।
मैंने पिता से बड़ा अमीर,
दुनिया में कोई इंसान नहीं देखा।

वो खुशनसीब होते है,
माँ-बाप जिनके साथ होते है।
क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के,
हजारों हाथ होते हैं।।

आंसू अपने गिराकर हंसाया हमको,
नींदे अपनी उड़ाकर सुलाया हमको।
भूल से भी दिल न दु:खाना उनका
खुदा ने माँ-बाप बनाया जिनको।।

रूलाना सबको आता है,
हंसाना भी सबको आता है।
लेकिन जो रूलाकर मना ले,
वो 'पापा' होते हैं।
और जो रूलाकर खुद रो दे,
वो 'मम्मी' होती है।।

मुझे छांव में रखकर,
खुद चलता रहा धूप में।
मैंने खुदा एक फरिश्ता देखा,
पापा के रूप में।।

क्यों फूल दो बार नहीं खिलते,
कोई जन्म दो बार नहीं मिलते।
यूं तो हजारों लोग मिलते है इस दुनिया में
पर हजारों गलती माफ करने वाले
मां-बाप दोबारा नहीं मिलते।।

लबों पर जिसके कभी बद्दुआ नहीं होती,
एक मां ही तो जो कभी खफा नहीं होती।

कुलदीप कुमार
बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

कविता

आप देते हो हमको शिक्षा,
फिर लेते हो हमारी परीक्षा।
गलती करे तो हमें समझाते,
हम रोएं तो हमें हंसाते।
आपकी उस डांट में भी
अलग ही ममता होती है.....

माता ने दिया जीवन-दान,
आप बनाते इसे महान।
ज्ञान का दीप आप जलाकर,
विद्या का जल हमें पिलाकर,
जीने का ढंग सिखाते हो....

जीवन में कुछ पाना है तो,
शिक्षक का सम्मान करे।
शीश झुकाकर आदर से,
आओ उन्हें प्रणाम करें.....

खुशबू चौधरी
बी.कॉम. (प्रथम वर्ष)

मुस्कुराने के लिये

मसखरा है, आंसू छिपाने के लिये।
बांटता है वो हंसी, सारे जमाने के लिये।

जख्म सबको मत दिखाओ लोग छिड़केंगे नमक।
आयेगा कोई नहीं मरहम लगाने के लिये।

देखकर तेरी तरक्की खुश नहीं होगा कोई।
लोग मौका ढूढते हैं काट खाने के लिये।

मिल रहा था भीख में सिक्का मुझे सम्मान का।
मैं नहीं तैयार था झुककर उठाने के लिये।

जिन्दगी में गम बहुत है हर कदम पर हादसे।
रोज कुछ टाइम निकालो मुस्कराने के लिये।

मनोज राजपूत
बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

हमारी जिन्दगी

❖ मैं अपनी इबादत खुद ही कर लूं, तो इसमें गलत क्या है ?
किसी फकीर से सुना है, खुद में ही तो खुदा रहता है।

❖ खुदा महंगी घड़ी सबको दे, लेकिन मुश्किल घड़ी किसी को न दे, क्योंकि महंगी घड़ी तो सबको अच्छी लगती है लेकिन मुश्किल घड़ी में जो अकेले उन्हें तकलीफ बहुत ज्यादा होती है।

❖ दुनिया की सबसे सस्ती चीज है:- 'मशवरा' एक से मांगों तो हजार दे देते हैं। लेकिन दुनिया की सबसे महंगी चीज है:- 'मदद' हजारों से मांगों तब एक से मिलती है।

❖ ये जिन्दगी है जनाब कई रंग दिखाएगी कभी हंसाएगी तो कभी रूलाएगी। जो खामोशी से सह गया वो निखर गया, और जो भावनाओं में बह गया वो बिखर गया।

❖ दुनिया में इंसान को हर चीज मिल जाती है बस अपनी गलती नहीं। लड़ा भी उनसे जाता है, जो खास होते हैं वरना परायों को छोड़ दिया जाता है ये हर कोई जानता है।

❖ शब्दों का वजन इंसान की जुबान से लगाया जाता है, वरना वेलकम तो आजकल पायदान पर भी लिखा जाता है।

❖ जो इंसान दिल का अच्छा हो उसी के साथ रहो, आंखो का क्या है ? उसे तो सब अच्छे लगते हैं।

❖ वक्त और हालात दोनों इंसान की जिन्दगी में कभी भी एक जैसे नहीं रहते। क्यूंकि वक्त इंसान की जिन्दगी बदल देता है, और हालात बदलने में वक्त नहीं लगता है।

❖ हे ईश्वर ! गम इतना महंगा कर दो कि कोई चाह कर भी न खरीद पाए और खुशी इतनी सस्ती कर दो हर किसी के चेहरे पर उतर आए।

❖ पत्थर की कठोरता ये होती है, कि वो कभी पिघलता नहीं है। लेकिन उसकी खूबी ये होती है, कि वो कभी बदलता नहीं है।

❖ इंसानियत दिल में होनी चाहिए हैसियत में नहीं। ऊपरवाला दिल देखता है, वसीयत नहीं।

❖ जियो इतना कि जिन्दगी कम पड़ जाए, हंसो इतना कि रोना मुश्किल हो जाए। किसी भी चीज का मिलना तो नसीब की बात है, लेकिन कोशिश इतनी करो कि ऊपरवाला देने पर मजबूर हो जाए।

❖ क्यों सोचते हो जिन्दगी में कि अच्छा होगा या बुरा होगा ? कुछ न भी मिला तो क्या तजुर्बा तो नया होगा।

❖ जिन्दगी की एक लाइन जो बहुत ज्यादा मशहूर है:-

Life is like a Dice. You never Know?
What comes next?

भारती शर्मा
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

ना तुझे देखा मैंने

ना मुझे देखा मैंने, ना तुझे माना मैंने
मगर जब से मैं, इस दुनिया में आया
तब से माँ–बाप के रूप में, देखा तुझे मैंने
ना मुझे देखा मैंने, ना तुझे माना मैंने
मगर जब मेरी हर इच्छा, बिना मांगे पूरी हुई
माँ–बाप के रूप में, तब से माना तुझे मैंने
ना मुझे देखा मैंने, ना तुझे माना मैंने
मगर जब भी कोई संकट आया मुझ पर
खुद को सामने रखकर माँ–बाप ने दूर किया संकट
तब मैंने देखा तुझे तब मैंने माना तुझे
हर माँ–बाप में तू बसा है
लेकर अलग–अलग रूप अलग–अलग नाम
अगर कोई अल्लाह भगवान को ना पहचाने
तो हर माँ–बाप में अल्लाह भगवान का अंश है
इस धरती पर माँ–बाप से बड़ा कोई नहीं

मोहित कुमार
एम.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

अनमोल वचन

- ''असफलताओं के तालों को खेलने के लिए इस दुनिया में सिर्फ दो चाबी होती हैं पहली चाबी होती है दृढ संकल्प और दूसरी कठोर परिश्रम।
- कोई भी मनुष्य जन्म से ही महान नहीं होता महान बनने के लिए मनुष्य को महान कर्म भी करने पड़ते हैं।
- फूलों की खुशबू हवा की दिशा में ही फैलती है। लेकिन एक व्यक्ति की अच्छाई चारों तरफ फैलती है।
- अगर आप यह सोच के कुछ नहीं कर रहे कि लोग क्या कहेंगे तो आप जीवन की पहली परीक्षा में हार गए।
- नीयत से ईश्वर खुश होते हैं और दिखावे से इंसान यह आप पर निर्भर है कि आप किसे प्रसन्न करना चाहते हैं।
- मस्तिष्क कोई कचरे का डिब्बा नहीं है जिसमें आप क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह, माया और जलन रखो मस्तिष्क तो एक ऐसा खजाना है जिसमें आप ज्ञान-विज्ञान प्यार-सम्मान दया भाव जैसी बहुमूल्य चीजे रख सकते हैं।

सांक्षी चौहान
बी.कॉम. (तृतीय वर्ष)

कविता

देर में तुझसे जरूर हूं माँ।
पर याद तेरी बहुत आती है माँ।।
हर पल तेरे बारे में सोचता रहता हूं।
तुझसे मिलने को तरस रहा हूं मैं माँ।।
तेरे हाथ को वो खाना।
तेरी वो प्यारी सी डाट माँ।।
प्यार से तेरा वो समझना।
और मेरा रूठकर कहीं छिप जाना।।
खाना मुझे पहले खिलाकर।
बाद में बचा हुआ तू खाती थी माँ।।
जब मैं तुझे खाने को कहता।
मैं खा लूंगी बेटा तेरा वो कहना माँ।।
बहुत याद आती है माँ।
बीमार जब मैं कभी हो जाता।
तंत्र मंत्र तेरा वो करना माँ।।
मुझे ठीक करने का तेरा वो हर प्रयास माँ।
मुझे बहुत याद आता माँ।।

प्रिया
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

शिक्षा

बहुत जरूरी होती शिक्षा, सारे अवगुण धोती शिक्षा।
चाहते जितना पढ ले हम पर, कभी न पूरी होती शिक्षा।
शिक्षा पाकर ही बनते हैं,
नेता, अफसर, शिक्षक,
वैज्ञानिक, मंत्री, व्यापारी,
या साधारण रक्षक।
कर्त्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों का ज्ञान।
शिक्षा से ही मिल सकता है, सर्वोपरि सम्मान।
बुद्धिमान को बुद्धि देती, अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से ही बना है, मेरा भारत देश महान।

अनुराग सैनी
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

कैसा है पूरा वर्ष

''जाड़े में जनवरी भरी, फूलों से फरवरी घड़ी
बढ़ने लगा सूरज का चार्ज महुए से महका मार्च।
तपते गांव गली खपरैल गर्मी ले आया अप्रैल।
मुश्किल कर दे जीना रे आया मई महीना रे।
बहुत बड़े इसके नाखून जान बचाओ आया जून।
वर्षा लेकर आयी है कितनी भली जुलाई है
नाचे मयूरा हो के मस्त कितना अच्छा लगे अगस्त।
इन्द्र धनुष है अम्बर में फूले कांस सितम्बर में
पेड़ों ने पत्ते झाड़े अक्टूबर के पिछवाड़े।
कांप उठे बन्दर जी आया माह नवम्बर जी
करो पढ़ाई बातें कम आया दिसम्बर साल खत्म।

चन्द्रवीर
बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

जिन्दगी आसान नहीं

❖ आसान जिन्दगी नहीं है होती एहसास हुआ उस पल में छोड़कर पिजड़ा निकला पंछी, कोई अपना ना मिला नभ में।

❖ अब तक जिए मजे की जिंदगी, था पास में सब कुछ ढूंढा इतना बड़ा आसमां, कुछ पास नहीं था सचमुच।

❖ पल में हंसना, पल में रोना, ये कला भी सीखी जाती है छोड़ों घर को बाहर निकलो, ये जिंदगी बड़ा रूलाती है।

❖ इतने शांत हो जाएंगे एक दिन, जो कभी होते वाचाल रात-रात भर बैठे रोते, सपने करते ऐसा हाल।

❖ काबिल बनने निकले घर से, हुआ सामना दुनिया से अंदर रोता, बाहर हंसता चेहरा, पहले सीखा दुनिया से।

अपना-अपना कहते सबको, अपने भी अपने रहे नहीं खुशी-खुशी मिल जाए सफलता, ऐसे सपने नहीं रहे।

दिव्या कुमारी
बी.एस.सी. (पृथम वर्ष)

नए रूपों में जिंदगी

❖ आज मैं आपको कुछ नया बताती हूं। जिन्दगी के नए रूपों का ज्ञान कराती हूं हिन्दी, इंग्लिश, गणित, विज्ञान, कला, सामाजिक, किताबी विषयों में जिंदगी का पाठ सिखाती हूं।

❖ समझाये, बताये कोई और तो एकदम आसान लगे देखने स्वयं तो दिखे जैसे पहाड़ ऐसी ही है गणित रूपी जिन्दगी की किताब जो तेज से तेज को भी दिखाये जमी आसमान।

❖ जिंदगी के अध्याय में जो पात्र होते अहम् हिन्दी होती मां जैसी अंग्रेजी भाई बहन कला दोस्त, समाज सामाजिक, विज्ञान थोड़ी व्यक्तिगत पिता को जाने, गणित को समझे मार-पिटाई पर लगा ग्रहण।

❖ अंग्रेजी से होती समझदारी की पहचान कोई बोले हिन्दी में तो समझे अनपढ़ गंवार क्या कभी लोग समझ पाएंगे, दिल, भावनाओं की भाषा को क्योंकि किताबी भाषा को ही बताया मान सम्मान।

उलझने बहुत है इन दो शब्दों में, दिल और दिमाग सुनू किसकी मानू किसकी दिल या दिमाग कहता कुछ समझाता कुछ दिल एवं दिमाग लाजमी है जालमी दोनों दिल तथा दिमाग।

पर्मिता सिंह
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

अपना गाँव

बता नहीं सकती कैसा है, अपना गाँव
जहां गुजरा मेरा बचपन, अपना गाँव
पहला कदम रखा जहां, अपना गाँव
जहां घूमी पापा की उंगली पकड़, अपना गाँव।

गाँव जैसा ना कोई जहां
गाँव जैसी ना मस्ती कहीं
गाँव जैसे ना दोस्त कहीं
गाँव जैसी ना हस्ती कहीं।

गाँव में सब अपने-अपने
पराया ना गाँव में कोई
पराये को भी बना ले अपना
ऐसी उसकी रीत रहीं
गाँव तो गाँव है अपना

गाँव में सब रिश्ते-नाते
सबकी रूप भावना है
गाँव की हरियाली बस्ती
सुगंधित करना उसका सपना है

गाँव के वो हरे-भरे खेत
उनमें उगी फसल धान, बाजरा है
गाँव तो गाँव है अपना
गाँव जैसा ना कोई जहां है।

गाँव के वो नहर, बम्बे
शीतल वहां की हवा है
गाँव की उस सड़क पर चलना
सबकी अपनी एक अदा है

अजनबी को जानकार बनाना
ऐसा हुनर गाँव में है
गाँव तो गाँव है अपना
गाँव जैसा ना कोई जहां है।

गौरव राजपूत
बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

सपनों में रख आस्था

सपनो में रख आस्था कर्म तू किए जा,
त्याग से ना डर आलस परित्याग किए जा।
गलती कर ना घबरा,
गिरकर फिर हो जा खड़ा।
समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।
रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की।
जो पाना है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर,
करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की इबादत भी कर।
फिर देख किस्मत क्या क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल जाएगी।

हिमांशी
बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

सफलता का रहस्य

एक बार एक युवक ने सुकरात से सफलता का रहस्य पूछा। सुकरात ने उस युवक को अगली सुबह बुलाया। अगली सुबह जब युवक सुकरात से मिला तो वे उसे नदी के किनारे ले गये। वे उस युवक के साथ गहरे पानी में चले गये। उन्होंने उस युवक का सिर पकड़कर पानी में डुबो दिया। जब युवक छटपटाने लगा और उसका शरीर नीला पड़ने लगा तो सुकरात ने उसका सिर पानी से बाहर निकाल लिया युवक ने गहरी सांस ली। वह क्रोध से आग बबूला हो गया। सुकरात ने मुस्कुराते हुए पूछा ''तुम्हें पानी के अंदर किस चीज की सबसे अधिक इच्छा थी? युवक बोला, ''हवा की। सुकरात ने कहा यही सफलता का रहस्य है। सफलता की चाह के लिए ठीक वैसी ही छटपटाहट और बेचैनी चाहिए जैसे पानी के अंदर तुम्हारे मन में हवा के लिए थी।

गौरव मीणा
बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

संगति का असर

राम और श्याम दो भाई थे, दोनों एक ही कक्षा में पढ़ा करते थे। राम पढ़ने में बहुत होशियार था। पर उसका भाई पढने से दूर भागता था। राम के जो दोस्त थे वो पढने में अव्वल थे और वही दूसरी तरफ श्याम के दोस्तों को पढने में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं थी, वो पढ़ाई से दूर भागते थे।

ये सब देखने के बाद राम अपने भाई श्याम को उसके दोस्तों से दूर रहने के लिए बोलता था, लेकिन श्याम अपने भाई की बात नहीं सुनता और उसे कहता की आप अपने काम से मतलब रखो।

एक दिन श्याम अपने भाई के साथ स्कूल जा रहा था। उसका भाई राम कक्षा में चला गया अचानक श्याम के दोस्त आए और उसे कहने लगे कि आज हमारे दोस्त हरि का जन्मदिन है इसलिए आज स्कूल नहीं जाओ। पहले तो श्याम ने मना किया किन्तु दोस्तों के बार-बार बोलने पर वह उसके साथ चला गया धीरे-धीरे श्याम को आदत हो गई और वो हर रोज ऐसा करने लगा।

कुछ दिन बार परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ, जिसमें श्याम और उसके दोस्त फेल हो गए। वहीं उसके भाई ने प्रथम स्थान हासिल किया। श्याम अपने घर मार्कशीट लेकर गया, उसके माता पिता ने जब उसके अंक देखे वो बहुत उदास हुए कि हमारा एक बेटा पढ़ने में और दूसरा इतना नालायक। श्याम को महसूस हुआ कि मैंने अपने माता पिता का दिल दुखाया है जिसके बाद उसने उन्हें भरोसा दिलाया कि मैं अगली परीक्षा में आपको सफल होकर दिखाउंगा। श्याम ने अपने उन सब दोस्तों को छोड़ दिया, जिन्होंने उसकी सफलता में उसका मार्ग रोका था और वो अपनी पढ़ाई में ध्यान देने लगा। नतीजा यह हुआ कि साल भर की मेहनत से वह परीक्षा में सफल ही नहीं बल्कि उसने विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उसके माता पिता को बहुत खुशी हुई है और उन्होंने श्याम को गले से लगाया और शाबाशी दी।

मुस्कान गर्ग
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

बुद्धिमान व्यक्ति

एक गांव में एक बुद्धिमान व्यक्ति रहता था। उसके पास 19 ऊँट थे, एक दिन उसकी मृत्यु हे गई मृत्यु के पश्चात वसीयत पढ़ी गई जिसमें लिखा था कि मेरे 19 ऊँटों में से आधे मेरे बेटे को, उसका एक चौथाई मेरी बेटी को और उसका पांचवा हिस्सा मेरे नौकर को दे दिए जाए।

सब लोग चक्कर में पड़ गए कि यह बंटवारा कैसे हो 19 ऊँटों का आधा अर्थात एक ऊँट काटना पड़ेगा फिर तो ऊँट ही मर जाएगा? चलो एक को काट दिया जाए तो बचे 18, उनका एक चौथाई साढ़े चार फिर 22 होना चाहिए था। सब बड़ी उलझन में थे फिर पड़ोस के गांव में से एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने ऊँट पर चढ़कर आया समस्या सुनी थोड़ा दिमाग लगाया फिर बोला इन 19 ऊँटों में मेरा भी ऊँट मिलाकर बांट दो! सब ने पहले तो सोचा कि एक वह पागल था जो ऐसी वसीयत करके चला गया और एक यह पागल दूसरा आ गया जो बोलता है कि इसमें मेरा भी ऊँट मिलाकर बांट दो। फिर भी सबने सोचा बात मान लेने में क्या है है 19+1=20 हुए 20 का आधा 10 बेटे को दिए गए, 20 का चौथाई 5 बेटी को दिए गए, 20 का पांचवां हिस्सा चार नौकर को दिए गए।

10+5+4= 19 हो गए, बच गया 1 ऊँट तो जो बुद्धिमान व्यक्ति था वह उसे लेकर अपने गांव लौट आया।

इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है। हम सबके जीवन में पांच ज्ञानेन्द्रियों पांच कर्मेन्द्रिया, पांच प्राण और चार अंत: करण (चतुष्टय–मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) कुल 19 ऊँट होते है। सारा जीवन मनुष्य इन्हीं के बंटवारे में उलझा रहता है और जब तक उसमें आत्मा रूपी ऊँट को नहीं मिलाया जाता यानी कि आध्यात्मिक जीवन (आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता) नहीं मिलाया जाता तब तक सुख शांति संतोष आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती।

प्रिया
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

गजल

परों को खोल जमाना उड़ान देखता है।
जमीं पे बैठ के क्या आसमान देखता है।।

मिला है हुस्न तो इस हुस्न को हिफाजत कर।
संभल के चल तुझे सारा जहान देखता है।।

कवीज हो कोई या कोई शाहजादी हो।
जो इश्क करता है कब खानदान देखता है।।

घटाएँ उठती है बरसात होने लगती है।
जब आँख भर के पलक को किसान देखता है।।

मैं जब मकान के बाहर कदम निकालता हूँ।
अजब निगाह से मुझ को मकान देखता है।।

आरिफ अली
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

नारी शिक्षा की आवश्यकता व महत्व

हमारी वैदिक संस्कृति अनुसार प्राचीन काल से ही 'स्त्री शिक्षा की आवश्यकता अनिवार्य रही है क्योंकि विकसित राष्ट्र के लिए समाज को सुदृढ़ रूपरेखा तैयार करने में महिलाओं को शिक्षा पुरूषों से सौ गुना अधिक उपयोगी है क्योंकि बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है।

स्वामी दयानन्द जी ने जोरदार शब्दों में कहा था कि राष्ट्र समाज, प्रशान तथा परिवार के क्रिया-कलाप तब तक उचित ढ़ंग से नहीं किए जा सकते, जब तक स्त्रियों को शिक्षा न मिले।

स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि वही देश उन्नति कर सकते हैं जहां स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध किया जाता है।

भारतीय समाज में लम्बे समय से प्रचलित भेदभाव एवं पुरूषों के वर्चस्व की वजह से महिलाओं का उनके परिवारों एवं यहां तक कि पूरे समाज में दमन का सामना करना पड़ा है समय-समय पर उन्हें हिंसा एवं परिवार के पुरूष सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रकार के भेदभावों का भी सामना करना पड़ा है। कुछ यूरोपीय देशों को छोड़कर दुनिया के ज्यादातर देशों में भारत के समान ही महिलाएँ गम्भीर लैंगिक भेदभाव का शिकार है सभी प्रकार की समस्याओं का उन्मूलन स्त्री शिक्षा ही है। स्त्री शिक्षित होकर ही परिवार समाज, राष्ट्र को सुदृढ़ कर सकती है।

निरक्षर स्त्री तो स्वयं लाचार और असहाय बेबसी का जीवन जीने वाली होगी। उसे किसी भी प्रकार से सशक्त नहीं किया जा सकता। ऐसी स्त्री विकसित परिवार के निर्माण में भी बाधक होगी।

शिक्षित नारी ही विकसित परिवार, विकसित समाज, विकसित राष्ट्र की नींव होती है। एक शिक्षित स्त्री का मतलब एक शिक्षित परिवार का निर्माण है पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, आदि सभी क्षेत्रों में शिक्षित स्त्री ही सफल रही है और रहेगी।

इसीलिए मातृ सत्ता को शिक्षा प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम व प्रयत्न करते रहना चाहिए।

फिजा
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की भी अपनी वाणी होती है,
जो बिन शब्दों के ही अंतर्मन को छू जाती हैं।
हम सब एक दूसरे से भिन्न है, तन और मन
दोनों से हर व्यक्ति में अंतर होता है सभी में
कुछ खूबियाँ और खामियाँ दोनों ही होती हैं।
बात तो सिर्फ उन्हें पहचानने और अच्छे गुणों को
आत्मसात करने और बुरे गुणों को त्याग करने की है।
हर व्यक्ति का अपना-अपना व्यक्तित्व होता है।
जिसकी वजह से वह भीड़ में भी अपनी अलग छवि
के कारण पहचान लिया जाता है।
जीवन में व्यक्तित्व का विशेष महत्व होता है
सूरत कैसी भी हो, लेकिन सीरत अच्छी होनी चाहिए
क्योंकि सीरत ही हमारे व्यक्तित्व को दर्शाती है।
हमारे इर्द-गिर्द बहुत से खूबसूरत चेहरे रहते हैं
जो हमारी आँखों को तो भाते है पर मन को
नहीं लुभा पाते कुछ लोग बहुत सुंदर दिखते हैं,
लेकिन संयोग से कभी हम किसी ऐसे शख्स से
मिलते है जो दिखने में एकदम साधारण सा लगता है
लेकिन उसका व्यक्तित्व हमें लुभाता है।
हमारे मन पर गहरी छाप छोड़ देता है।
जो दिखने में तो साधारण है पर स्वयं में
असाधारण है विलक्षण प्रतिभा का स्वामी है
उसके चेहरे पर छायी मधुर मुस्कान,
उसके व्यवहार में शिष्टाचार और बातचीत करने का
सलीका इत्यादि हमारे दिलो-दिमाग में
एक खास पहचान बना लेता है
और हम उससे प्रभावित हो जाते हैं।

प्रेरणा
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

अच्छी सोच

एक महान विद्वान से मिलने के लिये एक दिन रोशनपुर के राजा आये। राजा ने विद्वान से पूछा 'क्या इस दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति है जो बहुत महान हो लेकिन उसे दुनिया वाले नहीं जानते हो?' विद्वान राजा से विनम्र भाव से मुस्कराते हुए कहा, ' हम दुनिया के ज्यादातर महान लोगों को नहीं जानते हैं।' दुनिया में ऐसे कई लोग है जो महान लोगों से भी कई गुना महान हैं।

राजा ने विद्वान से कहा, 'ऐसे कैसे संभव है' विद्वान ने कहा, मैं आपको ऐसे कई व्यक्तियों से मिलवाऊँगा। इतना कहकर विद्वान, राजा को लेकर एक गांव की ओर चल पड़े। रास्ते में कुछ दूर पश्चात पेड़ के नीचे एक बूढ़ा आदमी वहां उनको मिल गया। बूढ़े आदमी के पास एक पानी का घड़ा और कुछ डबल रोटी थी। विद्वान और राजा ने उससे मांगकर डबल रोटी खाई और पानी पिया। जब राजा उस बूढ़े आदमी को डबल रोटी के दाम देने लगा तो वह आदमी बोला- महोदय मैं कोई दुकानदार नहीं हूँ। मैं बस वही कर रहा हूँ जो इस उम्र में करने योग्य हूँ। मेरे बेटे का डबल रोटी का व्यापार है मेरा घर में मन नहीं लगता इसलिये राहगिरों को ठंडा पानी पिलाने और डबल रोटी खिलाने आ जाया करता हूँ। इससे मुझे बहुत खुशी मिलती है। विद्वान ने राजा को इशारा देते हुए कहा कि देखो राजन् इस बूढे आदमी की इतनी अच्छी सोच ही इसे महान बनाती है।

फिर इतना कहकर दोनों ने गाँव में प्रवेश किया तब उन्हें एक स्कूल नजर आया। स्कूल में उन्होंने एक शिक्षक से मुलाकात की और राजा ने उससे पूछा कि आप इतने विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं तो आपको कितनी तनख्वाह मिलती है। उस शिक्षक ने राजा से कहा कि महाराजा मैं तनख्वाह के लिए नहीं पढ़ा रहा हूँ, यहाँ कोई शिक्षक नहीं थे और विद्यार्थियों का भविष्य दाव पर था इस कारण मुफ्त में शिक्षा देने आ रहा हूँ। विद्वान ने राजा से कहा कि महाराज दूसरों के लिए जीने वाले भी महान होते हैं और ऐसे कई लोग हैं जिनकी ऐसी महान सोच ही उन्हें महान से भी बड़ा महान बनाती है।

इसीलिए राजन् अच्छी सोच आदमी की किस्मत निर्धारित करती है। इसलिए हमेशा अच्छी बातें ही सोचकर कार्य करें और महान बने। आदमी बड़ी बातों से नहीं बल्कि अच्छी सोच व अच्छे कामों से महान माना जाता है।

-: शिक्षा :-

जीवन में कुछ प्राप्त करने के लिये और सफलता हासिल करने के लिये बड़ी बातों को ज्यादा महत्व देने के अच्छी सोच को ज्यादा महत्व देना चाहिये क्योंकि आपकी अच्छी सोच ही आपके कार्य को निर्धारित करती है.....!!

निधि
बी.एड. (तृतीय वर्ष)

परिवार और संस्कार

हमारा घर परिवार ही संस्कारों की जन्मस्थली है। उदारता एवं अनुदारता, न्याय एवं अन्याय सत्य एवं असत्य नि:स्वार्थ एवं स्वार्थ और परिश्रम एवं आलस्य में अंतर करना बच्चे परिवार से ही सीखते हैं। इस प्रकार परिवार बच्चे की पहली पाठशाला और माता-पिता उसके प्रथम गुरू होते हैं। किसी मनीषी ने उचित कहा है कि 'जो भविष्य को वर्तमान में पालता है और जो संस्कार के रूप ने इतिहास का वर्तमान है, उसे परिवार कहते हैं। संस्कार माता पिता से ली हुई वह पूँजी है जो जीवनपर्यंत काम आती है। बचपन में पड़ने वाले अच्छे संस्कारों का प्रभाव स्थायी होता है और यह व्यक्तित्व को संतुलित एवं सुंदर बनाता है। मनुष्य का जीवन संस्कारवान होना ही चाहिए तभी वह न केवल अपने परिवार अपितु पूरे देश को गौरवान्वित करता है।

आज नैतिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिल रही है। इसे रोकने के लिए आवश्यक है कि परिवार में प्रत्येक सदस्य बच्चों में मौलिकता के स्थान पर संस्कारों के प्रत्यारोपण का प्रयास करे। आज के समय में बच्चों के पास सहनशक्ति का अभाव है। उन्हें किसी का भी रोकना टोकना पसंद नहीं आता। इसलिए आवश्यक हो चला है कि अभिभावक बच्चे को हर परिस्थिति में सहनशील होना सिखाएं अत: नन्हें मुन्ने बच्चों के शारीरिक मानसिक एवं सांस्कृतिक विकास हेतु परिवार का परिवेश सदाचरण से युक्त होना चाहिए।

मीनू स्मृति
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

सफलता और मेरा दृष्टिकोण

एक समय की बात है। एक बार एक राज्य था उसके राजा के सभी मित्र राज्यों के साथ बहुत अच्छे व्यवहार थे। सभी राज्यों के मित्रों का आना जाना लगा रहता था। इसीलिये सभी राज्य के राजा उनके लिए आये दिन कुछ ना कुछ उपहार भेजते रहते थे जैसे धन, जेवर, खाने की वस्तु, वस्त्र इत्यादि।

एक दिन उनके दरबार में एक विदेशी मेहमान आया और उसने जाते समय राजा की मेहमान नवाजी से खुश होकर एक पत्थर राजा को उपहार स्वरूप में दिया राजा को वह पत्थर बहुत ही अच्छा लगा राजा ने मंत्री से उस पत्थर से भगवान की मूर्ति बनाने का हुकम दिया राजा उस मूर्ति को अपने राज मंदिर में लगवाना चाहता था। राजा की अनुमति पाकर मंत्री एक मूर्तिकार के पास गया और उस पत्थर को देकर कहता है कि इसकी एक अच्छी सी मूर्ति बना दो, यह काम दस दिनों के अन्दर हो जाना चाहिए इसके बदले आपको हजार सोने की मोहरे दी जाएगी। यह सुनकर कारीगर बहुत खुश हुआ और अपने औजारों को इकट्ठा करके अपना कार्य शुरू कर दिया वह उस पत्थर को तोड़ने लगा जिससे वह अच्छी सी मूर्ति बना सके वह उस पत्थर पर हथौड़ी छेनी की मदद से कई बार करता है। लेकिन पत्थर नहीं टूटता वह उस पत्थर पर दस बीस पचास बार करने पर भी पत्थर नहीं टूटा अन्तिम चोट मारकर कहता है कि अब यह काम मुझसे नहीं हो पायेगा और कहता है कि यह इतनी चोट मारने के बाद नहीं टूटा तो अब क्या यह खाक टूटेगा यह कहकर वह उस पत्थर को मंत्री को वापस कर देता है और मंत्री से कहता है कि इसकी तो मूर्ति बन ही नहीं सकती लेकिन मंत्री को तो किसी भी हाल में मूर्ति बनवानी थी राजा का हुकुम जो था। वह उस पत्थर को दूसरे मूर्तिकार के पास ले जाता है और जैसे ही उस कारीगर ने एक चोट मारी वह पत्थर टूट गया और उस पत्थर की मूर्ति बना कर मंत्री को दे दी और मंत्री ने हजार सोने की मौहरे उसे दे दी।

मंत्री मूर्ति को ले जाते वक्त अपने मन में सोचता है कि अगर पहले वाले कारीगर ने एक अन्तिम प्रयास भी किया होता तो यह सोने की मोहरें उसकी थी।

इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि कई बार हम मेहनत तो करते है लेकिन कार्य को अधूरा छोड़ देते हैं। ये सोचकर कि अब तक नहीं हुआ तो आगे क्या होगा ? यह शायद मेरे लिए है ही नहीं, मेरी किस्मत में नहीं है, मुझसे होगा ही नहीं वास्तव में हमको एक बार और करने की जरूरत है। क्योंकि किसी कार्य को जब हम बीच में छोड़ देते है क्या पता उससे अगली बार हो ही जाये लेकिन हम उसे छोड़ देते है अपने सपनों को छोड़ देते है। अपनी जीत को छोड़ देते हैं। आपको तो पता ही है थॉमस एडीसन बल्ब बनाने में 1 हजार से अधिक बार असफल हुए जिस पर उन्होंने कहा मैं कभी नाकाम नहीं हुआ बल्कि 1 हजार ऐसे रास्ते निकाले जो मेरे काम नहीं आ सके वह भी यह सोच लेते कि मुझसे नहीं हो पायेगा तो शायद आज बल्ब का आविष्कार नहीं हुआ होता इसलिए हमको कर्म करना चाहिए फल की चिंता नहीं करनी चाहिए– मेरी कुछ पंक्तियाँ

संघर्षों से निखर निखर कर होता हर इन्सान बड़ा
एक-एक ईंटें जोड़े तो होता है भवन खड़ा

प्रियंक कुमार तोमर
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

माँ

जिसके ऊपर इस जीवन की सब जिम्मेदारी होती हैं, एक माँ ही तो है जो हमसे भी अधिक हमारी होती है। सब हंसते है जब कोई तकलीफ हमें हो जाती है, सच्चे मन से तो बस केवल माँ दुखियारी होती है। बुरी नजर का साया उसके चुम्बन से कट जाता है, छाता है जब अंधकार माँ खुद उजियारी होती है। उसके आंचल की छाया में जन्नत का सुख मिलता है, अपना दर्द भुलाकर माँ हम पर बलिहारी होती हैं। नौ मास गर्भ की पीड़ा का एहसास अमिट होता होगा औलाद बड़ी होकर के जब माँ से न्यारी होती है।

पिता

जो मानव देह में संघर्ष की जीवित कहानी है। पिता है त्याग का सागर तपस्या की निशानी है। वो हमको पालने में फर्क ये भी कर नहीं पाता जिसे वो छू रहा है आग का दरिया या पानी है।

प्रीति कुमारी
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

बचपन

कुदरत ने जो दिया मुझे,
है अनमोल खजाना !
कितना सुगम सलोना वो
ये मुश्किल कह पाना !!

दमक रहा ऐसे मानो
सोने सा बचपन फिक्र !
फिक्र नहीं कल की
न किसी से सिकवा गिला !!

मित्रों की जब टोली निकले,
क्या खाये, बिन खाये !
बड़े चाव से ऐसे चलते
मानो जग जीत कर जाये !!

कोमल हाथों से बल खाकर,
जब करते आतिशबाजी !
घुन्घरू बांधे हुए पैर पर
तब चलती खुशियों की आँधी !!

उन्हें देख माँ की ममता का
उमड़ रहा सैलाब !
मन मंदिर महका रहा
बगिया का खिला गुलाब !!

रिचा राय
बी.एड. (द्वितीय वर्ष)

सफलता

सफलता यूँ ही नहीं मिलती
खुद को जगाना पड़ता है !
मंजिल यूँ ही नहीं मिलती
आंधियों से टकराना पड़ता है !!

हासिल सब कुछ यूँ ही नहीं होता,
जी-जान लगाना पड़ता है !
तरक्की यूँ ही नहीं मिलती,
आत्मविश्वास से कर्म निभाना पड़ता है !

हिमांशी बंसल
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा
मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।

मेहनत कर पौधों को पानी दे,
बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी, बल निकलेगा।

सीने में उम्मीदवारों को, जिंदा रख,
समन्दर से भी,गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा।

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।

सुरभि बंसल
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

ज्ञान के मोती जिंदगी के सफर के

1. जो पानी से नहाएगा, वह सिर्फ लिबाज बदल सकता है लेकिन, जो पसीने से नहाएगा वह इतिहास बदल सकता है।
2. जीत और हार आपकी सोच पर निर्भर करती है मान लो तो हार और ठान लो तो जीत है।
3. आप सफलता तब तक नहीं प्राप्त कर सकते जब तक आपके अंदर असफल होने का साहस ना हो।
4. हर छोटा बदलाव बड़ी कामयाबी का हिस्सा होता है।
5. रात रात भर जाग कर पढ़ना शुरू कर दो क्योंकि किस्मत के सितारे तभी चमकेंगे जब नींद अधूरी रहेगी।
6. संघर्ष के बिना कोई जीवन नहीं है।

सुरभि बंसल
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

The Ukraine-Russia Conflict and the Indian Response

Professor U. K. Jha
Head, Department of
Political Science

Russia's invasion of Ukraine on February 24, 2022 and ongoing conflict between the two countries is a matter of serious concern for all the major players of global politics including India. Being a democratic country with its declared respect for sovereignty and territorial integrity of states India was supposed to react harshly against Russia, particularly by the U.S. and the Western countries. But Indian response to the conflict is very cautious , neither justifying the invasion nor making any public criticism of Russia, Keeping in mind its own national interest in the current international scenario. This paper is an attempt to examine the genesis and nature of the conflict, its implications for India and the and the pros and cons of the distinctive response of our policymakers towards the conflict.

The Genesis and Nature of Conflict

The tension between Russia and Ukraine has a long historical background. Ukraine, a democratic country of 44 million people with over 1000 years of history, happens to be the biggest country in Europe by area after Russia. In 1922, it became one of the original constituent Republics of the 'Union of Soviet Socialist Republics (U.S.S.R.). However, after the fall of the Soviet Union in 1991,it voted for independence from it and since then is being viewed by Russia as an artificial creation carved out from Russia by its enemies as a 'puppet of the West'.

In 2014, Russia invaded Ukraine and annexed its 'Crimean Peninsula', seizing large part of Eastern Ukraine and fought the army after its Pro-Russian President was deposed. The war has claimed over thousands of life since then. The tension escalated in 2021 when Ukraine President Zelensky urged U.S. President Joe Biden to let Ukraine join NATO which has angered Russia because it considers NATO's eastern expansion as a threat to its own security.. The Russian President Putin has constantly demanded guaranteed from the West and Ukraine that it will not join the NATO. But the refusal of the gurantee provoked Russia which invaded Ukraine despite the threat of severe sanctions against it by the U.S. and the West. In fact, Russia wants to keep Ukraine under its'sphere of influence' whereas nearly 80 percent of Ukrainians support independence from Russia. And here lies the crux of the problem.

The Indian Response

Indian response to the conflict has been very guarded and distinct from rest of the world, particularly from the U.S. and the West. While India has conveyed its dismay and discomfort over the crisis, it has refrained from publicly condemning Russia as the "perpetrator of the crisis". While expressing its respect for "the sovereignty and terrorial integrity of states" and calling for "the immediate cessation of violence and hostilities", it has stressed "dialogue and diplomacy" as the only way to resolve the conflict. However, India has abstained from successive votes in the UN Security Council, General Assembly and Human Rights Council that condemned Russian aggression in Ukraine and thus far has refused to openly call out Russia as the instigator of the crisis. This Indian response to the conflict is being interpreted by the U.S. and the west as a "Pro-Moscow line" and also signalling a sharp divergence of view on a fundamental issue of

global order, namely, "the legitimacy of using force to change borders and occupy another nation's territory" with India.

India's Strategic Interests

In fact, the foreign policy of a country is primarily determined by its national interest rather than by ideological prescriptions.India has had cordial relations with both Ukraine and Russia and therefore, it deliberately chose not to take sides in the conflict keeping in mind its short-term and long-term strategic interests.One should not forget the fact that Ukraine was recognized by India as a 'sovereign country' in December 1991after the disintegration of the Soviet Union and established diplomatic relations with it in January 1992. Since then the trade relations and economic co-operation between the two countries has developed on the basis of long-standing friendship. In March 1992 'the treaty of friendship and co-operation was signed between the two providing a major boost to their trade relations. Moreover, Ukraine has been a popular destination for Indian students to study medicine, dentistry and nursing. So the top priority of our government after the beginning of the conflict was to safely repatriate our students stranded in the war zone. India clearly displayed its dismay and discomfort with the situation. Our External Affairs Minister Subramanyan Jaishankar asserted in Parliament "that the global order is anchored on international law, the UN charter and respect for the territorial integrity and sovereignty of states" and regretted that "the path of diplomacy was given up". In a way India did not like the way Russia invaded Ukraine and expressed it's moral sympathy with Ukraine by offering humanitarian assistance to it.

However, India was cautious enough not to criticize Russia publicly and refrained from identifying it as the perpetrator of the tragedy keeping in view its long-standing and trustworthyfriendship with Russia and its security concerns vis-à-vis China and Pakistan.

India perceives both China and Pakistanas "immediate and enduring threats" and believes that "preserving its friendship with Moscow will help to prevent deepening Russian ties with China and to limit Russian temptations to build new strategic ties with Pakistan". Therefore, it has deliberately refrained from openly criticising Russia with the hope that it would at least minimize Russia's close proximity to both of its rivals I.e. China and Pakistan who undermine India's vital interests.

CONCLUSION

Whatever be the consequences of India's "diplomatic neutrality" stand in the ongoing Ukraine-Russia conflict we must understand the fact that our policy makers were confronted with "difficult strategic choices " and they have chosen the "best of the bad choices" faced by them. For the time being our response to the conflict seems to be fruitful as our country still enjoys the trust of both Russia and Ukraine involved in the conflict. Both these countries are now requesting India for mediation to resolve the conflict and this is in fact a victory of India's diplomatic skill. However it would be premature to conclude that future developments in the context of ongoing conflict will go in India's favour as the dynamics of international politics is very fluctuating one.

अगर बनना है तो उस तालाब की तरह बनो, जहाँ शेर भी पानी पीता है और बकरी भी, मगर सर झुका के

Science & Technology Innovations : New Trends

Professor P.K. Tyagi
Dept. of Statistics

A rapid paradigm shift is taking place in the field of Science & Technology innovations today. In the pre-world war II scenario, the only driving force was the search for knowledge. No substantial government funding was available. Scientific research was done by a handful of small enterprises. The were very few industrial scientific research laboratories and very few industries that supported scientific research. The post world war II scenario saw the parenthood of research change. On one hand, the research was entirely driven by the search for new knowledge and on the other hand by economics, defence and wealth.

The government became a major founder for research. The science based industries, such as biotechnology and information technology grew. There were also a growth of industrial scientific research.

Then came the post cold war era. The defence base for science started declining. Economic growth and health became the primary drivers for generations of new knowledge. Industrial basic research started vanishing. Innovation driven by defence spending and its subsequent diffusion into society through technology 'Spin-offs' came in for a major revision.

Advances in knowledge during the post-cold war era brought up new issues. Genetic engineering and the associated reproductive technologies on plants, animals and human beings rought fourth ethical issues calling for greater regulation by involving social scientists and environmentalists. The process of globalization, privatization and corporatization of research changed the dynamics of creation of knowledge. Issues of intellectual property rights (IPRS) and proprietary information and knowledge have begun to give rise to new debates on public good versus private profit. New models of the innovation chain and new paradigms of the science economy and science society contracts have begun to emerge.

Some of the old models of science, technology and development are giving rise to new models. Francis Bacon, in his book 'Advancement of Learning' published in 1605 had established a linear model of scientific discoveries leading to technology development, which in turn, lead to economic development. We now know that this model is certainly not valid today. Technology is not always the offspring of science. Quite often, technology preceds science. Steam engine came before the laws of thermodynamics were understood. A major part of new technologies indeed evolve from already existing science and technology. Many advances and innovations in technology are essentially incremental improvement in existing technologies. A technology can give rise to new technologies, the so called 'spin off technologies. It is not only that new science gives rise to new technology, but the reverse is also true new technology gives us new science.

THE IMPORTANCE OF EXTRA CURRICULAR ACTIVITIES IN A STUDENT LIFE

Professor R.K. Agarwal
Head, Department of Mathematics

Extracurricular activities can empower students to make their own decisions and help them gain vital experience and skills to lead them on the path to their future. the activities may include participation in different sports and games, music, dance, debate, paintings etc.

The Facts:- Students involved in extracurricular activities are more likely to become leaders, more willing to complete tasks, more willing to voice opinions, and more likely to graduate from high school and have annual incomes to more than Rs. 50,000 Extracurricular activities are also a good way to explore social, political, and career interests.

Gain Experience Through Extracurricular Activities:- Extracurricular activities help students gain experience in a variety of areas that will enhance their future. Through participation in sports, students learn co-operation. teamwork and time management. By serving as a captain / leader of a club in school, students learn responsibility problem solving and communication. Extracurricular activities can also help students discover hidden talents, meet people they might otherwise not encounter, and learn about things outside their own environment.

How to Choose an Activity : Which activity should a student choose? Should they choose activities that use talents they already possess and meet people with similar talents, or should they choose something new and different and meet people who possess different opinion and skills? Some students are comfortable with growth while others will feel more comfortable with familiarity. If a student enjoys outdoor activities, he or she may want to look into archery clubs, horse back riding or other sports.

If a student enjoys reading he or she may also enjoy literary clubs, writing clubs or journalism activities. Extracurricular activities are also a good way to learn appreciation for new and different activities. Choosing something outside a student's comfort zone widens horicons and expands knowledge. "Being open to new avenues by joing the newspaper staff, the computer club or the decorative painter's club will expose students to new people and new ideas."

What Activities Are Available? Activities can be found by checking with school counselors, reading the club section of the local newspaper, calling the chamber of commerce, asking other students what activities they are involved in. Information on volunteer activities can often be obtained from community service organizations or teachers. Teachers can be a wealth of information concerning word study programs, internships and summer jobs, all of which help students build their resume and gain valuable, experience in their career field.

Extracurricular activities should complement a student's life, not complicate it. When students are involved in too many activities or in an activity that takes up too much time, students will become stressed and grades and family relationships begin to suffer. Students should be careful not to overextend themselves by taking on too many activities or volunteering for too many jobs or committees.

The Role of Accounting in Business and Why It's Important Why Is Accounting Important?

Pankaj Kumar Gupta
Head, BCA Department

Accounting plays a vital role in running a business because it helps you track income and expenditures, ensure statutory compliance,
and provide investors, management, and government with quantitative financial information which can be used in making business decisions.

There are three key financial statements generated by our records.

* The income statement provides you with information about the profit and loss
* The balance sheet gives you a clear picture on the financial position of your business on a particular date.
* The cash flow statement is a bridge between the income statement and balance sheet and reports the cash generated and spent during a specific period of time.

It is critical you keep your financial records clean and up to date if you want to keep your business afloat. Here are just a few of the reasons why it is important for your business, big or small!

It Helps in Evaluating the Performance of Business

Your financial records reflect the results of operations as well as the financial position of your small business or corporation. In other words, they help you understand what's going on with your business financially. Not only will clean and up to date records help you keep track of expenses, gross margin, and possible debt, but it will help you compare your current data with the previous accounting records and allocate your budget appropriately.

It Ensures Statutory Compliance

Laws and regulations vary from state to state, but proper accounting systems and processes will help you ensure statutory compliance when it comes to your business. The accounting function will ensure that liabilities such as sales tax, VAT, income tax, and pension funds, to name a few, are appropriately addressed. It Helps to Create Budget and Future Projections

Budgeting and future projections can make or break a business, and your financial records will play a crucial role when it comes to it.

Business trends and projections are based on historical financial data to keep your operations profitable. This financial data is most appropriate when provided by well-structured accounting processes.

It Helps in Filing Financial Statements

Businesses are required to file their financial statements with the Registrar of Companies. Listed entities are required to file them with stock exchanges, as well as for direct and indirect tax filing purposes. Needless to say, accounting plays a critical role in all these scenarios.

Types of Accounting

Accounting can be classified into two categories – financial accounting and managerial accounting.

Essential Roles in e-Commerce

Mayank Sharma
Assistant Professor,
B.C.A., Department

A successful e Commerce store provides easy navigation and the best customer experience, is engaging, and has core brand values that make it stand out from the crowd. All the great things that make an e-Commerce store successful are backed by the people behind them. An e-Commerce store is not as great as the product, design, or functionality, it's only as good as its people.

1. Director of e-Commerce (aka VP of e Commerce, Head of e-Commerce)

The job title of the Director of e-Commerce has endless names just like his/her responsibilities. They are people who have a strategic vision for the company's future. They identify market growth and opportunities and set goals. They are responsible for the overall functioning and progress of all e-Commerce channels.

2. Digital Marketing Manager

A Digital Marketing Manager oversees the online marketing operations of the company. He leads a team of SEO and content specialists, Graphic and UX designers, and product marketers. A person in this e Commerce job role is responsible for the brand image, positioning, and online presence of the company.

3. Project Manager

A project manager strategizes and executes projects within specific timelines. Sourcing the team, assigning tasks, managing deadlines, and ensuring that the clients are happy and the team isn't overburdened are the major roles and responsibilities of an e Commerce project manager.

The responsibilities of a Project Manager include having a clear understanding of the client requirements, translating them into project tasks, and leading the team members to deliver the project on time.

4. Supply Chain Manager

A Supply Chain Manager develops and oversees the Supply Chain strategy. He maintains good relationships with the vendors and ensures that the Supply Chain operations run smoothly within specific timelines. An SCM's e Commerce job responsibilities demand leadership in ensuring that the quality and safety standards are met, inventory is well managed and the deliveries happen in a timely manner. He is expected to have good knowledge of supply chain and logistics processes and have and technical know-how of related software like ERPs.

5. Customer Service Manager

A customer Service Manager is responsible for customer satisfaction by means of solving their problems, creating helpful resources for their queries, and overseeing the operations of the Customer service department in the company.

6. Financial Manager

An e Commerce financial manager's core job responsibility is to analyze the business, plan a budget and allocate them to different areas of the business. You are expected to interact with all team heads and plan the budget accordingly.

You will be responsible to carry out a financial risk assessment and know about sales, supply chain, marketing, inventory management, their budget spends, and accordingly make additions or cuts to them.

Importance of Mathematical Modelling in Computer System

Sachin Agrawal
Assistant Professor
B.C.A., Department

Mathematical modeling is a process that uses math concepts to explain systems, functions and events. Nearly any industry can benefit from mathematical modeling, but it's most commonly used in areas such as engineering, computer science, social science and natural science. Depending on your career and job responsibilities, you might need to use this technique to solve problems, explain why things happen and make predictions. In this article, we explain the benefits and uses of mathematical modeling and provide a few examples you can use to understand how it works.

Mathematical modeling is a method that represents and explains real systems and occurrences using math formulas, descriptions and approaches. Professionals use mathematical models to examine, analyze and predict behavior and events. They also use it to solve complex problems and answer questions. A mathematical model follows these basic steps:

1. Define the problem.
2. Make an assumption.
3. Define the variables you want to use in your model.
4. Calculate a solution.
5. Analyze and assess the model and its results to validate its accuracy.
6. Report the results to your team, client or audience.

The more complex the problem, the more variables, assumptions and iterations you might need to make. Extremely complex mathematical models are typically input into computer programs to create computer models. Examples of math-based computer modeling include economic models and weather predictions.

Mathematical models can be classified in a variety of ways, depending on their structure, including: Mathematical modelling and problem solving Given the general idea of a broad mathematical modeling course, the specific objectives for the course were defined from the perspective of long term usefulness, independently of where the student will actually work in future. The course therefore intends to give the student: 1 • Knowledge about different kinds of mathematical models, and how they can be used. Attention not only to classical mathematical modelling, but also to models common in computer science. • Skill to use, create and evaluate mathematical models in different and possibly new areas of application. • Significantly improved skills in general mathematical problem solving. • Perspective on the role of mathematical modelling and mathematics in general, and for the professionals

To understand how this relates to the general aim, the way I see mathematical modelling is that it is the first step of applied mathematical problem solving, i.e. the actual link between reality and theory. Knowledge of mathematical modelling is therefore enabling knowledge to apply mathematical methods in any given area. The skill of mathemtical modelling can be seen as a specialized form of mathematics.

कामयाबी बड़ी नहीं, पाने वाले बड़े होते हैं। दरार बड़ी नहीं, भरने वाले बड़े होते हैं।
इतिहास के पन्नों पर लिखा है कि, रिश्ते बड़े नहीं निभाने वाले बड़े होते हैं।

Introduction of High Energy Physics Experiment

Deekshit Kumar
Assistant Professor,
Department of Physics

High Energy Physics (HEP) explores what the world is made of and how it works at the smallest and largest scales, seeking new discoveries from the tiniest particles to the outer reaches of space. This quest inspires young minds, trains an expert workforce, and drives innovation that improves the nation's health, wealth, and security. Our research is inspired by some of the biggest questions about our universe. What is it made of? What forces govern it? How did become the way it is today? Finding these answers requires the combined efforts some of the largest scientific collaborations in the world, using some of the most sensitive detectors in the world, at some of the largest scientific machines in the world. Researchers at the Energy Frontier use the world's largest and highest energy particle accelerator to recreate the universe as it was a billionth of a second after the big bang and make huge discoveries about the smallest pieces of the universe. The discovery of the Higgs boson by the ATLAS and CMS experiments at the Large Hadron Collider in July 2012 was the culmination of a global effort that began in 1964 when François Englert, Peter Higgs, and other theorists proposed it as the final piece to the Standard Model of particle physics. While wildly successful in what it can predict about known particles, the Standard Model is not complete in its description of the universe. Many theoretical models predict additional fundamental particles beyond those in the Standard Model that may be produced in very high energy particle collisions, possible through the transformation of energy to matter as described in Einstein's famous equation, E=mc2. The Large Hadron Collider may also be able to create dark matter, providing unique insight into its mysterious nature. U.S. Energy Frontier research groups have made leading contributions to both the discovery and the confirmation of the Higgs boson. Now that the Higgs boson has been discovered, Energy Frontier researchers will use it as a new tool for discovery. The Higgs boson plays a central role in the Standard Model and affects many of its predictions. Some models of new physics predict more than one type of Higgs boson or additional particles that would interact with the Higgs boson. By precisely measuring the Higgs boson's properties, Energy Frontier researchers will be able to establish its exact character and discover if there are indications of new physics beyond the Standard Model. Researchers will use the Large Hadron Collider to **explore the unknown** and search for evidence of new particles and forces beyond the Standard Model. Many models make predictions that can be directly tested or indirectly constrained through the study of high energy particle collisions. One such proposed theory, Super symmetry, predicts that every particle in the Standard Model has a heavy partner waiting to be discovered by high energy machines, like the Large Hadron Collider. High energy particle collisions also allow researchers to explore mechanisms of black hole production, search for extra dimensions of space, and pursue other exotic phenomena. It is possible that **dark matter** particles could be produced at the Large Hadron Collider, allowing researchers to study them as they are made. Dark matter only interacts weakly with normal matter and would itself be invisible to the LHC detectors, but Energy Frontier researchers could measure its general

properties through inference by understanding the behavior of the ordinary matter produced at the same time. Detecting the production of dark matter at a particle collider complements, and is a powerful cross-check on, the ultra-sensitive direct detection experiments at the Cosmic Frontier that rely on observing naturally produced dark matter. Limits on dark matter production set by the Large Hadron Collider experiments already significantly constrain many theoretical models.

ALICE (A Large Ion Collider Experiment) is a detector dedicated to heavy-ion physics at the Large Hadron Collider (LHC) . It is designed to study the physics of strongly interacting matter at extreme energy densities, where a phase of matter called quark-gluon-plasma forms. All ordinary matter in today's universe is made up of atoms. Each atom contains a nucleus composed of protons and neutrons (except hydrogen, which has no neutrons), surrounded by a cloud of electrons. Protons and neutrons are in turn made of quarks bound together by other particles called gluons. No quark has ever been observed in isolation: the quarks, as well as the gluons, seem to be bound permanently together and confined inside composite particles, such as protons and neutrons. This is known as confinement. Collisions in the LHC generate temperatures more than 100 000 times hotter than the centre of the Sun. For part of each year the LHC provides collisions between lead ions, recreating in the laboratory conditions similar to those just after the Big-Bang. Under these extreme conditions, protons and neutrons "melt", freeing the quarks from their bonds with the gluons. This is quarkgluon plasma. The existence of such a phase and its properties are key issues in the theory of quantum chromodynamics (**QCD**), for understanding the phenomenon of confinement, and for a physics problem called chiral-symmetry restoration. The ALICE collaboration studies the quarkgluon plasma as it expands and cools, observing how it progressively gives rise to the particles that constitute the matter of our universe today.

The ALICE collaboration uses the 10 000-tonne ALICE detector 26 m long, 16 m high, and 16m wide to study quark-gluon plasma. The detector sits in a vast cavern 56 m below ground close to the village of St Genis-Pouilly in France, receiving beams from the LHC. The collaboration includes almost 2000 scientists from 174 physics institutes in 40 countries (April 2022). In our india, 9 physics institute includes in the ALICE collaboration. I am also doing my PhD research work along with this colloboration. My research work related to J/È particle polarization in proton-proton collision at 13 TeV using ALICE detector at Large Hadron Collider .

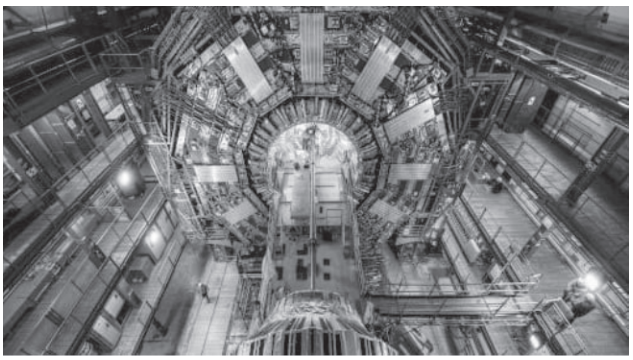

An Introduction to Mathematical Neural Networks

Harender Kumar
Assistant Professor,
Mathematics Department

It's hard to say where to start when writing a note about the human brain. The brain is one of the most complex machines that people have ever seen. It has always been both a source of inspiration and a mystery to us, whether it is storing data about our daily lives or keeping an eye on the complicated human body. It runs most of the body's functions by processing and coordinating the information it gets from the sense organs and then making decisions based on that information. The human brain starts to work as soon as a person is born and continues to do its job until the person's last breath. The human brain is the only reason why people are seen as the pinnacle of evolution. The most important thing about the human brain is that it can learn from past events. Jeff Bezos said in a well-known quote about the brain that it is an amazing machine for matching patterns. This one-of-a-kind ability of the human brain led to the development of many modern fields that are all called Artificial Intelligence(A.I.). Neural Network is one area that falls under A.I. and has its own branch.

Structure of a Typical Neuron

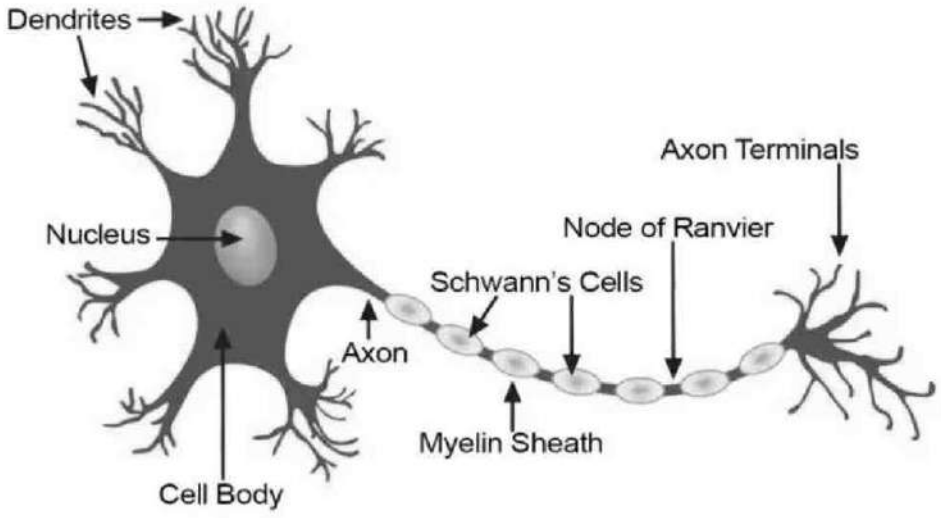

The brain is the nerve system's most important organ. It is made up of three parts: the cerebrum, the medulla, and the cerebellum. But at the level of individual cells, the brain is made up of a group of simple units called neurons. The neuron is the basic unit of the brain and nervous system. It is made up of three parts: the cell body, the axon, and the dendrite. A neuron's power source is the cell body, which is made up of the nucleus and the cytoplasm. The axon comes from the cell body and splits off into smaller ends called nerve terminals. Dendrites stick out from the cell body of a neuron and get messages from other neurons. The movement of nerve impulses in the neurons is what makes the brain work as a whole. This makes a way for nerve cells to talk to each other. Impulses start in a neuron's dendrites

and travel through the cell body and axon to the nerve terminal. The message is sent from the nerve terminal to the nearby neurons. Nerve impulses from nearby neurons are picked up by the dendrites, added up, and sent to the cell body and axon to be sent further. Over time, this process keeps happening over and over again. Neurons send and receive nerve impulses, which are the building blocks of our intelligence, actions, reactions, and other traits.

Neural Network is hard to define in a clear way. One of them thinks that Neural Network is the study of the inside structure of the human brain in order to give machines intelligence. If you google the word "neural network" to find out what it means, this is what comes up:"a computer system modelled after the brain and nervous system of a human being." Since it is only based on modelling the human brain, let's look at how the brain is put together.

A Neural Network is made up of many layers that are all tightly connected to each other. These layers are made up of basic units called perceptrons, which get their basic functions from neurons. A perceptron is made up of terminals for input, a processing unit, and terminals for output. The inputs of one perceptron are connected to the outputs of the perceptrons that came before it. Like a neuron, the input terminals of a perceptron receive all the signals from the perceptrons that came before it. The processing unit adds up all the signals from the input terminals, turns them on or off, and sends the result to the output terminals.

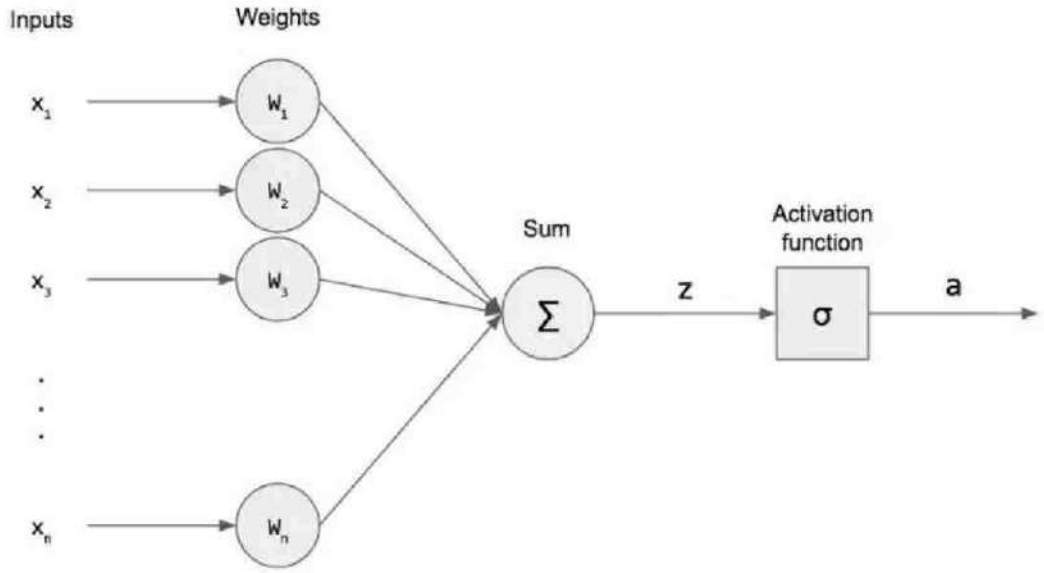

A set of input values is given to a perceptron. Based on a weight vector w, the perceptron calculates a weighted average of the values of the vector input and adds bias to the results. The output of the unit is the result of this calculation being run through a non-linear activation function. A group of these perceptrons are put together to make dense layers. These layers are then linked together to make what we call a Neural Network. A Neural Network is made up of layers that are stacked on top of each other in order. The output from one set of layers goes into the next set of layers. Neural Networks can be used to do something called "deep learning," which is all about building layers of neurons.

Creative Thinking

You might be surprised to know that everyone has creative abilities, its true of everyone who fully expresses creative abilities as well as those who express them very little or not at all. All humans are innately creative, especially if creativity is understood as a problem solving skill. Considered as an act of problem solving, creativity can be understood as a skill as opposed to an inborn talent or natural **"gift"** that can taught as well as learned. Problem-solving is something we are called upon to do everyday, from performing mundune chores to executing so-phisticated projects. The good news is that we can always improve upon our problem-solving and creative-thinking skills even if we don't consider ourselves to be artists or **"Creative"**. The following information may surprise and encourage you.

Creative thinking is an invaluable skill for college students. It's important because it helps you cook at problems and situations from a fresh perspective. Creative thinking is a way to develop novel or unorthodox solutions that do not depend wholly on past or current solutions. It's a way of employing strategies to clear your mind so that you thoughts and ideas can transcened what appear to be the limitations of problem. Creative thinking is a way a moving beyond barries.

As a creative thinker, you are curious, optimistic and imaginative. You see problems as interesting opportunities. and you challenge. assumptions and suspend judgement. You don't give up easily. You work hard.

Monika Bhardwaj
BCA (Ist Sem.)

Importance of Education & NEP 2020

Education has become a basic need in the modern era but still people are not aware of its importance. They need to be aware about its necessity and its role in an individual's overall all-round development.

In some of the rural areas of the country, children aren't allowed to study because their parents consider it as a waste of time. Instead, they want them to earn some money for the family by getting engaged in agriculture, labour and similar fields. Particularly, girl education has been suffering rejection from a long time. People are having a mind set that girls are bornt for doing domestic and household chores. but actually, girls also have equal rights for education legally.

The education policy of a country also plays an important role for its development. The government of India has launched National Education Policy, 2020 for higher education this year.

Some of its points are:-

(1) Common entrance exam is being offered by National Testing Agency for admission to higher educational institutions. This has been implemented in place of previous cut-off system.

(2) UG education can be of 3 or 4 years with multiple exist option and appropriate certification within this period.
e.g.- certificate after 1 year, advanced diploma after 2 years, Bachelor's degree after 3 years and bachelor's with research after 4 years.

(3) By 2030, the minimum degree qualification for teaching will be 4 years degree integrated B.Ed. degree.

At last, I would like to conclude that, education is an unseparable essence of life and the steps taken by the government are really commendable, hopefully it will lead to fruitful results.

Aakansha
B.Sc (IIIrd Year)

Our Confidence

Confidence is not working into a room thinking you are better than anyone. It is working in knowing that you do not have compare yourself to anyone. Comparing yourself to another person that is not ever in your system. There is no competition with any other human. You are not above anyone, you are not below anyone, that is confidence.

When you can get to the place in your life where comparison is dead. Where you are good enough not to others but to yourself, that is confidence. And you can be good enough right now because you are food enough right how. you might just need to change your mind set. Confidence can be developed in many ways. you can start with you Physiology, your posture. If I asked you what a confident person looked like. Would you be able to tell me? of course you would. They look strong, sure of themselves. Anyone can develop confidence. Some might have to work on it harder than others because they have confidence themselves into a lack of confidence for much of their life. But anyone can develop confidence for much even the majority of shy people have moments where they one not shy like around people they trust may be family, friends. Moments where they can be them selves full. So the shyness is sufective which means you can make confidence permanent. If you consciousliy.

"A person with self-confidence can alone face the biggest Problems or challenges in his life."

Chandra Veer
B.Sc (IInd Year)

"Grow More Trees To Reduce Pollution"

In the present day life there is nothing wrong to say that pollution is the root cause of all disease either it is related to heart or lungs. Pollution is going to be life threatening. It is becoming dangerous day by day. It has basically of four types-air pollution, water pollution, noise pollution and soil pollution.

Can we blame anyone for this worsening situation? No, we are not having any right to do because we are also involved in making the environment bad. We are also responsible for this critical situation of environment. We must perform our duty in the favour of the nature which is created by almighty. This can be done only by taking our own responsibility.

Deforesting is the main reason of extinction of trees in our surroundings. It must be banned strictly and in the case if anybody found practicing this then punishment is not sufficient to solve this problem, In this situation, the person should be made understandle about the meaning or importance of trees for our survival on the earth. Plant derives should be started in each and every region of the country.

Awareness rallies on "Save the Environment" and "Go Green" would be an eye opener. We can spread the slogan each one, plant one "to make the people realize. Schools can conduct the programmer on "More plants, less pollution". If the pollution is not controlled then in the future there would be no life on the earth.

By planting more trees we can control pollution at the maximum range. Plants are the source of many sources like air, wood for furniture, fuel, food (fruits and vegetables), etc. and most importantly the source of survivals on the earth as it give oxygen which is the necessity of many living organisms.

Annupriya
B.Sc (IIIrd Year)

Hope

Walking on a desert dying with extreme thrust when someone just passing by asks you to get up n tells you that is a pond just nearby,. And when you are into a new startup and your mental health is retarded with some kind of financial loss due to not getting any great deals to your products, suddenly you got a call from your friend, telling you about the deal that can brings about a big profit, is hope. Hope is something that brings you back to your active phase. It is not just about the positivity it's rather about trying not to get lost, and about manifesting your thoughts to keep working. It's a belief that our upcoming can be better then, our on going. It is a feeling that soothes our pain, discomfort. Have you ever thought what makes a businessman a good businessman. It is that, he don't let his failures define his worth he always hopes to get better and learn from his worst, he is not ashamed or tired of trying anything that can bring him any sort of hopes, he is always ready to grab the opportunities they can bring him any success, he works on his assests to make more out of them. It's not always true that whatever the positive time you are spending on smthing can bring certainty but it is always marked up with some hope and "where there is a hope there is a will". Goal, willpower and hope are considered as the prior elements to determine your future. To succeed you must have a direction. Sometimes it may also be true that you have a goal but don't know whether you are moving in a right direction, in that case switching your path is not always considered as the great idea, there you have to take a pause and gather your thoughts to see if whatever you are doing is bringing you any hope or not, and if there is any sort of chance that can mark any difference in 'now and then', then you must stick to whatever path you are on because "hope lies in the courage of those who dares to make their dreams into reality".

Nidhi
B.Ed. (Final Year)

IT is Just the Beginning

Now and soon the time came,
When we gonna get our graduation certificates in hand.
Those friends we got, connections made.
Teachers of our's the blessings they pour.
The lessons they taught, the values we learnt.
The fresher who's just gonna step in, forgetting about the old and making the new beginning.
Not everything you expect will come in hand,
this is just a phase and it will en
Look ahead and see for the things, because you are making your new beginning.
And it is not the ending, there is much more to be seen,
So just hope for the good and everything will change.

Pratibha Dhaiya
B.C.A. (IIIrd Year)

We can do about climate change

- "Use your voice, use your vote, use your choice"- A.L. Gore
- Avoiding meat and dairy products is one of the biggest ways to reduce your environmental impact on the planet.
- Avoid single use items and fast fashion and try not to by more than you need.
- Help to protect and conserve green space like park, ponds and gardens.
- Turn off lights and appliances when you don't need them, replace light bulbs with L.E.D.s.
- At cop 26 India Prime Minister Narendra Modi announced India's target of achieving "Net zero emissions" by 2070.
  He announced 5 main commitments called PANCHAMRIT-"India gift to the world".
  The India government has taken certain steps with the "Paris Agreement".
- Doubling India's renewable energy target 450 G.W. by 2030.
- National Solar Mission and Wind power in India.

Keerti Sharma
M.Sc (Ist Year)

Climate Change In India

Climate change in India is having profound effects on India. Which is ranked 14th among the list of countries most affected by climate change in 2015. India emits about 3 GT CO2 of greenhouse gases each year, about two and a half tons per person which is less then the world average. Climate change performance index of India ranks 18th among 63 countries which account for 92% of all GHG emissions in the year 2021.

Temperatures in India have risen by 0.70C (1.30F) between 1901 and 2018.

India has the world's highest social cost of carbon. In 2019 the temperature reached 50.60C, 36 people were killed. The number of heat wave has increased-not just day temperature, night temperature increased also.

The capital New Delhi broke its all-time record with a high of 480C. In India exposure to heat waves is said to increase by 8 times between 2021 and 2050 and by 300% by the end of century.

The cause of current climate change is largely human activity, like burning fossil fuels, like natural gas, oil and coal. Burning these are called green house gases into Earth's atmosphere.

Keerti Sharma
M.Sc (Ist Year)

Mental Health

Everyone's feels worried on anxious or down from time to time. But relatively few people develop a mental illness.

What the difference? A mental illness is a mental health condition that gets in the way of thinking, relating to others, and day to day function.

Mental illness include depression, generalized anxiety disorder. bipolar disorder, schizophrenia and many more.

Mental illness is an equal opportunity issue. Sign and symptoms of mental illness depend in part on the illness. Common symptoms include:-

- Feeling down for a while
- Low energy or problems sleeping.
- Often thinking about death or suicide.
- Often feeling angry, hostile or violent.

Individuals with a mental illness can often case their symptoms and feel better by talking with a therapist and following a treatment plan had may or may not include medication.

Ch. Tejveer Singh
B.C.A. (Ist Year)

Some Quotes on Life

If you stand for a reason be prepared to stand alone like a tree, and if you fall on the ground, fall like a seed that grows back to fight again.

Never lie to yourself if you want to be successful.

To be kind is more important than to be right. Many times what people need is not brilliant mind that speaks but a special heart that listens.

When you stop trying to change others and work on changing yourself, your world changed for the better.

Faith and proper both are invisible, but they make impossible things possible.

If you propose to speak always ask yourself. Is it true, is it necessary, is it kind.

Nothing is permanent, Don't stress yourself too much for anything because no matter how bad the situation is, it will change. And you can do your work without any problem. So, stop yourself to taking stress, nothing is permanent. Life is too short, live your life. Be happy always without any stress.

Sapna
M.Sc (Ist Year)

I Just Keep Trusting

I just keep trusting my lord,
An I walk along,
I just keep trusting my lord,
And he gives me a song,
Through the storms clouds,
Darken the sky.
O'er the heavenly trail,
I just keep trusting my Lord,
He' is a faithful friend,
Such a faithful friend
I can count on him,
Till the very end.

Harshit Pathak
B.C.A. (Ist Year)

A Teacher

"East or west a teacher is always best,
in her life there is no rest".
"Every moment for her is new test
he is like ladder that helps other."
"To attain heights of glary"
"As a guide he like a Airtel"
Which says ..... Connecting People"
"For every he is like a ANGLE
which says ..... MAIN HOON NA."
"In punctuality is like a TITAN WATCH
which says.....SAMAY KE SATH CHALO."
"At last I want to say one thing
respect your teacher and change your habit
because teacher is always right.
"Day ho ya night,
Teacher is always right.
East or West,
Teacher is always Best.

Bharti Sharma
B.A. (Ist Year)

Value of Education

Education is relevant for a person be successful.
Education empowers a person to become a leader.
Education enables one to reach success.
Education make one become influential.
Education give one the opportunities to be at the top.
Education give self-fulfillment.
Education is the main factor for becoming wealthy.
Education is the essential tool to make a pleasant and stable life.
Education is main element to become successful and overall to reach the goal and dream.

Sonu Kumar Sharma
B.A. (Ist Year)

Here Life Start, Where I Am Known

(Sonnet)

Heritage, are our old civil qualities,
Found in our activities daily.
How much we follow in daily lives,
Depends on our future that we rely.
Attributes many that we don't know,
But only haritage that shows the way.
The family a part of it can be a vow,
In members who also reveal the hay.
You, they and we are involved in this circle,
War, volcano, flood cause to haritage.
A child born also signs a living life,
Into a whole world where it merges.
Wow! how interesting it is a hidden,
Now here, life starts where I am known.

Chandra Prakash
Eng. Dept.

Miraculous Smile

"Nothing on earth
Can make life, more worth while
Then the sunshine and warmth of a
beautiful smile"
Of Course : Smile has miraculous power
A smiling face can control everybody.
It can face anybody to pay a attention.
Person who is master of beautiful
smile is clear to everybody.
The life is full of tensions,
wories and pains. In Such
Situation we want to be happy.
The life is very complicated now-a-days
But if we know to face troubles with smile
"It you smile then everybody
Smile, Smile, with you.
But it you weep you,
Will be alone at that time."

Kajal Chaudhary
B.Ed. (IInd Year)

CORONA

"Thought of the day"

Safety From 'Corona' is hidden in
'Corona word itself....

C - Clear Your Hands
O - Off From Gratherings
R - Raise Your Immunity
O - Only Sick to Wear Mask
N - No to Hand Shake
A - Avoid Rumours

Meenaxi Sagar
B.Ed. (Ist Year)

Stress Management and Students

Prof. Seemant Kumar Dubey
Head, Physical Education Department

Stress, the most heard term from everyone, has a particular definition in the dictionary which is "a state of mental and/or emotional strain or tension resulting from adverse, demanding, or any external circumstances." However, as anyone in the medical profession knows, everything has a clause, "interference in the quality of daily life." This means that everyone experiences stress, be it a student or a retired person, nevertheless only certain situations need to be addressed or cared for. There are many factors that can contribute to stress and mental health issues in students. Some of the most common causes include:

- Academic pressure
- Financial stress
- Social pressure
- Family issues
- Physical health problems

There are many effective stress management techniques and mental health strategies that students can use to improve their mental health and manage stress. Some of the most effective strategies include:

- Mindfulness and Meditation: Practicing mindfulness and meditation can help students to stay calm and focused, reduce stress and anxiety, and improve mental well-being.
- **Exercise:** Regular physical activity is a great way to reduce stress and improve mental health. Exercise can help release endorphins, reduce tension, and improve sleep.
- Connecting with others: Building and maintaining strong relationships with friends, family, and other support systems can help students to feel more connected and less stressed.
- Time Management: Students can manage their stress levels by using time management strategies to prioritize tasks, set goals, and avoid procrastination.
- Good Sleep Habits: Sleep is crucial for mental health and well-being. Students should aim to get 7-8 hours of sleep each night and establish a regular sleep schedule.
- Mental Health Support: Seeking help from a mental health professional, such as a therapist or counsellor, can be a valuable way to manage stress and improve mental health.
- **Healthy Lifestyle Habits:** Eating a well-balanced diet, reducing alcohol and caffeine intake, and avoiding drugs and other harmful substances can all help to improve mental health and reduce stress.

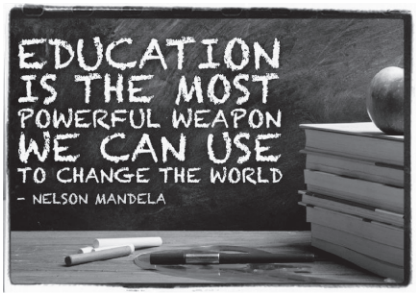

How To Join NCC

Yajvendra Kumar
Head, Physics Department

The **National Cadet Corps** (NCC) is the youth wing of the Indian Armed Forces with its headquarters in New Delhi, India. It is open to school and college students on voluntary basis as a Tri-Services Organisation, comprising the Army, the Navy and the Air Force, engaged in developing the youth of the country into disciplined and patriotic citizens. The soldier youth foundation in India is a voluntary organization which recruits cadets from high schools, higher secondary, colleges and universities all over India. The cadets are given basic military training in small arms and drill. The officers and cadets have no liability for active military service once they complete their course.

Eligibility Conditions: Citizen of India or a subject of Nepal. Bearing good moral character. Enrolled in an educational institution. Meets the prescribed medical standards.

Age: Junior Division/Wing (Boys/Girls) – 12 years to 18½ years and Senior Division/Wing (Boys/Girls) – Upto 26 years

Enrolment Period: Junior Division/Wing (Boys/Girls)–2 years and Senior Division/ Wing (Boys/Girls) – 3 years

Application for Enrolment: A student desirous of being enrolled in the Senior Division shall apply to the Officer Commanding of the nearest NCC Unit; while a student desirous of being enrolled in the Junior Division should apply to the Headmaster/Principal of the school in the prescribed form.

Medical Examination: If the Commanding Officer or the Headmaster is satisfied that the application is in order, and that the applicant fulfils the conditions of enrolment and that he is suitable for enrolment in the unit or part thereof in which he desires to be enrolled, he shall cause the applicant to be medically examined.

Method of Enrolment: If the Commanding Officer does not reject the application, the applicant shall be accepted for enrolment in the Senior Division/Wing, and shall be required to sign a declaration in Form I. If the applicant is a minor, his father or guardian shall also be required to sign a declaration provided in the form. If the Headmaster does not reject the application, the applicant shall be accepted for enrolment in the Junior Division. The applicant shall be required to sign a declaration in Form II and his father or guardian shall also be required to sign a declaration in the Form. If the Commanding Officer or the Headmaster is satisfied that the applicant, or his father or guardian in the case of a minor applicant, understand the questions put to the applicant and consent to the conditions of service, he shall sign a certificate to that effect on the said Form, and the applicant shall thereupon be deemed to have been enrolled.

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	श्री अजय गर्ग	अध्यक्ष
2.	डॉ. सुधीर कुमार	उपाध्यक्ष
3.	श्री एस. पी. एस. तोमर	सचिव
4.	श्री सुनील कुमार गुप्ता	संयुक्त सचिव
5.	श्री के. पी. सिंह	कोषाध्यक्ष
6.	श्री राजीव कुमार अग्रवाल	आन्तरिक लेखा परीक्षक
7.	डॉ. के. पी. सिंह	सदस्य
8.	कमाण्डर एस. जे. सिंह	सदस्य
9.	श्रीमती मनिका गौड़	सदस्य
10.	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	प्राचार्य (पदेन सदस्य)
11.	शिक्षक प्रतिनिधि	
12.	तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि	

महाविद्यालय परिवार

प्राध्यापक (वित्त पोषित)

1.	प्रो. गिरीश कुमार सिंह	प्राचार्य
2.	प्रो. यू. के. झा	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
3.	प्रो. प्रदीप कुमार त्यागी	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग
3.	प्रो. ऋषि कुमार अग्रवाल	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
5.	प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
6.	श्री यजवेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
7.	प्रो. सीमान्त कुमार दुबे	प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
8.	श्री लक्ष्मण सिंह	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
9.	आलोक कुमार तिवारी	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
10.	सोहन आर्य	असि. प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
11.	अनिल कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाज शास्त्र विभाग
12.	दीक्षित कुमार	असि. प्रोफेसर, भौतिक विभाग
13.	हरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, गणित विभाग
14.	हिमांशु कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग

प्राध्यापक (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री पंकज कुमार गुप्ता	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.सी.ए. विभाग
2.	श्री मयंक शर्मा	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
3.	श्री सचिन अग्रवाल	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
4.	डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
5.	डॉ. सुनीता गौड़	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
6.	डॉ. भुवनेश कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
7.	डॉ. सुधा उपाध्याय	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग

8.	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
9.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
10.	डॉ. तरूण बाबू	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
11.	डॉ. घनेन्द्र बंसल	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
12.	डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
13.	डॉ. राजीव गोयल	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
14.	श्री सत्य प्रकाश	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
15.	श्री देव स्वरूप गौतम	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
16.	श्री गुरूदत्त शर्मा	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
17.	डॉ. विशाल शर्मा	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
18.	श्री पंकज प्रकाश	असि. प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग

प्राध्यापक (अंशकालिक)

1.	श्री चन्द्र प्रकाश	अंशकालिक प्रवक्ता, अंग्रेजी विभाग
2.	डॉ. राधा उपाध्याय	अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विभाग
3.	श्री साहिल कुमार	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
4.	श्री नरेन्द्र बंसल	अंशकालिक प्रवक्ता, सांख्यिकी विभाग
5.	श्री गोपाल चौधरी	खेल प्रशिक्षक (कोच)

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

1.	श्री सुनील कुमार गर्ग	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री पंकज शर्मा	प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी विभाग
4.	श्री सुनील कुमार	प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग
5.	श्री लक्ष्मण सिंह	कनिष्ठ सहायक
6.	श्री नारायण देव मिश्रा	चतुर्थ श्रेणी
7.	श्री डम्बर सिंह	चतुर्थ श्रेणी
8.	श्री गजेन्द्र सिंह	चतुर्थ श्रेणी
9.	श्री कपूर चन्द्र	चतुर्थ श्रेणी
10.	श्रीमती पार्वती	चतुर्थ श्रेणी
11.	श्री सुनील कुमार निर्मल	चतुर्थ श्रेणी
12.	श्री महेश चन्द्र	चतुर्थ श्रेणी
13.	श्री अमरनाथ राय	चतुर्थ श्रेणी
14.	श्री विजय पाल सिंह	चतुर्थ श्रेणी
15.	श्री राम अवतार	चतुर्थ श्रेणी

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री दीपक कुमार शर्मा	लेखाकार
2.	श्री आशीष कुमार	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री जितेन्द्र कुमार	कनिष्ठ सहायक

4.	श्री पारस कुमार	प्रयोगशाला सहायक
5.	श्री प्रमोद कुमार	प्रशासनिक सहायक
6.	श्री चन्द्रपाल सिंह	अंशकालिक कम्प्यूटर ऑपरेटर
7.	श्रीमती हेमा रावत	पुस्तकालय सहायक
8.	श्री विजय कुमार	दैनिक वेतन भोगी सेवक
9.	श्री योगेश कुमार	दैनिक वेतन भोगी सेवक
10.	श्री राम बाबू	दैनिक वेतन भोगी सेवक
11.	श्री त्रिलोक चन्द	दैनिक वेतन भोगी सेवक
12.	श्री वाहिद	दैनिक वेतन भोगी सेवक
12.	श्री विक्रम सिंह	दैनिक वेतन भोगी सेवक
13.	श्री नेत्रपाल सिंह	दैनिक वेतन भोगी सेवक
14.	श्री जितेन्द्र कुमार	दैनिक वेतन भोगी सेवक
15.	श्री सुबोध कुमार	दैनिक वेतन भोगी सेवक
16.	श्री नितिन कुमार	दैनिक वेतन भोगी सेवक
17.	श्री साहब सिंह	दैनिक वेतन भोगी सेवक
18.	श्री सुरेन्द्र पाल	दैनिक वेतन भोगी सेवक
19.	श्री मान सिंह	दैनिक वेतन भोगी सेवक
20.	श्री जगदीश कुमार	दैनिक वेतन भोगी सेवक
21.	श्री सोनू कुमार	दैनिक वेतन भोगी सेवक
22.	श्री राजीव	दैनिक वेतन भोगी सेवक
23.	श्री राजू	दैनिक वेतन भोगी सेवक
24.	श्री पंकज	दैनिक वेतन भोगी सेवक

अनुशास्ता मंडल

1. प्रो. पी. के त्यागी (मुख्य प्रशास्ता)
2. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (अनुशासक)
3. श्री यजवेंद्र कुमार
4. प्रो. सीमांत कुमार दुबे
5. श्री मयंक शर्मा
6. डॉ. तरुण कुमार
7. श्री के.के. श्रीवास्तव

राष्ट्रीय कैडेट कोर

श्री यजवेंद्र कुमार

राष्ट्रीय सेवा योजना

श्री सोहन आर्य

रोवर्स और रेंजर्स समिति

रोवर्स- डॉ० तरूण कुमार रेंजर्स- डा० सुनीता गौड़

आन्तरिक मूल्यांकन सुनश्चयन प्रकोष्ठ

1. प्रो. यू. के. झा (समन्व.)
2. प्रो. पी. के. त्यागी
3. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री मयंक शर्मा
5. डॉ. वीरेन्द्र कुमार
6. डॉ. तरुण कुमार
7. श्री विकास गर्ग (SW)
8. श्री रोहताश चौहान (SW)
9. श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्या.)
10. श्री नितिन कुमार (चतुर्थ श्रेणी)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन समिति

1. प्रो. पी. के. त्यागी (समन्व.)
2. प्रो. सीमांत कुमार दुबे
3. श्री पंकज गुप्ता
4. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
5. डॉ. तरुण कुमार
6. श्री सोहन आर्य
7. श्री अनिल कुमार
8. श्री आशीष कुमार (कार्या.)
9. श्री राम अवतार (चतुर्थ श्रेणी)

भवन निर्माण समिति

1. श्री यजवेंद्र कुमार (समन्व.) 2. श्री सोहन आर्य
3. श्री अनिल कुमार 4. श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्या)

महिला संरक्षण समिति

1. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (समन्व.)
2. डॉ. सुधा उपाध्याय 3. पूजा रानी (चतुर्थ श्रेणी)

क्रीडा समिति

1. अध्यक्ष – प्राचार्य, प्रो. गिरीश कुमार सिंह
2. उपाध्यक्ष – प्रो. आर. के. अग्रवाल
3. सचिव – प्रो. सीमान्त कुमार दुबे
4. डॉ. भुवनेश कुमार 5. श्री देवस्वरूप गौतम
6. श्री अनिल कुमार 7. श्री दीक्षित कुमार
8. श्री अमरनाथ राय (चतुर्थ श्रेणी)

पुस्तकालय समिति

1. प्रो. यू. के. झा (समन्व.) 2. श्री यजवेंद्र कुमार
3. श्री सचिन अग्रवाल 4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. श्री देवस्वरूप गौतम
6. श्री सुबोध कुमार (चतुर्थ श्रेणी)

छात्रावास समिति

1. डॉ. तरुण कुमार (वार्डन)
2. श्री दीपक कुमार (लेखाकार)
3. श्री अमरनाथ राय (चतुर्थ श्रेणी)

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं समारोह समिति

1. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (समन्व.)
2. श्री सचिन अग्रवाल
3. डॉ. सुनीता गौड़ 4. डॉ. सुधा उपाध्याय
5. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह 6. डॉ. जागृति सिंह
7. श्री सोहन आर्य 8. श्री सुनील निर्मल (चतुर्थ श्रेणी)

महाविद्यालय प्रकाशन समिति

(विवरणिका, वार्षिक पत्रिका, न्यूजलैटर आदि)

1. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (समन्व.) 2. डॉ. भुवनेश कुमार
3. डॉ. वीरेन्द्र कुमार (शोध पत्रिका) 4. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
5. डॉ. तरुण कुमार (न्यूजलैटर) 6. श्री सोहन आर्य
7. श्री अनिल कुमार

छात्र कल्याण समिति

1. प्रो. यू. के. झा. (समन्व.) 2. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. डॉ. सुनीता गौड़ 4. श्री सत्यप्रकाश गौतम
5. श्री दीक्षित कुमार

एंट्री रैगिंग समिति

1. श्री यजवेंद्र कुमार (समन्व.) 2. डॉ. जागृति सिंह
3. श्री गुरूदत्त शर्मा 4. डॉ. विशाल गर्ग
5. श्री लक्ष्मण सिंह

शिकायत निवारण समिति (RTI)

1. प्रो. सीमांत कुमार दुबे (समन्व.) 2. श्री पंकज गुप्ता
3. डॉ. वीरेन्द्र कुमार 4. डॉ. तरुण कुमार
5. श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्या.)

चिकित्सा समिति

1. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (समन्व.)
2. डॉ. घनेन्द्र बंसल 3. डॉ. जागृति सिंह
4. श्री आलोक कुमार तिवारी 5. श्री अनिल कुमार

गृह परीक्षा समिति

1. प्रो. आर. के. अग्रवाल (समन्व.) 2. डॉ. भुवनेश कुमार
3. श्री आलोक कुमार तिवारी 4. श्री लक्ष्मण सिंह (कार्या)

सूचना एवं प्रौद्योगिकी समिति (कम्प्यूटर, कैमरे आदि)

1. प्रो. सीमांत कुमार दुबे (समन्व.) 2. श्री मयंक शर्मा
3. डॉ. तरुण कुमार 4. श्री दीक्षित कुमार
5. श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्या.) 6. श्री दीपक कुमार
7. श्री पारस कुमार

विद्युत, जनरेटर एवं नलकूप समिति

1. श्री यजवेंद्र कुमार(समन्व.) 2. श्री अनिल कुमार
3. श्री दीपक कुमार 4. श्री रामअवतार (चतुर्थ श्रेणी)
5. श्री जितेन्द्र कुमार (चतुर्थ श्रेणी)

मानव संसाधन उन्नयन समिति

1. प्रो. यू. के. झा. (समन्व.) 2. श्री आलोक कुमार तिवारी
3. श्री सोहन आर्य 4. श्री अनिल कुमार
5. श्री दीक्षित कुमार 6. श्री सुबोधकुमार (चतुर्थ श्रेणी)

नोडल अधिकारी

(दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रति पूर्ति)

1. अनुदानित – प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती
2. स्व वित्त पोषित – श्री सत्यप्रकाश गौतम

प्रेस एवं मीडिया समिति

1. श्री यजवेंद्र कुमार (समन्व.) 2. डॉ. भुवनेश कुमार
3. डॉ. वीरेन्द्र सिंह 4. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
5. श्री आलोक कुमार तिवारी

फोटोग्राफी एवं जियो टैग फोटो समिति

1. श्री आलोक कुमार तिवारी (समन्व.)
2. डॉ. तरुण कुमार
3. श्री पारस कुमार (स्टोरेज)
4. श्री राम अवतार (फोटो व वीडियो)
5. सुबोध कुमार (जियो टैग)

परिसर स्वच्छता, सौन्दर्यीकरण एवं पर्यावरण समिति

1. श्री लक्ष्मण सिंह (समन्व.) 2. श्री सत्यप्रकाश गौतम
3. श्री प्रमोद कुमार

अनुपयोगी सामान निस्तारण समिति

1. प्रो. पी.के. त्यागी(समन्व.) 2. डॉ. तरुण कुमार
3. श्री आलोक कुमार तिवारी 4. श्री दीक्षित कुमार
5. श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्या.)

भारतीय भाषा, संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ

1. श्री सोहन आर्य (समन्व.)
2. श्री देवस्वरूप गौतम
3. श्री आलोक कुमार तिवारी

दिव्यांग सहायता एवं वंचित समूह सहायता योजना

प्रचार-प्रसार प्रकोष्ठ

1. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (समन्व.)
2. श्री सत्यप्रकाश गौतम 3. श्री आलोक कुमार तिवारी
4. श्री अनिल कुमार 5. श्री हरेन्द्र कुमार

मेन्टरिंग एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रकोष्ठ

एवं नौकरी नियुक्ति प्रकोष्ठ

1. प्रो. यू. के. झा (समन्व.) 2. डॉ. तरूण कुमार
3. श्री अनिल कुमार

अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ

1. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (समन्व.)
2. प्रो. सीमांत कुमार दुबे
3. डॉ. भुवनेश कुमार 4. डॉ. तरूण कुमार

संस्थागत विकास योजना प्रकोष्ठ

1. प्रो. (श्रीमती) चन्द्रावती (समन्व.)
2. श्री यजवेंद्र कुमार 3.श्री देवस्वरूप गौतम
4. श्री दीक्षित कुमार 5. श्री हरेन्द्र कुमार

ऐक्टिविटी क्लब

1. प्रो. आर. के. अग्रवाल (समन्व.)
2. डॉ. भुवनेश कुमार 3.डॉ. तरुण कुमार
4. डॉ. घनेंद्र बंसल 5. श्री दीक्षित कुमार

उद्योग-अकादमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ

एवं व्यवसाय परामर्श समिति

1. प्रो. यू. के. झा (समन्व.) 2. प्रो. पी. के. त्यागी
3. डॉ. तरूण कुमार 4. श्री अनिल कुमार
5. श्री दीक्षित कुमार

ऑनलाइन शिक्षा एवं LMS प्रकोष्ठ

(व्याख्यान रिकॉर्डिंग समिति)

1. श्री यजवेंद्र कुमार (समन्व.) 2. श्री पंकज गुप्ता
3. श्री मयंक शर्मा 4. श्री आलोक कुमार तिवारी
5. श्री हरेन्द्र कुमार

शिक्षक प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

1. प्रो. यू. के. झा (समन्व.) 2. श्री यजवेंद्र सिंह
3. प्रो. सीमांत कुमार दुबे

जन सम्पर्क अधिकारी

डॉ. तरुण कुमार

नोट– सभी समितियों और प्रकोष्ठों के समन्वयक प्राचार्य के निर्देशानुसार अपनी समिति/प्रकोष्ठ के सदस्यों के सहयोग से कार्य संपादित करेंगे।

ऐ.के.पी.खुर्जा कॉलिज में डी.पी.बी.एस.(पी.जी.)कॉलिज के प्राचार्य प्रो.जी.के. सिंह का स्वागत् किया गया

अमर सिंह महाविद्यालय लखावटी में डी.पी.बी.एस. प्राचार्य प्रो. जी.के. सिंह का शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के आयोजन के अवसर पर प्राचार्य द्वारा प्रबन्ध समिति के संयुक्त सचिव श्री सुनील गुप्ता जी का स्वागत किया गया

सतनामी विद्यापीठ व रूकनपुर खुर्जा में डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज अनूपशहर के प्राचार्य का शोल ओढ़ाकर स्वागत किया गया

टेबलेट वितरण समारोह के मुख्य अतिथि श्री संजय शर्मा, मा. विधायक अनूशहर का कॉलिज प्रांगण में स्वागत किया गया

अपने अपने टेबलेट के साथ छात्र/छात्रायें

डी.पी.बी.एस कालिज में बिलियर्ड्स टेबल कक्ष स्थापित किया गया

महाविद्यालय में प्रथम इन्टरएक्टिव पैनल की शुरूआत

सेनापति छात्रावास(पुरूष) और रानी चौहान छात्रावास(महिला)

महाविद्यालय परिसर

महाविद्यालय प्रवेशद्वार

महाविद्यालय बास्केटबॉल मैदान

महाविद्यालय आवासीय परिसर

महाविद्यालय परिसर

Follow Us On:
DPBS PG COLLEGE

7895005734
www.dpbspgcollege.edu.in
dpbsprincipal@gmail.com